रात के ग्यारह बजे

उपन्यास

राजेश माहेश्वरी

नारी ईश्वर की इस सृष्टि की संचालन कर्ता भी है और इसकी गतिशीलता का आधार भी। नारी से मेरा तात्पर्य जीव-जन्तु पेड़-पौधों में उपस्थित नारी तत्व से भी है। मानव के संदर्भ में जब हम नारी को देखते हैं तो उसके दोनों रुप हमारे सामने आते हैं एक सृजनकर्ता के रुप में और दूसरा संहारक के रुप में। उसका सृजनात्मक स्वरुप मानवीय सभ्यता और संस्कृति के विकास में दिखलाई देता है तो उसके संहारक स्वरुप ने अनेक युद्ध भी कराये हैं और विकृतियां व वीभत्सता भी दी है। आज समाज में जितने अपराध हो रहे हैं उनमें भी उसकी बराबर की भूमिका देखने को मिलती है।

सामाजिक जीवन में नारी के इन्हीं दो रुपों को चित्रित करने के लिये मैंने दो पात्रों की कल्पना की और ये दो नारी पात्र नारी के दो रुपों को दर्शाते हैं। इसमें मुझे कहां तक सफलता मिली है यह तो पाठक ही निर्धारित करेंगे। इसकी रचना में श्री अभय तिवारी से हुआ मेरा विचार विमर्श महत्वपूर्ण रहा है और कथा क्रम को सुगठित आकार देने में सहायक रहा।

मेरा यह प्रयास समर्पित है उस वन्दनीय नारी समाज को जो समाज की गतिशीलता की धुरी है।

राजेश माहेश्वरी
106, नयागाँव हाउसिंग सोसायटी
जबलपुर, म. प्र.
482002

कल-कल बहती नर्मदा का तट, आसमान पर छाये हुए काले-काले बादल, हल्की-हल्की फुहार और धीमे-धीमे बह रही ठण्डी-ठण्डी हवा। ऐसे मनभावन मौसम में किसका मन प्रफुल्लित एवं आनन्दित नहीं होगा। वहीं गौरव चुपचाप चट्टान पर बैठा विचारों में खोया हुआ। स्वयं ही अपने से बोल रहा था। मेरी गलती क्या थी? आनन्द मेरा मित्र था, एक खानदानी करोड़पति था। मैं तो उसे हमेशा उचित सलाह दिया करता था। यह सोचते-सोचते उसकी आंखों में आंसू आ गये। तभी उसके कन्धे पर राकेश ने हाथ रखा और उसे सांत्वना देते हुए कहा- एक दिन सभी को जाना है। मौत तो आना ही है। अब वह किस बहाने से आती है, यह एक अलग बात है। कल हम भी नहीं रहेंगे। हमें कितने लोग कांधा देंगे और कितने आंसू बहाएंगे यह कोई नहीं जानता। हमने जिनका हित किया है या जिनकी सहायता की है, हो सकता है वे भी हमें कांधा न लगाएं। तन तो आत्मा का घर है। इसमें वह कुछ दिन रहकर चली जाएगी। यही जीवन की वास्तविकता है।

गौरव को पुराने दिन याद आ रहे थे। आनन्द और राकेश उसके अच्छे मित्र थे। आपस में भी वे एक दूसरे के मित्र थे। गौरव का झुकाव आनन्द की ओर अधिक था। गौरव स्वयं एक कंजूस प्रवृत्ति का स्वामी था। आनन्द खुले हाथ से खर्च करता था। आनन्द से गौरव का परिचय राकेश के माध्यम से ही हुआ था, परन्तु आनन्द के साथ गौरव अधिक सुविधाजनक अनुभव करता था। आनन्द और राकेश दोनों ही सम्पन्न परिवारों से थे। दोनों ही

अपनी-अपनी संपत्ति का बंटवारा अपने बच्चों और पत्नी के बीच कर चुके थे। उनके परिवारों में सभी की अपनी सम्पत्ति थी और सभी के अपने-अपने काम थे।

गौरव और आनन्द एक दिन बात कर रहे थे। आनन्द कह रहा था कि मेरा जीवन तो जैसे रेगिस्तान हो गया है। नारी के बिना पुरूष का जीवन नीरस और अपूर्ण होता है। पुरूष के जीवन को उसकी जीवन संगिनी ही सरस और पूर्ण बनाती है। किन्तु कभी-कभी किसी की जीवन संगिनी उसके जीवन की सरसता को समाप्त कर उसकी अपूर्णता को गहरा कर देती है। उस स्थिति में उस पुरूष का जीवन उस मशीन सा हो जाता है जिसे चलाया तो जा रहा है, लेकिन जिसकी तेल-पानी और सफाई कभी न की जाती हो। मुझे लगता है मेरा जीवन ऐसा ही है।

इस बात को मेरी पत्नी नहीं समझती। वह धर्म-कर्म में ऐसी लीन रहती है कि उसे इस बात का जरा भी अहसास नहीं है कि मुझे भी उसकी आवश्यकता है। मैं भी अपने व्यक्तिगत जीवन में उससे बात करना चाहता हूँ। उसकी सलाह लेना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि जीवन के हर मोड़ पर वह मुझे मेरे साथ दिखलाई दे किन्तु ऐसा नहीं है। उसके इस व्यवहार ने मेरे जीवन को रेगिस्तान बना दिया है। मुझे लगातार किसी महिला साथी की कमी जीवन में महसूस होती है। उसकी बात सुनकर गौरव ने कहा- राकेश के रहते हुए इस बात की क्या चिन्ता। वह एक सामाजिक, मिलनसार और व्यवहार कुशल व्यक्ति है। उसके सामाजिक दायरे में सभी हैं। फिर वह तुम्हारा भी तो मित्र है। उसके साथ संबंधों को प्रगाढ़ बनाओगे तो तुम्हारे जीवन का हर अभाव स्वमेव ही दूर हो जाएगा।

- - -

राकेश को अपने निजी कार्य से दिल्ली जाना था। उसके साथ गौरव भी जा रहा था। राकेश बहुत थका हुआ था। वह सोने जा रहा था। उसने गौरव से कहा- यार मुझे झांसी में उठा देना। एक आवश्यक कार्य है। गौरव ने पूछा- वहां कौन सा काम आ गया।

वह मैं तुम्हें बाद में बताउंगा। इतना जता कर वह सो गया। जब रेल झांसी पहुँची तो रात के ग्यारह बज रहे थे। गौरव ने देखा कि एक सभ्रान्त और सुन्दर महिला ने प्रवेश किया और राकेश के पास आकर बैठ गई। राकेश ने तत्काल एक लिफाफा निकालकर उसे दिया। वह लिफाफा लेकर उसका अभिवादन करके चली गई।

गौरव ऊपर की बर्थ से नीचे आ गया। उसने राकेश से पूछा- यह कौन थी?

एक महिला थी।

वह तो मैं भी जानता हूँ। लेकिन वह थी कौन ?

राकेश ने कहा- अभी मुझे बहुत नींद आ रही है। सुबह होने दो, सुबह मैं तुम्हें विस्तार से सब कुछ बतलाउंगा। उसकी बात सुनकर गौरव चुप रह गया। वह अपनी बर्थ पर चला गया। राकेश ने सोने के लिये मुंह ढांप लिया और आंखों को बंद कर लिया। वह नींद के आगोश में समा रहा था। उसने अनुभव किया कि उसके कान के पास आकर कोई कह रहा था- आज मेरे हाथों में मेंहदी लगा दो। राकेश ने उसे देखा। उसे देखते-देखते ही वह अतीत की गहराइयों में खो गया।

गौरव ने चार-पांच वर्ष पूर्व किसी पारिवारिक आयोजन में अनीता को देखा था। वह अनीता की सुन्दरता से प्रभावित हुआ था। एक दिन वह राकेश के साथ था तब किसी बात पर उसने

राकेश से कहा था- आज अपने नगर की सबसे सुन्दर महिला अगर कोई है तो वह अनीता है। उसे देखोगे तो देखते रह जाओगे। उसने उसकी सुन्दरता का जितना अच्छे से अच्छा वर्णन वह कर सकता था, वह किया। उसके बाद उसने राकेश से यह भी कहा कि अगर तुम कर सको तो उससे मित्रता करके बताओ। राकेश ने उसकी इस चुनौती को स्वीकार कर लिया। उसने गौरव से कहा कि तुम्हें इसमें मेरी थोड़ी सी मदद करना पड़ेगी। गौरव राजी हो गया। यह पता लगने पर कि अनीता एक आर्कीटेक्ट है, उसने गौरव को यह कहकर अनीता के पास भेजा कि उसे अपने घर की साज-सज्जा को बदलना है।

अनीता काफी सुन्दर और आकर्षक थी। गौरव उसके पास गया और उसने उससे राकेश के बंगले की साज-सज्जा को संवारने की बात की। उसने यह भी बतलाया कि इस पर लगभग एक करोड़ रूपयों का संभावित खर्च किया जाना है। एक अच्छे व्यापारी के समान एक अच्छे ग्राहक के प्रस्ताव से अनीता काफी खुश हुई और गौरव के लिये तत्काल चाय बुलवाई गई। उसने पूछा कि वे क्या-क्या परिवर्तन चाहते हैं। इस पर गौरव ने उससे कहा कि आप उनसे सीधे बात कर लें।

इधर राकेश को भी चैन नहीं था और उसने कार्य की प्रगति जानने के लिये गौरव को फोन किया। गौरव ने फोन सीधे अनीता को दे दिया कि आप जो भी जानकारी चाहती हैं विस्तार पूर्वक ले लें।

अनीता ने राकेश से बात की। उसने राकेश से उसके घर के विषय में, उसके परिवार के सदस्यों के विषय में, उनकी अपेक्षाओं के विषय में बात की। फिर उसने राकेश से कहा कि जब तक मैं

आपका घर नहीं देख लेती तब तक आपसे आगे बात करना उचित नहीं होगा, क्योंकि उसके बाद ही वह काम के विषय में कुछ कह पाएगी। राकेश ने ंगौरव से कहा कि इन्हें घर लाकर सब कुछ बतला दो।

अगले दिन अनीता गौरव के साथ राकेश के घर गई। वहां उसकी राकेश से भी मुलाकात हुई। राकेश ने उसे देखा तो देखता ही रह गया। वह वास्तव में बहुत सुन्दर थी। हल्का गेंहुआ गोरा रंग, गोल चेहरा, सुतवां नाक, पतले गुलाबी होंठ, इकहरा बदन, रेशमी घने हल्के भूरे बाल, सलीके से पहला हुआ परिधान, गले में मोतियों की चेन, छोटे-छोटे कर्णफूल और इस पर चार-चांद लगाती हुई उसकी मीठी आवाज। राकेश को उसकी इस सुन्दरता का अनुमान नहीं था। गौरव ने जितनी प्रशंसा की थी वह उससे बढ़कर थी। राकेश अपना आपा खो चुका था। वह उसका साथ नहीं छोड़ना चाहता था पर ऊपर से अपने को अप्रभावित दर्शाते हुए वह उसे घर पर छोड़कर अपने कार्यालय चला गया।

अनीता ने पूरे घर का बारीकी से मुआयना किया फिर अपने कार्यालय आकर इस विषय पर काम करना और नक्शे आदि बनाना प्रारम्भ कर दिया। जब वह पूरी रुपरेखा तैयार कर चुकी तो उसने राकेश को फोन लगाकर इस की विस्तृत जानकारी दी और प्रारूप तैयार करने व आवश्यक चर्चा करने के लिये उससे समय मांगा। राकेश ने शाम को किसी रेस्टारेन्ट में मिलने का अनुरोध किया। जिस पर उसने अपनी सहमति दे दी।

नियत समय पर अनीता अपने असिस्टेण्ट के साथ वहां पहुंच गई। राकेश भी गौरव को साथ लेकर वहां पहुंचा। गौरव ने अजीबो-गरीब कपड़े पहने हुए थे। उसने कोट कहीं का, पेण्ट कही का, टाई

कहीं की और शर्ट कहीं की पहनी हुई थी। कुल मिलाकर वह माडर्न आर्ट के किसी कोलाज सा दिख रहा था।

गौरव ने अनीता से कहा- मैं आपको इस नगर के नगरसेठ से परिचित करवा रहा हूँ। आप इनके मन के अनुरूप बंगले का आधुनिकीकरण करा दें तो इनका काम हो जाएगा और शहर में आपका नाम भी हो जाएगा। अनीता बोली कि समय लग सकता है किन्तु अपना काम मैं पूरी लगन व मेहनत से करूंगी और मुझे विश्वास है कि उससे इन्हें भी संतुष्टि मिलेगी।

राकेश और अनीता के बीच घर की साज-सज्जा पर लम्बी बातचीत हुई। राकेश उसकी बातचीत और उसकी योग्यता से भी प्रभावित हुआ। उन दोनों के बीच गम्भीर एवं लम्बी चर्चा के बाद घर की साज-सज्जा के विषय में सारी बातें तय हो गईं। उसने इस काम में लगने वाले अनुमानित खर्चों का ब्यौरा भी दिया जिसे राकेश ने स्वीकार कर लिया।

- - -

घर का आधुनिकीकरण का काम प्रारम्भ हो चुका था और इस सिलसिले में अनेक बार अनीता का आगमन होता था। राकेश के साथ उसकी समय-समय पर बातचीत भी होती रहती थी। जिस प्रकार राकेश अनीता से प्रभावित था उसी प्रकार अनीता भी राकेश से प्रभावित थी।

एक दिन राकेश ने उससे कहा कि मैं आपसे अपने एक और प्रोजेक्ट पर चर्चा करना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आज शाम को हम कहीं बैठकर इत्मीनान से उस पर बात करें। अनीता की सहमति के बाद उस शाम को राकेश और अनीता कोहनूर रेस्तरां में मिले। उनके साथ गौरव और अनीता का सहायक भी था।

राकेश ने औपचारिकतावश पूछा- आप व्हिस्की, चाय, जूस आदि क्या लेंगी? अनीता ने संकोच के साथ कहा कि कभी-कभी मैं साथ देने के लिये व्हिस्की ले लेती हूँ। इसके बाद तीन जगह व्हिस्की और एक जगह बियर बुलवाई गई। इसी बीच राकेश ने अनीता को बतलाया कि नगर की सीमा में उसकी लगभग पच्चीस एकड़ जमीन है। वह उस पर एक हाउसिंग प्रोजेक्ट तैयार करना चाहता है। वह चाहता है कि उसका प्रोजेक्ट ऐसा हो कि नगर में वह अपनी अलग पहचान बनाये। अनीता ने कहा कि आप उसके पेपर्स और नक्शे आदि मुझे दीजिये मैं उस पर काम करके आपको योजना तैयार करके दूंगी।

वे एक दूसरे को देख रहे थे। राकेश ने मौका देखकर अपना हाथ अनीता के हाथ पर रख दिया। अनीता मुस्कराई और उसने अपना हाथ धीरे से हटा लिया। उसकी मुस्कराहट राकेश के प्रस्ताव का जवाब दे गई थी। गौरव बियर पी रहा था उसे सुरुर चढ़ने लगा था। वह अनीता को संबोधित करके बताने लगा- मैं एक अन्तरराष्ट्रीय स्तर का कलाकार हूँ। मेरी पेण्टिंग्स की एग्जीवीशन अमेरिका और इंग्लैण्ड में भी लग चुकी हैं। मेरे पास अन्तरराष्ट्रीय क्रेडिट कार्ड है। यह कहते हुए उसने अपना कार्ड निकालकर अनीता के हाथों में रख दिया। राकेश जो गौरव की हांकने की आदत से वाकिफ था उसने गौरव से नजर बचाकर धीरे से अनीता से कहा कि क्रेडिट कार्ड की तारीख भी देख लो। अनीता ने देखा कि वह कार्ड तो दो साल पहले ही एक्सपायर हो चुका था। आज वह केवल एक कागज का टुकड़ा ही था। यह देखने के बाद अनीता राकेश की ओर देखते हुए मुस्करा उठी। इस मुस्कराहट ने उन्हें एक-दूसरे के और भी पास ला दिया।

उसकी असिस्टेण्ट तो डिनर लेकर चली गई पर गौरव अभी भी बैठा हुआ था और लगातार अपनी हांक रहा था। उसकी बातों से दोनों ही ऊब रहे थे। आंखों ही आंखों में दोनों में कुछ बात हुई और वे दोनों बाहर आकर कार में बैठकर गौरव को साथ में लेकर चल दिये। वे गौरव के घर गये और उसे घर छोड़कर वापिस रेस्टारेण्ट आ गये। एक बार फिर व्हिस्की का दौर प्रारम्भ हो गया। उनके बीच संकोच की दीवारें एक-एक करके ढहती जा रही थीं, वे खुलकर एक दूसरे से बात कर रहे थे। इसी बीच अनीता ने राकेश से पूछा- आपने इतनी कम उम्र में इतनी तरक्की कैसे कर ली।

राकेश पर एक तो अनीता के रुप का नशा था, फिर उसके प्यार का नशा था और उस पर व्हिस्की का नशा। वह खोया-खोया कहने लगा- आदमी अपनी असफलताओं के लिये अपने भाग्य को कोसता है। वह यह विचार नहीं करता कि भाग्य उसका दुश्मन नहीं है, वह तो उसका मित्र है। प्रत्येक क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। उसका सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम प्राप्त होता है। यदि हमारे कर्म सकारात्मक हों तो भाग्य भी हमारा साथ देता है। आस्था, विश्वास और नैतिकता जीवन के आधार स्तम्भ हैं। उनके बिना जीवन उस वृक्ष के समान है, जिसके सारे पत्ते झड़ चुके हों। वह असहाय सा सिर्फ अपने तने पर खड़ा हो और अपने गिरने की प्रतीक्षा कर रहा हो। हमारे जीवन की दिशा ऐसी होना चाहिए कि हम अपने सद्कर्मों से भाग्य के सहारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करें।

उस दिन राकेश और अनीता देर रात तक साथ रहे। वे एक दूसरे के बहुत करीब आ गए थे। दोनों के रोम-रोम में तरंगे उठ रहीं थीं। दोनों अनेक बार एक दूसरे को आलिंगन में ले चुके थे।

एक दूसरे के प्रति अपने चुम्बनों से अपने प्यार का इजहार कर चुके थे। वे एक दूसरे में खोये हुए थे। वे हमेशा उसी स्थिति में रहना चाहते थे लेकिन, घड़ी के कांटे आगे बढ़ते जा रहे थे। आधी रात को राकेश उसे उसके घर छोड़ने गया और फिर उसके खयालों में खोया-खोया ही वापिस लौटा।

- - -

एक दिन राकेश अनीता के आमन्त्रण पर उसके घर डिनर पर गया। घर पर अनीता और उसके दो नौकर ही थे। अब तक अनीता उसके इतने करीब आ गई थी कि उसके मन में उसके निजी जीवन में झांकने की लालसा पैदा हो गई थी। राकेश ने बातों ही बातों में उसके पति के विषय में चर्चा प्रारम्भ की। अनीता काफी भावुक हो गई। उसके रुप की, उसके प्यार की और उसके स्वाभिमान की उपेक्षा का दर्द उसके चेहरे पर आ गया। उसने बताया कि उसके पति ने उसके साथ धोखा और बेवफाई की। वह अपनी प्रेमिका को लेकर शरजाह चला गया था। एक वर्ष तक वहां रहा। उसके बाद अपने काम में असफल होने के कारण वह भारत वापिस आ गया। अनीता ने अपने पति से तलाक लेने का मन बना लिया था। उसके वापिस आ जाने और माफी मांगने के कारण उसने ऐसा नहीं किया। लेकिन इस घटना ने उसके मन में एक टीस तो पैदा कर ही दी थी। उसे ये दिन बहुत कठिनाई में काटना पड़े थे। यह बताते-बताते वह काफी विचलित हो गई थी।

राकेश ने उसे सांत्वना देते हुए कहा- जीवन में कितनी भी कठिनाइयां आयें हमें मन और मस्तिष्क को स्थिर रखते हुए चिन्तन-मनन के साथ सही राह की खोज करनी ही पड़ती है। यही जीवन है। रूको, देखो और आगे बढ़ो।

बातों का क्रम चलता रहा और वे डाइनिंग टेबल पर आ गये। डिनर लेते हुए उनमें कोई खास बात नहीं हुई पर डिनर के बाद जब वे बैठे तो राकेश ने उससे कहा- जीवन में जैसा संघर्ष तुमने किया है कुछ-कुछ वैसा ही जीवन को मैंने भी देखा है। एक समय मेरे सामने भी अंधेरा था। हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था कि क्या किया जाए। सारा व्यापार, सारा उद्योग बरबादी के कगार पर खड़ा था। अपनों ने भी मुंह फेर लिया था। बहुत संघर्ष के बाद सारी स्थितियां संभली और आज मैं इस मुकाम पर हूँ जिसे तुम देख रही हो और मुझे सफल मान रही हो। वस्तु स्थिति यह है कि सब कुछ होते हुए भी मैं अपने आप को अकेला अनुभव करता हूँ। जब तुम से मिला और परिचय गहरा हुआ तो मुझे लगा कि जैसे जीवन में कोई रिक्तता थी जो भरने लगी है। यह बात मैं तुम से कह नहीं पा रहा था। लेकिन आज जब तुम ने अपने मन की बात खुलकर की तो मेरी भी हिम्मत हो गई कि मैं भी अपने मन की बात तुमसे कह दूं।

राकेश की यह बात सुनकर अनीता ने पहले तो नजरें झुका दीं और फिर बात बदलकर वह बोली- आपका यह प्रोजेक्ट काफी बड़ा है। इसे मैं अपने ड्रीम प्रोजेक्ट के रुप में देख रही हूँ। इसके लिये हमें दिल्ली या बम्बई के अच्छे कंस्ट्रक्शन फर्म से बात करनी चाहिए। वे प्रोफेशनल होते हैं और इस पूरे प्रोजेक्ट को अच्छे से समझ कर उचित मार्गदर्शन देंगे। राकेश को भी यह बात उचित प्रतीत हुई और उसने इसके लिये अपनी सहमति दे दी। यह भी तय हुआ कि इसके लिये दिल्ली जाना अधिक लाभदायक रहेगा। रात अधिक हो चुकी थी, घर के नौकर भी इस प्रतीक्षा में थे कि कब विश्राम मिलेगा? इसलिये राकेश ने अनीता से घर जाने की

इजाजत मांगी। वह उसे द्वार तक छोड़ने आयी। विदा होने से पहले दोनों ने एक दूसरे को अपनी बाहों में भर लिया। राकेश के चुम्बन के उत्तर में अनीता ने भी उसे गर्मजोशी से चूम लिया। आज उनका आलिंगन बहुत गहरा था।

दूसरे दिन राकेश ने ट्रेवलिंग एजेण्ट से बात करके दिल्ली जाने की योजना तय कर ली। तीन दिन बाद वे दोनों साथ-साथ दिल्ली जा रहे थे। दोनों के दिलों में दिल्ली जाने का उतना रोमांच नहीं था जितना साथ-साथ सफर करने का था। ट्रेन अपनी रफ्तार से चली जा रही थी। ए. सी. के प्रथम श्रेणी के कूपे में दोनों अकेले थे। राकेश कुछ गम्भीर सा था। इसे देखकर अनीता ने पूछा- आज आप इतने गम्भीर से क्यों हैं ? राकेश ने कहा- आज मुझे अपना पहला प्यार बहुत याद आ रहा है ? मैं उसे बहुत चाहता था किन्तु कभी अपने दिल की बात उससे कह नहीं पाया। उसका विवाह दूसरी जगह हो गया और वह चली गई।

अनीता ने समझाते हुए कहा कि जीवन में सब कुछ किसी को नहीं मिलता। सुख और दुख जीवन के दो पहलू हैं जिनके बीच हमें सामन्जस्य करना ही होता है। हम भावनाओं को प्रतिबंधित नहीं कर सकते। हमारे मन व मस्तिष्क में विचारों का आना-जाना लगा रहता है। इससे विचारों में परिपक्वता आती है। भावनाओं को नियन्त्रित करना कठिन होता है। ये वायु के समान तेजी से आती हैं और आंधी के समान चली जाती हैं। यही जीवन है। भावनाओं और विचारों की समाप्ति जीवन का अन्त है। हम भावनाओं की गति को कम कर सकते हैं। परन्तु इन्हें पूरी तरह से अपनी इच्छा अनुसार ढालना संभव नहीं है।

मैं तो अपने जीवन में सब कुछ देख-सुनकर यही समझी हूँ कि दीर्घायु व प्रसन्न जीवन का भोग करो। यह कल्पना नहीं है, हकीकत है, इसे स्वीकार और अंगीकार करो। इसे अपने जीवन का आधार बनाओ। सूरज की पहली किरण जीवन में आशाओं का संदेश लेकर आती है। चांदनी भी विदा होती हुई हमें सुखी जीवन का संदेश देकर जाती है। रात्रि की कालिमा प्रतिदिन सूर्य देवता के आगमन से मिट जाती है। हम प्रतिदिन अपनी दिनचर्या में व्यस्त होकर अपने मन व मस्तिष्क को सृजन की दिशा में मोड़ते हैं। हमारा तन सेवा और श्रम के माध्यम से जीवन में सुख की अनुभूति लाता है।

हम अपने बुजुर्गों के अधूरे सपनों को पूरा करके साकार कर सकें। इसके लिये हमें चिन्ताओं को चिता में भस्म कर देना चाहिए और उसकी भस्म को तिलक के रुप में माथे पर लगाकर कर्मवीर बनकर जीवन में संघर्षरत रहकर सफलता पाना चाहिए। धर्म से कर्म हो ऐसी अभिलाषा रखते हुए सकारात्मक सृजन करके मानवतावादी दृष्टिकोण रखते हुए हमारे जीवन का अन्त हो, ऐसी कामना होना चाहिए। हमारी गौरव गाथा एक इतिहास बनकर दैदीप्यमान नक्षत्र के समान लोगों की स्मृतियों में सुरक्षित रहे ऐसा प्रयास होना चाहिए।

अनीता बोल रही थी और राकेश सुन रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे अनीता की आवाज कहीं दूर से आ रही थी और वह कहीं और खोयी हुई थी। राकेश भी सुन रहा था, उसकी निगाहें अनीता के चेहरे पर टिकी हुई थीं, दोनों को ही पता नहीं था कि वे अनजाने ही धीरे-धीरे एक दूसरे के कितने करीब आ चुके थे। उनके बीच की सारी दूरियां समाप्त होती जा रहीं थीं। उनकी आंखें

बोझिल हो रहीं थी और वे सभी दूरियों को मिटाकर एक दूसरे की बांहों में समाकर कब नींद के आगोश में समा गए उन्हें पता ही नहीं चला।

- - -

सुबह हो चुकी थी। चारों ओर प्रकाश था। ट्रेन ग्वालियर और मथुरा के बीच अपनी गति से चली जा रही थी। राकेश की आंख खुली तो उसने स्वयं को अनीता की बांहों में देखा। उसने धीरे से अपने को अलग करके उठने का प्रयास किया तो अनीता की भी आंख खुल गई। उसके होठों पर मुस्कराहट तैर गई। वह अपने को अलग करके उठ बैठी। राकेश भी मुस्करा रहा था। दोनों के चेहरे पर संतुष्टि की आभा थी। चाय आई और दोनों चाय की चुस्कियां लेने लगे।

उनके बीच धीरे-धीरे काम की बात होने लगी। अनीता चाहती थी कि मकान में जो साज-सज्जा के सामान लगना हैं, वे खरीदकर रवाना कर दिये जायें ताकि जब वे वापिस पहुँचे तो उन्हें मिल जायें और काम की प्रगति में रूकावट न आये। इसके बाद उसने बताया कि वह तीन-चार अच्छे आर्कीटेक्ट्स और बिल्डर्स से परिचित है जिनके साथ विचार विमर्श करके काम की रूपरेखा तैयार कर ली जाए। राकेश भी इससे सहमत था। इस संबंध में उनकी चर्चा होती रही और दिल्ली आ गई।

- - -

उस दिन होटल से तैयार होकर वे होटल की टैक्सी में ही निकले और अनीता के मन-माफिक सामान की खरीददारी करके उसे रवाना कर दिया गया। अनीता आज बहुत प्रसन्न थी क्योंकि उसकी हर बात को राकेश ने सम्मान दिया था और उसकी प्रत्येक

सलाह को स्वीकार किया था। आज पूरा दिन इसी काम में लग गया। शाम को वे एक रेस्टारेण्ट में भोजन के लिये गये। रेस्टारेण्ट में खाने के बीच अनीता राकेश को बताती है कि उसका एक महत्वपूर्ण कार्य निकट भविष्य में होने की संभावना है। वह चाहती थी कि राकेश उसके उस काम की पूर्णता के लिये ईश्वर से प्रार्थना करे। वह बताती है कि यदि यह काम हो जाता है तो उसका जीवन संवर जाएगा। राकेश के प्रयास करने पर भी वह यह नहीं बताती कि वह क्या काम था। वह राकेश से कहती है कि जीवन में भाग्य एवं समय पर हमारा भविष्य निर्भर करता है। वक्त की मार अमीर-गरीब जाति-धर्म और संप्रदाय में भेदभाव नहीं करती। यह ईश्वर द्वारा निर्धारित है और इसमें उसी की मर्जी चलती है। उसे तुम्हारी सल्तनत से कोई मतलब नहीं है। हम समय को समझ नहीं पाते हैं इसीलिये वह हमारे साथ शह और मात का खेल खेलता रहता है। हमें उसके प्रति हृदय में सम्मान रखते हुए नत मस्तक होकर उसे स्वीकार करना चाहिए। बुद्धिमत्ता इसी में है। यही हमें जीवन में मंजिल तक पहुँचा सकता है। राकेश! वक्त की मेहरबानी उन्हीं को प्राप्त होती है जो मुकद्दर के सिकन्दर होते हैं। समय को समझो तो जीना है समय को न समझो तो भी जीना है एक जीवन का जीना है और दूसरा जीवन है सिर्फ इसलिये जीना है।

राकेश उसकी बातों से अचंभित था। डिनर लिया जा चुका था। वे दिन भर के थके हुए भी थे और सफर की भी थकान थी। इसलिये लौटकर होटल आ गए।

कमरे में राकेश ने उसे अपनी बांहों में भर लिया। उसकी सुन्दरता और उसकी कोमलता में खोया हुआ वह उससे कह रहा

था- तुम्हारी आंखें बहुत हसीन हैं। तुम्हारी नजरों ने मुझे प्यार का नजराना दे दिया है। यह एहसास ही कितना हसीन महसूस होता है। ऐसी तकदीर सभी को नसीब नहीं होती। जिसे जीवन में यह प्राप्त होती है वह खिले हुए गुलशन की तरह महक जाता है। तुम जीवन को कल्पनाओं में जीती हो। मैं उन कल्पनाओं को हकीकत में बदलना चाहता हूँ। तुम्हारे ये कोमल और गुलाबी होंठ किसी के भी जीवन में बहार ला सकते हैं। तुम अपने में जीती हो मैं जीवन को जीता हूँ। तुम मयखाने में जाम की तरह हो जिसका मैं दीवाना हूँ। हम दोनों का मिलन एक मधुर गीत है, एक मधुर संगीत है। हम इस गीत के भावों में और इस संगीत की तानों में खो जाएं, एक दूसरे के हो जाएं। यह सुनकर अनीता ने बड़े प्यार से इतना ही कहा अच्छा! और दोनों एक दूसरे की बांहों में समा गए।

दूसरे दिन सुबह वे आराम से उठे और तैयार होकर निकल पड़े। दिन भर वे भवन निर्माताओं और आर्कीटेक्ट के साथ व्यस्त रहे। शाम को वापिस आकर उन्होंने दिन भर के काम पर विचार किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस पर अंतिम निर्णय सभी के कोटेशन और एस्टीमेट आने के बाद ही लेना चाहिए। उस रात वे वहीं रहे और सुबह की उड़ान से अपनी मीठी यादों को साथ लिये लौट आए।

- - -

अगले दिन सुबह अनीता का फोन आया। वह बहुत ही आल्हादित थी। उसके स्वर में उल्लास झलक रहा था। उसने राकेश को बताया कि तुम्हारी प्रार्थना ईश्वर ने स्वीकार कर ली। राकेश ने पूछा कि कौन सी प्रार्थना ? तो उसने कहा कि आज सुबह तुम नाश्ता मेरे साथ ही लो। यहीं मैं तुम्हें अपने सामने

बैठाकर यह खुशखबरी सुनाउंगी। राकेश के मन में जिज्ञासा का तूफान उमड़ रहा था। वह शीघ्र ही तैयार होकर उसके घर पहुँच गया। अनीता की प्रसन्नता देखते ही बन रही थी। उसने एक पत्र राकेश के हाथों में दिया जिसमें फ्रांस के पेरिस नगर में एक अंतर्राष्ट्रीय कंस्ट्रक्शन कम्पनी में उसे उच्च पद पर सेवाएं प्राप्त हो गईं थी। उसे तत्काल ही वहां जाकर ज्वाइन करना था। राकेश उसे देखकर हत्प्रभ रह गया। उसने दबी जुबान में अनीता को बधाई दी।

राकेश का वह पूरा दिन उदासी और मायूसी में गुजरा। दिन भर अनीता और अनीता के साथ गुजारे गए पल उसकी आंखों में झूलते रहे। रात भर वह बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। वह रात भर सो नहीं पाया। उसका सबसे विश्वसनीय सहयोगी मझधार में ही उसे छोड़कर जा रहा था।

अनीता अपनी सफलता पर बिस्तर पर लेटे-लेटे ही सोच रही थी। वह ईश्वर की इस कृपा के प्रति नतमस्तक होकर इसका श्रेय उसके द्वारा सम्पन्न सद्कार्यों को ही दे रही थी। वह परमात्मा से अपने व परिवार के सुखद भविष्य की कामना करते हुए यहां की खट्टी-मीठी यादें जो उसके दिल में बसी हुईं थीं उन्हें सदा अपने साथ ले जाने की कल्पना में खोई हुई थी। वह अन्धकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की दिशा अनुभव कर रही थी। उसके जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ होने जा रहा था। चांद की दूधिया चांदनी सी सफलता की अनुभूति के रुप में उसके मन-मस्तिष्क पर दस्तक दे रही थी। यह सोचते-सोचते ही वह गहरी नींद में सो गई।

- - -

सुबह हुई तो अनीता अपने साथ एक और युवक को लेकर राकेश के घर आयी। उसने उस युवक का परिचय एक इनर डेकोरेटर के रूप में कराया। उसने बताया कि उसे सारी बातें समझा दी हैं। वह निर्धारित समय में ही सारा काम पूरा कर देगा और उसके काम से राकेश को कोई शिकायत नहीं होगी। राकेश को इससे बहुत राहत मिली और उसके दिल में अनीता के प्रति प्रेम और भी अधिक बढ़ गया।

- - -

अनीता ने मुम्बई के लिये अगले दिन की फ्लाइट बुक करा ली थी। राकेश उसे निर्धारित समय पर एयरपोर्ट पर छोड़ने गया। उस समय उसका पति सामान आदि की बुकिंग में व्यस्त था। राकेश और अनीता प्रतीक्षालय में अकेले थे। वहां उसने उसे एक उपहार और शुभकामनाएं दीं और भावावेश में उसे गले लगा लिया। दोनों की आंखें गीली थीं राकेश ने उसके कान के पास जाकर कहा- मुझे सदैव तुम्हारी प्रतीक्षा रहेगी। उपहार के साथ राकेश ने उसे एक पत्र भी दिया था जिसमें लिखा था-

हमारे स्मृति पटल पर
देंगी दस्तक
तुम्हारे साथ बीते हुए
लम्हों की मधुर यादें
ये रहेंगी हमेशा धरोहर के समान
मेरे अंतरमन में देंगी
कभी खुशी कभी गम का अहसास
जो बनेगा इतिहास

यही बनेंगी
मेरा सम्बल
और दिखाएंगी सही राहें
मेरे मीत मेरी प्रीत भी
रहेगी हमेशा तेरे साथ
तेरे हर सृजन में
बनकर मेरा अंश
यही रहेगी तेरी-मेरी
सफलता का आधार
जीवन में करेगी मार्ग दर्शन
एवं देगी दिशा का ज्ञान
ये न कभी खत्म हुई है
न ही कभी खत्म होगी
आजीवन देती रहेगी तेरा साथ
सागर से भी गहरी है तेरी गंभीरता
एवं आकाश से भी ऊंची हों तेरी सफलताएं
तुम वहां मैं यहां
बस तेरी यादों का ही है अब सहारा
कर रहा हूँ अलविदा
खुदा हाफिज, नमस्कार।

अनीता वहां से राकेश को फोन करती रहती थी। राकेश भी उसे फोन करता था। दोनों एक दूसरे का दर्द एक-दूसरे को बताकर हल्का होने का प्रयास करते थे। उन्हें क्या पता था कि जितना वे हल्का होने का प्रयास करते हैं उतना ही वे भारी हो जाते हैं। समय अपनी गति से उड़ता चला जा रहा था। समय को कौन रोक पाया

है ? कुछ माह बाद अनीता ने अपने परिवार को भी वहीं बुला लिया। धीरे-धीरे वे इस संसार के मायाजाल में फंसते चले गये और उनके बीच की रेशम की डोरी टूटती चली गई।

- - -

इसी समय राकेश को लगा जैसे प्लेन उड़ने के साथ ही क्रेश हो गया हो। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा। उसने देखा कि गौरव उसे हिला-हिलाकर उठा रहा था और कह रहा था- उठो भाई दिल्ली आ गई। राकेश भी उठता है देखता है कि ट्रेन दिल्ली की सीमा में आ चुकी थी। वह भी उतरने की तैयारी करने लगता है।

दिल्ली में राकेश के आने का मकसद अपोलो हास्पिटल में एक्जिक्युटिव चेकअप कराना था। वह प्रतिवर्ष अपने चेकअप के लिये दिल्ली आता था। गौरव ने पुनः उससे पूछा कि झांसी में रात को ग्यारह बजे तुम्हारे पास आने वाली कौन थी।

राकेश ने बताया कि उसका नाम मानसी है। मेरा परिचय उसकी बहिन पल्लवी से कुछ दिन पहले ही हुआ था। फिर हमारी एक दो मुलाकातें और हुईं। बाद में एक दिन हमारे साथ आनन्द भी था। मैंने देखा कि आनन्द पल्लवी में कुछ अधिक ही रूचि ले रहा था। मैंने भी उनके बीच बाधा डालना उचित नहीं समझा। मुझे पता था कि आनन्द का परिवारिक जीवन सुखी नहीं था। उसके परिवार के साथ उसके मतभेद थे। इससे वह सदैव उदास रहा करता था। जब मैंने पल्लवी को भी उसकी ओर आकर्षित होते देखा तो मेरे मन में विचार आया कि आनन्द और पल्लवी की मित्रता से यदि आनन्द को राहत मिलती है, उसे अपने जीवन का अभाव कम होता लगता है तो इसमें कोई हर्ज नहीं है।

एक दिन मैं आनन्द और पल्लवी एक रेस्तरां में बैठे डिनर ले रहे थे। उस दिन उसके साथ उसकी बहिन मानसी भी थी। पल्लवी ने बताया कि वह भोपाल में रहती है। वह वहां से यहां आना चाहती है। उसके पति की नौकरी चली गई है। वहां उसे अच्छी-खासी तनख्वाह मिलती थी। उसका परिवार सुखी था। बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे थे। उसका पति जिस प्रोजेक्ट में काम कर रहा था वह पूरा हो जाने के कारण उसकी नौकरी चली गई। अभी अनेक माहों से वेतन न मिलने और कोई नया काम न मिल पाने के कारण उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई है। वह यहां आकर कोई काम करना चाहता है। यहां आने के लिये उसे लगभग दस हजार रूपयों की आवश्यकता है। वह चाहती थी कि आनन्द उसकी मदद कर दे। उसे यह रकम तीन माह में वापिस मिल जाएगी।

इस बात को सुनकर आनन्द चुप रहा। उसने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया और कुछ देर रूककर बहाना बनाकर वहां से चला गया। पल्लवी के चेहरे पर उदासी छा गई थी। मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि एक ओर तो हम आपस में मित्रता की बात करते हैं और दूसरी ओर मित्र की परेशानी को सुनकर उससे मुंह मोड़ लेते हैं। मैंने मानसी से कहा- मैं परसों दिल्ली जा रहा हूँ। तुम अगर भोपाल से झांसी आकर ट्रेन में मुझ से मिल सको तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। उसने इसे स्वीकार कर लिया और कल रात तुमने जिसे देखा था वह मानसी ही थी जिसे मैंने लिफाफे में रखकर दस हजार रूपये दिये थे।

- - -

मानसी ने तीन माह तक राकेश से कोई संपर्क नहीं किया। राकेश भी यह सोचकर कि किसी जरुरतमन्द की मदद की है दस हजार रूपयों की बात भूल गया था। एक दिन अचानक मानसी का फोन आया-

आप कैसे हैं ?

ठीक हूँ। तुम कैसी हो ?

मैं भी अच्छी हूँ। आपने तो पिछले तीन माह में एक बार भी मेरी खोज-खबर नहीं ली ?

मैंने सोचा तुम अपने काम में लगी होगी। जब मिलोगी तो बात करुंगा।

मैं दो माह तक अस्पताल में भरती रही। आपने एक बार भी मेरी हालत जानने का प्रयास नहीं किया।

सुनकर राकेश को आश्चर्य हुआ। वह बोला- मुझे तो इसकी कोई खबर नहीं थी। क्या हुआ था ?

मेरे साथ एक भीषण दुर्घटना हो गई थी। ईश्वर की कृपा है जो मैं जीवित बच गई। आपको पल्लवी ने नहीं बताया।

नहीं तो। पल्लवी ने तो ऐसी कोई बात नहीं की।

सुनकर मानसी को आश्चर्य हुआ। उसने बताया कि पल्लवी को तो सब कुछ पता था। उसने पल्लवी को यह बात उसे बताने के लिये भी कहा था। पल्लवी ने ऐसा क्यों किया इसे समझने में दोनों ही असमर्थ थे।

मानसी ने राकेश को अपने घर पर भोजन के लिये आमन्त्रित किया। राकेश ने उसका आमन्त्रण स्वीकार कर लिया। नियत समय पर वह उसके यहां पहुंचा। मानसी ने लाल साड़ी पहन रखी थी। राकेश ने उसे देखा तो उसकी आंखें उसी पर ठहर

गयीं। वह बहुत सुन्दर लग रही थी। प्रारम्भ में कुछ औपचारिक वार्तालाप होता रहा। मानसी ने राकेश को आश्वासन दिया कि वह शीघ्र ही उसका पैसा उसे वापिस कर देगी। इसके बाद भोजन किया गया। भोजन के उपरान्त जब वे बैठे तो बातों ही बातों में मानसी ने उसे बताया कि वह कोई व्यापार करना चाहती है। वह राकेश से इस दिशा में मार्गदर्शन चाहती थी। राकेश ने पूछा कि उसके पास कितनी पूंजी है? उसने बताया कि एक जगह से उसे पांच लाख रूपया ऋण के रुप में मिल रहा है। उस पर उसे साल का चौबीस टका ब्याज देना पड़ेगा। ब्याज प्रत्येक तिमाही में देना होगा। यह सुनकर राकेश हतप्रभ रह गया। उसने उसे समझाया कि इस ब्याज दर पर रकम लेकर तुम किसी भी धन्धे में कामयाब नहीं हो सकतीं। मूलधन तो दूर है तुम इसका ब्याज भी नहीं चुका पाओगी।

जबलपुर के पास मोहनियां गांव में मोहनलाल नाम का एक किसान रहता था। उसका स्वभाव था कि वह पैसा होने के बाद भी कर्ज लेता था और समय पर ब्याज सहित चुका देता था। उसके गांव में मन्दिर में एक संत रहते थे। उन्हें मोहनलाल के इस स्वभाव का पता था। उन्होंने उसे अनेक बार समझाया था कि व्यर्थ कर्ज मत लिया करो! यह अच्छी बात नहीं है। कर्ज पर धन लेना आसान होता है किन्तु इसे वापिस लौटाना पहाड़ के समान कठिन हो सकता है। मेरी बात मानो तो कर्ज भला न बाप का होता है। आज आधुनिकता में युवा पीढ़ी कर्ज लो और मौज करो के सिद्धांत पर चल रही है। यह किसी भी रुप में हितकर नहीं है। जब हम समय पर मूलधन एवं ब्याज नहीं चुका पाते हैं तब हमारे मन में हीन भावना आ जाती है। जीवन में सदैव याद रखो कि

कर्ज से अधिक कष्टकारी उसका ब्याज होता है और तुम्हारी कर्ज लेने की यह आदत एक दिन तुम्हें बर्बाद कर देगी। मोहन लाल ने संत की बात तो सुनी पर उस पर उसका कोई खास प्रभाव नहीं हुआ।

एक बार मोहन ने गांव के साहूकार से एक मोटी रकम कर्ज के रुप में ली। इसके एवज में उसने अपनी जमीन गिरवी रख दी। वास्तव में वह लालच में आ गया था। कुछ लोगों ने उसे ऐसा बरगला दिया था कि उसे लग रहा था कि सट्टे के माध्यम से वह उन लोगों के सहयोग से कुछ ही दिनों में उस रकम को चौगुना कर लेगा। कर्ज की रकम से वह सट्टा खेलने लगा। धीरे-धीरे उसकी सारी रकम सट्टे में डूब गई। अब उसके पास सिर्फ पश्चाताप ही रह गया। साहूकार ने कर्ज न चुका पाने के कारण उसकी सारी जमीन हड़प ली। उसका परिवार आर्थिक रुप से बर्बाद हो गया और दर-दर की ठोकरें खाने लगा। तब उसे सन्त की शिक्षा याद आई परन्तु अब कुछ भी नहीं हो सकता था। मोहन लाल मजबूरी में मजदूरी करने के लिये बाध्य हो गया। इसलिये जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारे जाएं तो जीवन सुखी रहता है।

मानसी और उसका पति राकेश की बातों को घ्यानपूर्वक सुन रहे थे। वे उसके विचारों से सहमत थे। वे सोच में पड़ गए थे कि आगे क्या करें ? वे बोले कि वे प्रयास करते हैं कि उन्हें उचित ब्याज पर रकम मिल जाए। मानसी ने अपने गहनों को बेच देने में भी अपनी सहमति व्यक्त की। उन्होंने सोच-विचार कर पुनः संपर्क करने की बात कहकर चर्चा को समाप्त किया। राकेश भी अपने घर वापिस आ गया।

- - -

राकेश को एक बैठक के सिलसिले में पचमढ़ी जाना था। उसने गौरव और मानसी को भी साथ चलने के लिये कहा। दोनों ही इसके लिये तैयार हो गए। उनका जाने का प्रोग्राम तय हो गया।

इस बीच आनन्द मानसी के प्रति बहुत आकर्षित हो गया था। एक दिन वह गौरव से बोला-

यार राकेश और मानसी के बीच में आपस में क्या चल रहा है ?

मुझे तो नहीं लगता कि उनके बीच कुछ चल रहा है। इतना अवश्य है कि राकेश ने बुरे वक्त में उसकी मदद की थी इसलिये वह राकेश के प्रति आभारी थी।

आभारी होना अलग बात है। लेकिन आजकल तो उनके बीच में मेलजोल कुछ अधिक ही बढ़ गया है।

मिलने-जुलने का मतलब यह तो नहीं होता कि उनके बीच कुछ चल रहा है।

यार मुझे मानसी बहुत अच्छी लगती है। लगातार उसका खयाल आकर दिल को तड़पाता है। मैं चाहता हूँ कि मेरी उससे मित्रता हो जाए। तुम चाहो तो इसमें मेरी सहायता कर सकते हो।

जिस समय मानसी मुसीबत में थी उसके लिये पल्लवी ने तुम से ही तो मदद मांगी थी। उस समय तो तुम मुंह मोड़ कर चले गये थे।

उस समय मेरे दिल में यह बात नहीं आयी थी। तुम तो जानते हो इन मामलों में राकेश बहुत चतुर है। वह त्वरित निर्णय ले लेता है। मैं सोचता ही रह जाता हूँ।

मैं राकेश और मानसी के साथ पचमढ़ी जा रहा हूँ। प्रयास करूंगा कि मानसी के मन में तुम्हारे लिये जगह बना सकूँ।

तुम मेरे अजीज मित्र हो। मेरा यह काम कैसे भी करा दो। मैं उसे जो कुछ वह चाहती है उससे कहीं अधिक दूंगा और उसकी तकदीर बदल दूंगा।

- - -

नियत समय पर राकेश, गौरव और मानसी पचमढ़ी पहुँचे। वहां राकेश ने दो कमरे लिये थे। एक में राकेश और गौरव ठहरे और दूसरे में मानसी थी। दूसरे दिन सुबह जब वे तैयार होकर बैठे पचमढ़ी के सुहावने मौसम का आनन्द लेते हुए बरामदे में नाश्ता कर रहे थे तभी मानसी ने उचित समय देखकर राकेश से कहा-

आप मेरे जीवन के विषय में कुछ भी नहीं जानते हैं। फिर भी आपने न केवल मेरी मदद की है वरन पिछले कुछ दिनों में मुझे जो आत्मीयता दी है उसके कारण मुझे बार-बार ऐसा लगता है कि मैं आपके साथ कुछ गलत कर रही हूँ।

क्या गलत कर रही हो ?

मैं चाहती हूँ कि आपको मेरे पिछले जीवन के विषय में सब कुछ पता रहना चाहिए। मेरा पिछला जीवन बहुत बुरा रहा है। हो सकता है कि उसे जानकर आपको लगे कि आपको मुझसे संबंध नहीं रखना चाहिए। आप मुझे स्वीकार करें या न करें पर मैं चाहती हूँ कि आपको मेरे विषय में सब कुछ पता हो। आपके

सामने मेरा जीवन एक खुली किताब की तरह हो। उसने बताया कि-

उसका बचपन बहुत गरीबी एवं अभावों में बीता है। उसकी माँ को उसके पिता जी ने एक दूसरी महिला के प्रेम के कारण छोड़ दिया था। उसने बड़ी मेहनत और मजदूरी करके उसे और उसकी बहिन पल्लवी व उसके भाई का पालन-पोषण किया। उसकी आय के साधन बहुत सीमित थे, अतः हम लोगों को उचित शिक्षा वह नहीं दिला सकी। हम लोगों को कई बार दो वक्त के भोजन के लिये मन्दिर के सामने भिक्षा भी मांगना पड़ी। इस प्रकार जमाने की ठोकरें खाते हुए हमारा बचपन बीता। जब हम कुछ बड़े हुए तो सिलाई कढ़ाई करके कुछ पैसा कमाने लगे। इस प्रकार जीवन चलता रहा। जब किशोरावस्था आई तो हमारे ऊपर जमाने की निगाहें ठहरने लगीं। उस समय माँ ने किसी तरह एक एक करके हम दोनों बहनों का विवाह कर दिया। मेरा विवाह जिस व्यक्ति से हुआ वह भोपाल में प्रोजेक्ट में काम करता था। उसका अच्छा-खासा वेतन था। मेरा परिवार सुख से चल रहा था। उसी दौरान आरती और भारती का जन्म हुआ।

पल्लवी का विवाह जिससे हुआ उसके परिवार में वह सुखी नहीं थी। उसका पति बहुत शंकालू स्वभाव का था। वह उस पर बहुत शक करता था। इसके कारण उनमें बहुत विवाद हुआ करता था। उसके भी दो बच्चे हुए लेकिन अपने पति से परेशान होकर एक दिन वह अपने दोनों बच्चों को उसी के पास छोड़कर घर से निकल गई। तभी उसके जीवन में हरीश नाम का एक व्यक्ति उसका हितैषी बनकर आया। वास्तव में हरीश एक दलाल था। उसका काम ही बेसहारा महिलाओं को बहला-फुसला कर वेश्यावृत्ति

में लगाना था। वह उनका कमीशन खाता था और उन्हें केवल इतना ही देता था कि उनका गुजारा चलता रहे। पल्लवी भी उसके चक्कर में फंस गई।

मुझे जब इस बात का पता लगा तो मैं बहुत दुखी हुई। मैंने पल्लवी को समझाने का प्रयास किया। लेकिन वह नहीं मानी। हरीश ने उसे विवाह करने का आश्वासन दिया था। मुझे इससे भी अधिक मानसिक वेदना तब हुई जब मुझे पता चला कि हरीश ने मुझे भी पल्लवी के माध्यम से केवल इसलिये बुलवाया था ताकि वह मुझसे भी वेश्यावृत्ति करा सके। इसीलिये जब मेरा एक्सीडेण्ट हुआ तो इन लोगों ने न तो आपको ही इस विषय में जानकारी दी और न ही मुझे आपका कान्टेक्ट नम्बर दिया। मुझे पांच लाख रूपये का ऋण दिलाने में भी इन्हीं लोगों का हाथ था। ये लोग जानते थे कि इतने ऊंची ब्याज दर पर मैं मूलधन तो क्या ब्याज भी नहीं चुका पाऊंगी और तब ये इसका लाभ उठाकर मुझे भी अपने धन्धे में लगा लेंगे। मेरी तकदीर अच्छी थी जो ईश्वर ने मुझे आप जैसे सच्चे इन्सान से सही वक्त पर मिला दिया। गौरव भी सारी बातें ध्यान पूर्वक सुन रहा था। उसने पूछा कि अब आप आगे क्या करने का विचार कर रहीं हैं?

मानसी काफी विचलित थी और उसने कहा कि मैं राकेश के ऊपर निर्भर हूँ। ये मुझे कम ब्याज पर कहीं से रूपया दिलवा देंगे और मैं इन्हीं के मार्ग दर्शन में आगे बढ़ना चाहती हूँ। इनका परिवार सदैव दान-धर्म में आगे रहा है और मुझे पूरा विश्वास है कि इनका मार्गदर्शन मिलेगा तो मेरा और मेरे परिवार का कल्याण हो जाएगा। अभी तो मैं मानसिक रुप से बहुत त्रस्त हूँ और समझ नहीं पा रही हूँ कि भविष्य का कौन सा रास्ता अख्तियार करुं।

राकेश ने उसकी बातें सुनकर उसे समझाया-जीवन में चिन्तन मनन व मन्थन हमारी चिन्ता के कारणों के निवारण का रास्ता दिखाता है। हमारा सही समय पर सही निर्णय और उसका क्रियान्वयन चिन्ता को हटाता है। चिन्ता, चिन्तन और निवारण जीवन की गतिशीलता के अंग हैं। वे जीवन में सदैव आते रहे हैं आते रहेंगे और यह क्रम अनवरत चलता रहेगा। दुनियां में ऐसा कोई नहीं जिसे कोई चिन्ता न हो और ऐसी कोई चिन्ता नहीं जिसका कोई निवारण न हो। चिन्ता एक निराशा है और उसके निवारण का प्रयास ही जीवन की आशा है। आशाओं से भरा जीवन सुख है निराशा के निवारण का प्रयास ही जीवन संघर्ष है। जो इसमें सफल है वही सुखी और सम्पन्न है जो असफल है वह दुखी और निराश है। यही जीवन का नियम है। यदि हम आशावादी होंगे तभी हम आगे बढ़ सकेंगे और जीवन के संग्राम में सफल हो सकेंगे।

जीवन में परिश्रम, ईमानदारी, लगन, त्याग व तपस्या, सत्य, अहिन्सा, सदाचार, सहृदयता, परोपकार व मानवीयता ही प्रेरणा स्त्रोत बनकर जीने की कला का आधार बनते हैं। हमारा मन एक मन्दिर के समान होना चाहिए। जिसमें सत्य की हमेशा पूजा हो। हम पाप और पुण्य में भेद कर सकें। सही राह व दिशा के चयन की क्षमता हो तभी सफलता हमारे कदमों को चूमेगी। हमेशा याद रखना कि मनसा, वाचा, कर्मणा ही मान सम्मान दिलाता है।

तुम मेरी इस बात को हमेशा याद रखना कि प्रतिभा, प्रतीक्षा, अपेक्षा और उपेक्षा में जीवन के रहस्य छुपे हुए हैं। हमारी अपेक्षाएं असीमित होती हैं। परन्तु हमें अपनी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार ही अपेक्षा करनी चाहिए। जीवन में संघर्षशील एवं

प्रतिभावान व्यक्ति संघर्ष करके विजयी होता है। जो व्यक्ति डरकर पलायन करता है उसे सफलता एवं समृद्धि कभी भी प्राप्त नहीं होती। इसलिये तुम्हें अपने जीवन में कठिन संघर्ष के लिये अभी से तैयार होना होगा। तुम अभी नादान हो। तुममें अनुभव की कमी है। तुम सोचती हो कि व्यापार करके रातों-रात सम्पन्न हो जाओंगी। ऐसा कभी भी संभव नहीं है। मैं तुम्हें हतोत्साहित नहीं कर रहा हूँ बल्कि जीवन का सत्य बतला रहा हूँ।

हमारी अपेक्षाएं बहुत अधिक होती हैं किन्तु योग्यता कम रहती है। तुम्हें अपनी योग्यता और इच्छाओं में सामन्जस्य स्थापित करना होगा। यदि तुम अपनी अपेक्षाओं की संतुष्टि हेतु जल्दबाजी में गलत निर्णय लेकर गलत कदम उठा लोगी तो जीवन भर दुखी रहोगी। इसलिये अपनी योग्यता और अपनी अपेक्षाओं का निर्धारण तुम स्वयं करो।

आज तुम जीवन में असमन्जस में हो घबराहट में तुम्हारा आत्म विश्वास लड़खड़ा रहा है। तुम मन के धैर्य को तराजू समझकर उसमें कर्म और चतुराई के बांट रखो अपनी अन्तरात्मा की आवाज को प्रारब्ध मानकर सही निर्णय लो। तभी तुम्हें मिलेगी सफलता और तुम प्रगति के पथ पर आगे बढ़ोगी। धैर्य रखो और प्रतीक्षारत रहो। कठिनाइयों में भी कठिनाइयों को कठिन होते हुए भी कठिन मत समझो विपरीत परिस्थितियों को समझो और उन्हें हंसते हुए स्वीकार करो उनसे संघर्ष करो प्रभु पर विश्वास रखो यही जीवन में सफलता का आधार बनेगा। इन स्थितियों में कोई तुम्हारा उपहास भी करता हो तो उसे उपहार के रुप में स्वीकार करो। उससे विचलित हुए बिना गम्भीरता से विचार करके अपनी गलतियों में सुधार करके सृजन की दिशा में बढ़ना चाहिए। यह

तुम्हारी सफलता का आधार ही नहीं बनेगा बल्कि समाज में मान-सम्मान व प्रशंसा दिलवायेगा। यह विश्वास रखों कि यही उपहास उपेक्षित होकर तुम्हारी सम्पन्नता का आधार बनेगा।

गौरव जो अब तक चुप था बोल पड़ा- तुम लोग यहां घूमने-फिरने और मौज-मस्ती करने आए हो या अपनी दार्शनिकता और ज्ञान बघारने आए हो? गौरव के यह कहने पर जैसे दोनों की तन्द्रा टूटी। राकेश ने देखा साढ़े दस बज चुके थे। ग्यारह बजे से उसकी मीटिंग थी। उसने गौरव से कहा कि मैं तो अब अपनी मीटिंग अटेण्ड करने जाऊंगा। तुम मानसी को पचमढ़ी घुमा देना। मैं लगभग चार बजे तक फुरसत हो पाऊंगा। उसने उनके लिये टैक्सी की व्यवस्था कर दी। मानसी ने नहा-धो कर जटाशंकर और छोटे महादेव जाने की योजना बनाई थी।

राकेश वहां से अपनी मीटिंग में चला गया। मानसी रुम में जाकर गुनगुनाती हुई नहाने चली गई। गौरव कमरे के बाहर बरामदे में कुर्सी पर बैठा अखबार पढ़ता हुआ उसके तैयार होकर आने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसके कानों में मानसी के गुनगुनाने और शावर के पानी के गिरने की आवाज आ रही थी। उसका ध्यान अखबार से हटकर मानसी की ओर चला गया। उसने देखा कि बाथरुम की खिड़की बरामदे की ओर थी। लगभग छै फिट ऊंची उसी खिड़की से वे आवाजें आ रहीं थीं। उसे वे आवाजें अपनी ओर पुकारती सी लग रहीं थी। उसने जिस कुर्सी पर वह बैठा था उसे ही खिड़की के नीचे लगाया और उस पर खड़े होकर भीतर झांकने का प्रयास किया। उसके दिमाग में घण्टियां बज रहीं थीं। उसकी कल्पना में नहाती हुई मानसी की तस्वीर तैर रही थी जिसे वह देखना चाहता था। उसने खिड़की से झांकने का प्रयास किया तो

उसे मानसी का गरदन तक का भाग ही दिखलाई दिया। उसने देखा कि वह अपने आप में खोयी हुई थी। उसका ध्यान खिड़की की ओर नहीं था। गौरव रोमांचित हो रहा था। वह मानसी के कुछ और भागों को देखने के लिये अपने पंजों पर और ऊपर को उठा। इससे उसे कुछ और भी अधिक मानसी दिखलाई देने लगी। वह और ऊपर उठने का प्रयास करने लगा। उसके इस प्रयास में कुर्सी के पाये खिसक गये। कुर्सी के खिसकते ही गौरव धड़ाम से जमीन पर आ गया। कुर्सी के गिरने और टूटने से जो आवाज हुई उसने मानसी का गाना भी बन्द कर दिया। उस आवाज से वहां से गुजरता हुआ वेटर भी ठहर गया और गौरव की ओर लपका। एक क्षण तो गौरव चुप रहा पर कुछ देर बाद ही उसके पैर और कुहनी में असहनीय पीड़ा प्रारम्भ हो गई। वह चाह कर भी अपनी कराहें नहीं रोक पा रहा था। उसके पैर में मोच आ गई थी। कुहनी छिल गई थी।

बाहर की आवाजों को सुनकर मानसी ने जल्दी-जल्दी नहाया और बाहर आ गई। उसने देखा कि होटल के दो कर्मचारियों की सहायता से गौरव कमरे में आया था और बिस्तर पर बैठा कराह रहा था। मानसी के पूछने पर कि क्या हो गया गौरव ने बतलाया कि कुर्सी टूट गई और गिरने से पैर में चोट आ गई है। गौरव का उत्तर सुनकर वहां खड़े वेटर मुस्कराने लगे। मानसी को लग गया कि कुछ बात है जो गौरव छुपा रहा है।

मानसी जल्दी-जल्दी तैयार हुई और वेटरों की मदद से गौरव को लेकर अस्पताल जाने के लिये निकली। कमरे से बाहर निकलकर बरामदे में उसने देखा कि गौरव जहां बैठा अखबार पढ़ रहा था वहां से उसकी कुर्सी काफी दूर पड़ी थी। मानसी इतनी

भोली भी नहीं थी। उसने नजर उठाकर बाथरुम की खिड़की को देखा और उसे पूरी कहानी लगभग समझ में आ गई। उसके चेहरे पर भी मुस्कान दौड़ गई। वह उसे लेकर पास के अस्पताल में गई जहां गौरव की मलहम पट्टी की गई। तब तक गौरव भी अपने को संभाल चुका था। मानसी उसे लेकर जटाशंकर चली गई। गौरव सीढ़ियां उतरने की स्थिति में नहीं था। वह बाहर ही रूक गया। मानसी भगवान शिव के जटाशंकर स्वरुप का दर्शन करने अकेली ही चली गई।

मानसी ने भगवान शिव के समक्ष खड़े होकर उसे याद वह प्रार्थना दुहराई जो उसे बचपन से ही याद थी। बचपन में वह जिस मन्दिर की शरण में गई थी वहां नित्य प्रति यह प्रार्थना होती थी। उस समय वह मन्दिर में इसे ऊंचे स्वर में गाया करती थी। आज वह मन ही मन ईश्वर से वही प्रार्थना कर रही थी।

इतनी कृपा दिखाना हे प्रभु कभी न हो अभिमान।
मस्तक ऊंचा रहे मान से ऐसे हों सब काम।
रहें समर्पित करें देशहित, देना यह आशीष।
विनत भाव से प्रभु चरणों में झुका रहे यह शीष।
करें दुख में सुख का अहसास रहे तन-मन में यह आभास।
धर्म से कर्म, कर्म से सृजन, सृजन में हो समाज उत्थान।
चलूं जब इस दुनियां का छोड़ ध्यान में रहे तुम्हारा नाम।

दर्शन के बाद जब मानसी ऊपर आई तो गौरव की तकलीफ देखते हुए उसने आगे का प्रोग्राम कैन्सिल कर दिया और गौरव को लेकर होटल आ गई। होटल में उसने उसे डाक्टर द्वारा दी गई दर्द

और नींद की गोली खिला दी। इससे उसे दर्द में भी आराम लगा और उसे नींद भी आ गई। कुछ देर में वह सो गया। मानसी बाहर आकर बरामदे में बैठ गई। वह वहां रखी पत्रिका के पन्ने पलटती रही फिर होटल के बाहर के प्राकृतिक दृश्यों को देखते-देखते अपने खयालों में खो गई।

राकेश की मीटिंग कुछ जल्दी खत्म हो गई थी। वह कुछ पहले ही वापिस आ गया था। आने पर मानसी ने उसे गौरव के विषय में बताया तो राकेश कमरे में उसे देखने पहुँचा। वह सो रहा था। राकेश ने उसे नहीं जगाया। वह फिर बाहर आकर मानसी के साथ ही बैठ गया। उसने मानसी से पूछा तो उसने बताया- मैं तो बाथरुम में नहा रही थी तभी मैंने जोर की कुर्सी गिरने की और गौरव की आवाज सुनी। मुझे लगा कि पता नहीं क्या हो गया। मैं जल्दी-जल्दी नहाकर बाहर आई। तब तक वेटर इन्हें कमरे में बिस्तर पर लिटा चुके थे। इनको बहुत दर्द था। इनकी हालत देखकर मैं जल्दी से तैयार हुई और इन्हें अस्पताल ले जाने के लिये बाहर निकली। मैंने वेटर को बुलाकर इनकी मदद करके इन्हें बाहर टैक्सी तक पहुँचाने को कहा। जब मैं कमरे के बाहर निकली तो मैंने वहां देखा जहां ये गिरे थे। वह कुर्सी अभी भी वहीं थी। उसकी एक टांग टूट चुकी थी। उसे उठाकर वेटर ने किनारे भर कर दिया था। वे वेटर जिस प्रकार मुस्करा रहे थे वह मुझे अजीब लग रहा था। अब मुझे उनकी मुस्कराहट का राज समझ में आया। गौरव मुझे नहाते हुए देखने की कोशिश में ही गिरा है। सब कुछ सुनकर राकेश को पहले तो गौरव की हरकत पर गुस्सा आया पर मानसी के चेहरे को देखकर वह मुस्करा उठा।

मानसी ने पूछा- आपकी मीटिंग कैसी रही?

अच्छी रही। सभी निर्णय एक मत से तय हो गए इसीलिये जल्दी आ गया।

आपने भोजन कर लिया है?

अभी नहीं किया।

तो फिर खाना बुलवा लूं?

क्या तुम्हें भूख लगी है?

नहीं ! नाश्ता कर लिया था। वह भी कुछ भारी ही था।

फिर गौरव को भी उठ जाने दो। एक साथ खाएंगे। मैंने भी वहां नाश्ता कर लिया था। वह भी भारी था। कल से तुम्हारे अतीत को जानने के बाद मेरा मन कुछ विचलित सा है। मैं सोचता रहा। मेरे मन में एक ही बात आती है कि जो बीत गया सो बीत गया किन्तु तुम्हारा भविष्य वैसा न रहे जैसा तुम्हारा भूतकाल रहा। तुम अपने बल पर समाज में सम्मान पूर्वक जियो यही मेरी कामना है। किन्तु यह इतना सहज भी नहीं है। इसके लिये जो भी करना है तुम्हीं को करना है और क्या करना है यह भी तुम्हीं को तय करना है। इतना जरुर है कि मैं हर कदम पर एक सच्चे हितैषी के रूप में तुम्हारे साथ हूँ।

मैं तुमसे एक बात और कहना चाहता हूँ कि तुमने जिस भोलेपन और निश्छलता के साथ सब कूछ मुझे बता दिया उस तरह से किसी और को मत बताना। यह दुनियां बड़ी अजीब है। इसकी तासीर बड़ी विचित्र है। यह औरों के कष्ट से सुखी होती है और औरों के सुख में दुखी हो जाती है। अपनी व्यथा को कथा मत बनाओ। इसे दुनियां को मत सुनाओ। कोई तुम्हारी पीड़ा को नहीं बांटेगा। स्वयं को मजबूर नहीं मजबूत बनाओ। अपनी आत्मशक्ति और आत्मविश्वास को संचित करो। फिर विचार करो,

समय को पहचानो। परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता। परिश्रम करोगी तो ये दुख के पल भी बीत जाएंगे। तब सफलता अवश्य मिलेगी। तब दूसरे लोग भी तुमसे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने लगेंगे।

जीवन में धन की उपयोगिता तभी है जब उसका दुरूपयोग न हो। गरीबी व अमीरी दोनों की प्रचुरता कष्टदायक हो सकती है। गरीबी देती है अभावों को जन्म और अत्यधिक अमीरी दुर्व्यसन पैदा करती है। इसीलिये हमारे धर्मग्रन्थ कहते हैं- सांई इतना दीजिये जामें कुटुम समाय, मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।

ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है और उसकी इस सृष्टि में उसकी सबसे सर्वश्रेष्ठ कृति मानव है। मानव में सृजन और विकास की अद्भुत क्षमता है। हममें दूरदृष्टि हो, हमारा इरादा पक्का हो, हममें साहस हो और ईमानदारी से काम करने का जज्बा हो तो सफलता हमारे कदम चूमती है। जहां धर्म और कर्म होते हैं सुख भी वहीं होता है। यह सही है कि सृजन के साथ ही विनाश भी रहता है। जहां लय और ताल होते हैं वहीं स्वरों में मधुरता होती है। जहां हरियाली होती है वहां सौन्दर्य होता है। राकेश भावुकता में बह रहा था। वह कहता जा रहा था और मानसी किसी मूर्ति के समान एक टक उसे देखते हुए सुन रही थी। वह कह रहा था- जहां झरने और पर्वत हैं वहां सौन्दर्य होता है। जहां जल होता है वहां जीवन होता है। जहां सच्ची चाहत होती है वहीं प्राप्ति भी निश्चित ही होती है। जहां ईश्वर साथ होता है वहां भाग्य भी साथ निभाता है। जहां परिश्रम और प्रयास होता है वहां ईश्वर की मदद भी होती है। आवश्यकता केवल ईमानदारी से और पूरे मनोयोग से परिश्रम करने की होती है।

यह एक कटु सत्य है कि असफलताओं का इतिहास नहीं होता और न ही इन्हें कोई याद करता है। ये विस्मृतियों के गर्त में समा जाती हैं। यदि हम विचार करें तो पाएंगे कि असफलता ही सफलता की जननी है। यही हमारी त्रुटियों को दिखाकर हमें सही राह की ओर मोड़ देती हैं। तभी हमें सफलता प्राप्त होकर हमारी आगे की पीढ़ियों को भी समृद्धता प्राप्त होती है।

मानसी से इस लय में और इस लहजे में आज से पहले किसी ने बात नहीं की थी। वह भाव-विभोर हो गई थी। उसकी आंखें सजल हो चुकीं थीं। राकेश उसके पास आ गया। उसने अपने रूमाल से उसकी आंखों से उसके गालों पर ढुलके हुए खारे पानी को पोंछते हुए कहा- हिम्मत रखो और साहस से काम लो। मैं हर कदम पर तुम्हारे साथ हूँ। राकेश का स्पर्श मिलते ही मानसी जैसे तन्द्रा से जागी हो। उसने अपने हाथों से अपने आंसू पोंछने का प्रयास किया।

राकेश ने स्थितियों को सहज बनाने के मकसद से जानते हुए भी उससे पूछा- गौरव कैसे घायल हो गया। वह आखिर कर क्या रहा था।

उसने मुस्कराते हुए कहा- आप सब समझते हैं। फिर मुझे क्यों परेशान कर रहे हैं। तभी कमरे से गौरव की आवाज आयी। वह मानसी को पुकार रहा था। उसकी आवाज सुनकर राकेश और मानसी दोनों भीतर गये। राकेश को देखते ही गौरव ने पूछा- तुम कब आ गए?

जब तुम सो रहे थे। अब दर्द कैसा है? पैर में ही है या आंखों के रास्ते दिल में समा गया है? गौरव झेंप गया। मानसी के होठों पर भी मुस्कराहट तैर गई। उसकी झेंप उसके भीतर के चोर की

चुगली कर रही थी। राकेश ने मानसी से कहा- अब भोजन बुलवा लो? मानसी ने फोन का रिसीवर उठाकर भोजन का आर्डर दे दिया।

भोजन के बाद राकेश ने गौरव को आराम करने की हिदायत दी। उसने मानसी से कहा कि सुबह तुम छोटे महादेव के दर्शनों को नहीं जा पाईं थीं। चलो तुम्हें दर्शन करा लाऊं। तुम्हारे माध्यम से मुझे भी शिव के दर्शनों का सौभाग्य मिल जाएगा। वे कमरे से निकल पड़े।

टैक्सी बढ़ती जा रही थी। सागौन के ऊंचे-ऊंचे वृक्ष पीछे छूटते जा रहे थे। सड़क के एक ओर ऊंची-ऊंची भूरी-भूरी पहाड़ियां थीं तो दूसरी ओर गहरी खाइयां। इनके बीच सर्प सी बलखाती सड़क पर चलती टैक्सी कभी दायें और कभी बायें मुड़ती हुई आगे बढ़ती जा रही थी। जब थोड़ा शोरगुल कानों में पड़ा और टैक्सी रूकी तो दोनों ही चौंके थे। दोनों ही विपरीत दरवाजों से टैक्सी से बाहर आ गए।

सूरज पश्चिम में अपने विश्राम सदन की ओर जा रहा था। प्रकाश कुछ-कुछ कम होने लगा था। गुफा के भीतर टपकती हुई बूंदों के बीच बैठे शिव ऐसे लग रहे थे जैसे कोई योगी अपनी तपस्या में लीन हो। दोनों ही इस दिव्य वातावरण में मंत्रमुग्ध से शिव के इस रुप के आगे नतमस्तक हो गए। उनका अंतरमन कामना विहीन हो गया। वे इस संसार और अपने अस्तित्व को कुछ क्षणों के लिये भूल बैठे। जब तन्द्रा भंग हुई तो वे प्रभु के चरणों में प्रणाम करते हुए गुफा से बाहर आ गए। अंधेरा घिरने लगा था। हवा में ठण्डक बढ़ती जा रही दोनों को ही होटल वापिस पहुँचने की जल्दी थी। वे टैक्सी में बैठे और रवाना हो गए। रास्ते

में कुछ हल्की-फुल्की बातचीत चलती रही। होटल वापिस आकर उन्होंने देखा कि गौरव जाग उठा था और गर्म कपड़े पहनकर बरामदे में बैठा हुआ था।

तीनों कमरे के भीतर आ गए। राकेश ने होटल के वेटर को बुलाया और अपने लिये व्हिस्की का आर्डर दिया गौरव हमेशा ही बियर पीता था इसलिये उसके लिये बियर और मानसी के लिये साफ्ट ड्रिंक मंगवाई गई। राकेश और मानसी ने हाथ मुंह धोकर जब तक हल्के और गर्म कपड़े पहने तब तक सारा सामान आ चुका था।

गौरव लेटे-लेटे ही अखबार के पन्नों में खोया हुआ था। राकेश ने उससे पूछा- भाई जी आज क्या कोई खास खबर है ? बड़े मन लगाकर पेपर में डूबे हो ?

खास खबर क्या होगी ? वही बलात्कर, वही हत्या, वही अत्याचार और राजनीति की टांग खिच्चौअल। इसके अलावा अखबारों में रहता ही क्या है ? अखबारों में सिर्फ चमकदार शहरों की दागदार दास्तानें होतीं हैं। कहने को देश को आजाद हुए 64 साल हो गए। देश में प्रजातंत्र है, लेकिन अखबारों के पन्नों पर नेताओं, अफसरों, पुलिस, व्यापारी और अपराधियों का कब्जा है। गांव-देहात आज भी उपेक्षित हैं। वहां आज भी जंगल राज चल रहा है।

उत्तर प्रदेश में आगरा के पास एक गांव के पनघट पर एक गरीब महिला जो किसी पिछड़ी जाति की थी, प्यासी खड़ी थी। मैं उसे चुपचाप देख रहा था। उसकी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह कुएं से पानी निकाल कर पी ले। उस गांव में गांव के जमींदार का

राज्य चलता था। वह सवर्ण था और पिछड़ी जातियों को उस कुएं से पानी लेना वर्जित था।

एक बार उसने हिम्मत की थी। वह इस व्यवस्था से विद्रोह करके पुलिस के दरवाजे पर न्याय मांगने गई थी। वहां उसे अपनी अस्मत तक लुटानी पड़ी। दूसरे दिन उसकी अस्मत लूटने वाले वर्दीधारी जमींदार के यहां सम्मानित किए जा रहे थे।

इस घटना के बाद वह अपनों में भी तिरस्कृत हो गई थी। सभी ने उसे छोड़ दिया था। वह अब पतित कहलाती थी। पूरे समाज में कोई नहीं था जो उसे अपना ले और उसके जीवन को संवार दे।

देश में अनेक नेता आए और चले गए। वह महिला और उस जैसी न जाने कितनी महिलाएं आज भी जहां की तहां हैं। वे प्यासी थीं और प्यास ही उनकी जीवन की नियति है। ऐसे समाज और ऐसे अखबारों में तुम किन समाचारों की बात कर रहे हो?

राकेश भाई! हमने केवल भौतिक सुख-सुविधाओं में तरक्की की है, नैतिकता की दृष्टि से हम बहुत नीचे चले गए हैं। हमारी संवेदनाएं मरती जा रहीं हैं। हमारी सभ्यता दिखावटी हो चली है और हमारी संस्कृति अपना मूल स्वरुप खोकर विकृत और वीभत्स होती चली जा रही है।

कभी हमारे यहां शादी के बाद दुल्हन को डोली में बैठाकर विदा के समय कहार कन्धों पर लेकर जाते थे। उस समय हमारा यह तथाकथित विकास नहीं हुआ था। यातायात के साधनों का नितान्त अभाव था। रास्ते भी टेढ़े-मेढ़े, जंगलों और पहाड़ों के बीच से जाते थे। राह में अगर कोई चोर डाकू भी मिल जाए तो वह उस दुल्हन का सम्मान करता था, उसे उपहार देता था, अपनी

शुभकामनाएं देता था और उसे अपनी सीमाओं के बाहर तक ससम्मान सुरक्षित विदा करता था। कभी भी किसी के साथ ऐसी वारदातें नहीं होतीं थीं जैसी आज रोज राह चलते हो रही हैं।

मैं एक ऐसी महिला को जानता हूँ जो विवाह के बाद दूसरी या तीसरी विदाई में दुल्हन के रुप में कार में विदा हो कर जा रही थी। रास्ते में उस कार के ड्राइवर ने कुछ अपराधियों के साथ मिलकर उसके साथ सामूहिक बलात्कार का दुष्कर्म कर डाला। वह ससुराल पहुँचने के पहले ही पुलिस स्टेशन पहुँच गई। वहां थानेदार ने भी उससे ऐसे-ऐसे सवाल पूंछे जिनको दोहराना भी संभव नहीं है। उस थानेदार ने अपराधियों का पता लगाया और उनसे मिलकर तगड़ी रकम वसूली फिर मामले को रफादफा कर दिया।

जब वह ससुराल पहुँची तो उसके पति ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। दुर्भाग्यवश उसे अपने पिता के घर वापिस जाना पड़ा। वह एक साहसी और समझदार महिला थी। उसने परिश्रम करके गृहउद्योग के माध्यम से अपने आप को स्वाबलंबी बनाया। उसका काम अच्छा चल पड़ा। उसने अपने जैसी अनेक महिलाओं की मदद की और उन्हें भी उनके पैरों पर खड़ा करके आत्म निर्भर बना दिया।

राकेश को सिगरेट की तलब लगी। वह गौरव से कहता है- यार तुम कार लेकर बाजार से सिगरेट ले आओ। दिन भर से होटल में पड़े हो कुछ तफरीह हो जाएगी। गौरव जाने के लिये तैयार होकर जाने लगता है। उसी समय मानसी कहती है मुझे भी बाजार से थोड़ा सा सामान लेना है। आपकी इजाजत हो तो मैं भी इनके साथ चली जाऊं। राकेश सहमति दे देता है। वे दोनों होटल

की टैक्सी पर बाजार के लिये निकल पड़ते हैं। बाजार होटल से लगभग एक किलोमीटर दूर था।

राकेश बैठा व्हिस्की की चुस्कियां ले रहा था तभी उसकी नजर एक डायरी पर पड़ती है। उत्सुकतावश वह उसे उठा लेता है। जब वह उसे खोलता है तो उसे समझ में आता है कि वह मानसी की डायरी थी जो भूल से बाहर ही छूट गई थी। वह उसे रखना भूल गई थी। राकेश उसके कुछ पन्ने पलटता है तो एक पन्ने पर उसे अपना नाम दिखलाई देता है। उस पन्ने पर उसे संबोधित करके लिखा गया था। वह उसे पढ़ने लगता है।

मेरा प्यार सागर सा गहरा और त्रिवेणी सा पवित्र है। क्या आप मेरे प्यार को स्वीकार करेंगे ? मैं आपके प्रेम की प्यासी हूँ। मैं जानती हूँ कि यह आसान नहीं है लेकिन यह असंभव भी तो नहीं है। मुझे लगता है कि यदि सच्चाई और ईमानदारी की राह पर चला जाए। मन में धैर्य हो, सफलता की चाह हो, उत्साह हो और सही राह पर आगे बढ़ा जाए। विपत्तियों के ज्वार-भाटों में भी संघर्षरत रहा जाए तो विजय अवश्य मिलेगी। जीवन में सुख-समृद्धि और वैभव अवश्य आएगा। जीवन खुशियों से भर जाएगा। प्यार की खुशबू से हमारा आंगन महक उठेगा। हमारा प्यार भरा जीवन ऐसा ही होगा। ..... पढ़ते-पढ़ते राकेश व्हिस्की का एक गहरा घूंट लेता है और मुस्करा उठता है।

इधर टैक्सी होटल के बाहर निकली तो गौरव ने मानसी से कहा- राकेश आपको बहुत चाहता है।

हां! हो सकता है।

हो सकता है नहीं, वह वास्तव में चाहता है।

हाँ! कभी-कभी मुझे ऐसा लगता तो है किन्तु कहाँ मैं और कहाँ वो।

वैसे आनन्द भी आपको बहुत चाहता है। मैं तो दोनों का ही मित्र हूँ। दोनों को जानता हूँ। आनन्द आपके विषय में हमेशा बातें करता है। वह आपसे बात करना चाहता है।

मैं किसी से बात नहीं करना चाहती।

बात करने में क्या हर्ज है।

मुझे नहीं करना।

मेरी खातिर कर लीजिए।

गौरव मानसी के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही आनन्द को फोन लगा लेता है। वह उसे बताता है कि वे और मानसी बाजार जा रहे हैं। वह उसे मानसी से बात करने के लिये कहता है और फोन मानसी की ओर बढ़ा देता है। मानसी कहती है हलो!

कैसी हो?

अच्छी हूँ।

गौरव ने तुमसे मेरे बारे में कुछ कहा है ?

हाँ ! कहा तो है।

तुम मेरे विषय में क्या सोचती हो ?

मैं आपके विषय में कुछ भी नहीं सोचती।

पर मैं तो हर समय तुम्हारे ही विषय में सोचता रहता हूँ। मुझे तुम्हारे बिना अपना जीवन अधूरा लगता है। गौरव ने तो तुम्हें बताया ही होगा। तुम अगर मुझे स्वीकार कर लो तो मेरे जीवन में खुशियों की बरसात हो जाएगी। विश्वास रखो मैं तुम्हारे लिये कुछ भी करने को तैयार हूँ। मेरे रहते तुम्हारे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहेगा। तुम कल्पनाओं की रानी हो

तो मैं वास्तविकता का राजा हूँ। तुम रुप की रानी हो तो मैं धन का महाराजा हूँ। तुम चांद की चांदनी हो तो मैं सूरज की धूप हूँ। जीवन में सब कुछ पाया लेकिन एक दिन यह काया मिट जाना है। शेष रह जाएंगी केवल स्मृतियां।

मुझे आपसे कुछ भी नहीं चाहिए। अच्छा हो कि आप अपने आप को पल्लवी तक ही सीमित रखें। मैं आपकी इस मामले में कोई मदद नहीं कर सकती। मैंने अपने जीवन का रास्ता निश्चित कर लिया है। मेरा और आपका रास्ता अलग-अलग है। यह कहते-कहते वह फोन बन्द कर देती है और गौरव की ओर बढ़ा देती है।

वह गौरव से कहती है ऐसे लोग सच्चाई को नहीं समझ सकते। अपनी विचित्र सोच और समझ के कारण इनकी कार्यशैली भी विचित्र होती है। जो इन्हें सही रास्ता दिखलाता है उसे ये अपना दुश्मन समझते हैं। ये खुद ही फरियादी होते हैं और खुद ही न्यायाधीश हो जाते हैं।

आनन्द का फोन फिर आता है लेकिन तब तक वे बाजार पहुँच चुके थे। गौरव उससे कहता है कि तुम स्वयं बात कर चुके हो और मुझे नहीं लगता कि अब बात करने को कुछ भी शेष रह गया है। जब वे सामान लेकर होटल पहुँचते हैं तो देखते हैं कि राकेश अभी भी हाथ में व्हिस्की का गिलास लिये बैठा है। उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी।

दूसरे दिन सुबह सभी देर से उठे थे। बादल घिरे हुए थे। रात को कुछ पानी भी गिर गया था। बरसात का प्रभाव होटल के बाहर हर ओर दिख रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे पूरी पचमढ़ी को धोया गया हो। ठण्डक भी बढ़ी हुई थी। मानसी राकेश और गौरव के कमरे में आ गई थी। वहीं बैठकर वे चाय पी रहे थे। गौरव ने

राकेश से पूछा- आज का क्या प्रोग्राम है ? राकेश कह उठा तुम्हारी क्या मन्शा है।

मेरे पैर में तो कुछ दर्द हो रहा है और कमरे में ही आराम करने का मन हो रहा है।

मैं भी थकी हुई हूँ और मेरा मन भी कहीं जाने का नहीं हो रहा है। राकेश पचमढ़ी का नैसर्गिक सौन्दर्य देखते हुए बोल पड़ा-

मेघाच्छादित आकाश
उमड़-घुमड़ कर बरस रहे बादल
गरज रही बिजली
वायु का एक तीव्र प्रवाह
छिन्न-भिन्न कर देती है बादलों को
शेष रह जाता है
विस्तृत नीला आकाश।

कौन है ऐसा
जिसके जीवन रुपी आकाश में
घिरे न हों
परेशानी के बादल
गरजी न हों मुसीबत की बिजलियाँ

वह जो सकारात्मक सृजनशीलता और
धर्म-निष्ठा के साथ
जूझता है
परेशानियों और मुसीबतों से
उसके संघर्ष की वायु का प्रवाह

निर्मल कर देता है
उसके जीवन के आकाश को।
लेकिन
जहाँ होती है नकारात्मकता
जहाँ होता है अधर्म
वहाँ होता है पलायन
वहाँ होती है पराजय
वहाँ होती है कुण्ठा और
वहाँ होता है अवसाद
वहाँ छाये रहते हैं बादल
और वहाँ कड़कती रहती हैं बिजलियाँ।

प्रत्येक का जीवन होता है
नीला निर्मल आकाश।
व्यक्ति की सोच
सच्चाई और सक्रियता
भर देती है उसे
बादल पानी और बिजली से
अथवा कर देती है उसे
नीला, निर्मल और प्रकाशवान
यही है जीवन का यथार्थ।

मानसी इसे सुनकर काफी प्रभावित हुई थी। उसने राकेश से कहा- मुझे नहीं पता था कि आप कविता भी रचते हैं। मैं आपकी और भी कविताएं सुनना चाहूँगी।

इसी बीच राकेश ने मानसी से कहा- मेरे प्रति तुम्हारे विचारों से मैं अभीभूत हूँ। इससे मुझे जीवन में हमेशा प्रेरणा मिलेगी और ये जीवन की राहों में मार्गदर्शन देंगी। एक अच्छा मित्र मिलना सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि होती है और मैं सोचता हूँ कि यह तुम्हारे रुप में मुझे प्राप्त हो रही है। प्रेम, एक पूजा या भक्ति के समान है। प्रेम दिल की अभिव्यक्ति व मन से निकली भावना को परिवर्तित करके अनुभूति बनती है। यह दिल की चाहत व उसके मन्थन से उत्पन्न विचारों की अन्तिम परिणिति है। मुझे इसका बहुत गम्भीर अनुभव हो चुका है। प्रेम का कोई स्वरुप नहीं होता, न ही इसका कोई विकल्प है। यह एक दिव्य ज्योति है जिसके प्रकाश का आभास हमारे दिल में होता है। यह एक कल्पना है जो वास्तविकता में परिवर्तित होकर जीवन का आधार बनती है। एक तपस्या है एवं भावनाओं का समर्पण है एक ऐसी भक्ति है जिसका न तो प्रारम्भ है और न ही कहीं अन्त है। प्रेम से सुख और शान्ति मिलती है और यह जीने की कला सिखाती है। जीवन में सच्चा प्रेम तन और मन को बल एवं आत्मा में चेतना जागृत करता है। जीवन में कितनी भी विपरीत परिस्थितियां आ जाएं। प्रेम कभी समर्पण नहीं अर्पण ही करता है एवं संघर्ष की क्षमता प्रदान करता है। तुम्हारे अन्तरमन में मेरे प्रति जो प्रेममय भावना है उसका पता मुझे आज चला। मैं निश्चित रुप से बहुत भाग्यवान हूँ। मुझे आशा है कि तुम कठिन परिस्थितियों में सही मार्ग दिखाकर कृतार्थ करती रहोगी। जीवन में याद रखना विश्वसनीयता विश्वास की जननी है। इसके बिना जिन्दगी अधूरी रहती है यदि विश्वसनीयता संदिग्ध है तो विश्वास का अन्त हो जाता है इसकी पहचान हमारे स्वविवेक, आत्म मन्थन और अन्तरमन की

भावनाओं से होता है। विश्वसनीयता और विश्वास के महत्व को हम तब समझ पाते हैं जब हमारे साथ विश्वासघात होता है। तब हम सोचते हैं कि हमने विश्वसनीयता को परखे बिना किसी पर विश्वास क्यों किया। मुझे आशा है कि तुम्हारे और मेरे बीच ऐसी परिस्थितियां कभी नहीं आएंगी और हमारे बीच विश्वास की यह पतली डोर हमेशा बंधी रहेगी।

उसने मानसी से पूछा- तुम मुझे सच-सच और स्पष्ट अभी बता दो कि तुम मुझसे क्या अपेक्षा रखती हो। मानसी ने भी बिना किसी औपचारिकता के तीन मांगे विनम्रता पूर्वक राकेश के सामने रखीं। पहली उसके दोनों बच्चे आरती और भारती को अच्छी शिक्षा दिलवा कर उन्हें आत्म निर्भर बना देवें ताकि उनका जीवन संवर सके। दूसरा आपको मेरी पारिवारिक परिस्थितियों के विषय में पूरा ज्ञान हो चुका है। मेरी कोई बहुत बड़ी महत्वाकांक्षा नहीं है। मुझे कोई ऐसा व्यापार करवा देवें जिससे मेरा परिवार जीवन की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। मैं जानती हूँ कि आवश्यकताओं का कभी अन्त नहीं होता। किन्तु मैं सीमित साधनों में ही सुखी जीवन की कल्पना कर रही हूँ और तीसरी व अन्तिम अपेक्षा आपसे है कि मेरी बड़ी बेटी आरती जो चौदह साल की है वह हीनता बोध का शिकार हो रही है। उसे फिल्मों में न जाने कैसे हीरोइन बनने का भूत सवार हो गया है। आपके मुम्बई में फिल्म इन्डस्ट्रीज में काफी पहचान है या तो आप उसका भूत उतार दीजिये या उसे फिल्म इन्डस्ट्रीज में कोई स्थान दिला दीजिये। इतना कहकर मानसी ने राकेश की ओर आशा और याचना भरी निगाहों से देखा। गौरव भी राकेश की ओर नजर गड़ाये था। राकेश ने अपना मोबाइल उठाया और आनन्द को फोन

करके कहा- आरती और भारती का एडमीशन वह उसके स्कूल में कराना चाहता है। उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह फीस में किसी प्रकार का डिस्काउण्ट नहीं चाहता और इस पर होने वाला समस्त व्यय वह स्वयं करेगा। आनन्द ने भी इसे स्वीकार करते हुए बतलाया कि उसका एडमीशन हो जाएगा। अब राकेश ने अपने एक मित्र को फोन लगाकर दो टैक्सियां उठवा दीं जिनकी मार्जिन मनी राकेश ने अपने एकाउण्टेण्ट को कहकर भुगतान करवा दिया और बाकी की रकम फाइनेन्स कम्पनी से उपलब्ध हो गई। राकेश ने मानसी को कहा कि तुम्हारे दोनों काम मैंने करा दिये हैं, अब तुम मेहनत करो। श्रम व परिश्रम से धन कमाओ। अपनी किस्तों का भुगतान करो और सुखी जीवन का आनन्द उठाओ। रही तुम्हारी तीसरी बात तो यह तो मैं आरती से मिलकर ही उसका निर्णय कर सकूंगा। मानसी ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि राकेश इतनी शीघ्रता से उसकी सारी कठिनाइयों को दूर कर देगा। आज का सूरज उसके जीवन में एक नया प्रकाश लेकर आया था। वह समझ नहीं पा रही थी कि किन शब्दों में राकेश के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करे। उसकी आंखों में आंसू आ गए थे मानों ये आंसू ही उसके प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति कर रहे थे।

गौरव यह सब देख सुनकर बहुत सुन्दर किया, बहुत सुन्दर काम किया कह रहा था। यू आर ए ग्रेट मेन, देट इज व्हाई यू आर ए सक्सेसफुल परसन इन योर लाइफ। राकेश ने मानसी से कहा- मैं आज पचमढ़ी की हसीन वादियों में चिन्तन कर रहा था कि जीवन कैसा हो? मैं सोचता हूँ विसंगतियों एवं कुरीतियों का विध्वंस होकर व्यभिचार व अनीतियों की समाप्ति होना चाहिए हम अपने स्वविवेक एवं स्व चिन्तन से प्रतिदिन नूतन सृजन करें और

सभी के प्रति स्नेह रखते हुए उनसे अपने प्रति प्यार की कामना रखें। जीवन में कड़ी मेहनत और कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। यह सोच हमारे दिल और आत्मा में होना चाहिए। तुम प्रभु के प्रति विश्वास और समर्पण रखना तभी सदाचार, सद्भावना और सद्बुद्धि, चिन्तन और मनन से जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर सकोगी और सुख समृद्धि वैभव व मान-सम्मान तुम्हें प्राप्त होगा। परपीड़ा को दूर करने के लिये हमेशा दोनों हाथ खुले रखना ऐसी भावना अपने मन में रखोगी तभी खुशियों के नये संसार का आगमन होगा। विपरीत परिस्थितियों का निर्गमन होकर कुरीतियां पराजित होंगी। एक नये सूर्य का उदय होगा और तुम्हारी सभी अभिलाषाएं पूरी होंगी। समय कितना भी विपरीत हो कभी मत डरना। साहस और भाग्य पर विश्वास रखना धैर्य एवं साहस से सफलता की प्रतीक्षा करना। यही तुम्हारी सफलता का आधार बनेगा। कठोर श्रम दूर दृष्टि और पक्का इरादा कठिनाइयों को समाप्त करेगा यही जीवन का क्रम होता है और यही जीवन का आधार।

गौरव ने राकेश से पूछा कि तुम्हें मानसी ने नागपुर यात्रा के विषय में बताया या नहीं।

राकेश कुछ चौंका और कह उठा- नहीं तो। यह नागपुर का क्या मामला है?

मानसी भी चौंकी थी। उसने भी कहा- यह नागपुर यात्रा का क्या किस्सा है?

गौरव ने राकेश को संबोधित करते हुए कहा- मैं तो समझ रहा था कि पल्लवी ने मानसी को नागपुर यात्रा के विषय में बतलाया होगा और मानसी ने तुम्हें बतला दिया होगा।

मानसी ने कहा कि पल्लवी ने जब मुझे कुछ बताया ही नहीं तो फिर मैं इन्हें कैसे कुछ बता सकती हूँ। मुझे तो बस इतना ही पता है कि पल्लवी और आनन्द पिछले सप्ताह नागपुर गये थे।

यह सुनकर गौरव ने बताना प्रारम्भ किया- पिछले सप्ताह आनन्द एक ठेकेदार और मुझे अपने साथ नागपुर ले गया था। उसके साथ पल्लवी भी थी। हम लोग होटल तूली में ठहरे थे। शाम को जब शराब का दौर चल रहा था। आनन्द, ठेकेदार और पल्लवी दो-दो पैग चढ़ा चुके थे। तीनों को सुरुर चढ़ने लगा था। वह ठेकेदार जिसका नाम शायद उमेश था वह पल्लवी की ओर घूरता हुआ बोला- जीवन में वासना प्रेम बन सकती है प्रेम कभी वासना नहीं बन सकता। प्रेम आत्मा का लगाव व स्नेह है इसकी संतुष्टि केवल पत्नी से ही मिल सकती है। क्योंकि उसके साथ आत्मा और मन का मिलन होता है। वासना कुछ क्षण के लिये संतुष्टि देती है। यह भौतिक सुख बढ़ाती है और कामुकता के कारण सेक्स की प्यास और बढ़ा देती है। वह आनन्द से पूछता है कि तुम्हारा क्या खयाल है?

आनन्द कहता है- काम वासना नहीं है। कामुकता वासना हो सकती है। काम से ही दुनियां में जो कुछ दिख रहा है वह होता है। हमारा अस्तित्व भी तो इसी के कारण ही है। इसलिये काम के प्रति समर्पित रहो। इसी में जीवन का सुख है और यही जीवन का सत्य है। इतना कहते-कहते उमेश की नजर बचाकर आनन्द ने आंखों ही आंखों में पल्लवी को कुछ इशारा किया।

पल्लवी ने भी वार्तालाप में भाग लेते हुए कहा- काम और वासना के अतिरिक्त भी जीवन में बहुत कुछ है जो महत्वपूर्ण है। मेरी नजर में तो सृजन जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है।

सृजन ही जीवन है, जीवन है तभी सृजन है। अपनी भावनाओं और कल्पनाओं को वास्तविकता में परिवर्तित करने की कला का नाम ही सृजन है। सकारात्मक सोच हो तो सृजन वैचारिक क्रान्ति को जन्म देता है। आदमी तो एक दिन चला जाता है, उसका जीवन समाप्त हो जाता है, किन्तु उसका सृजन यहीं रहता है और उसकी कर्मठता की गाथा सुनाता है।

इतना कहकर वह कुछ ठहरी। उसकी बात सुनकर दोनों ही चुप हो गए थे। उसने फिर कहा- सुहाना मौसम है, महफिल सजी है, शमा आपके साथ है और आप लोग जाने कैसी बातें कर रहे हो। आप लोगों की बातों से मैं स्वयं को तन्हा सा महसूस कर रही हूँ। उस पर भी व्हिस्की का सुरुर तारी हो रहा था। वह बोली- जिसके सामने शराब और शबाब दोनों हों वह ऐसी बहकी-बहकी बातें करे यह मैंने पहली बार देखा है। ये शरीर भी भगवान ने बनाया है और इसमें हर अंग अपना महत्व रखता है।

आनन्द बोल उठता है कहीं तुम्हारा इशारा मेरी ओर तो नहीं है? वह बोली- आपको तो मैं अच्छी तरह जानती हूँ मैं तो इन जनाब की बात कर रही थी। उमेश को यह बात चुनौती सी लगी। वह बोला मैडम आपने अभी मुझे देखा ही कहाँ है?

समय मिला तो देख लूंगी। मैं आनन्द के साथ वालों को जानती हूँ। उसने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा- एक ये महाशय हैं जो केवल हार्न बजाते हैं। इन्हें गाड़ी स्टार्ट करना भी नहीं आता। मुझे बुरा तो लगा था लेकिन मैं चुप ही रहा।

उसी समय आनन्द ने उठकर पल्लवी से कहा - तुम उमेश का खयाल रखना। मुझे नींद आ रही है और वह अपने कमरे में चला गया। पल्लवी आनन्द का इशारा समझ चुकी थी। आनन्द

अपने धन्धे के लिये उमेश को सिद्ध करने की नीयत से आया था। वह चाहता था कि उमेश से उसका व्यापारिक हित सधता रहे। इसीलिये आनन्द, पल्लवी को उमेश के साथ छोड़कर वहां से चला गया था।

मुझे अधिक नशा नहीं हुआ था फिर भी मैं आनन्द के साथ ही अपने कमरे में चला गया था। लेकिन मैं गया नहीं था। मैं तो पल्लवी की सारी हरकतें देखना चाहता था इसलिये बाहर दरवाजे की आड़ से सब कुछ देखता रहा। हम लोगों के जाने के बाद पल्लवी ने एक-एक पैग और भरा। पैग भरते-भरते उसने अपना पल्लू नीचे ढलका दिया था। उमेश की नजरें उसके छलकते यौवन को देखकर देखती ही रह गईं थीं। उमेश ने अपना गिलास उठाया और अपने मुंह की ओर ले जाने लगा तो पल्लवी ने उसका हाथ पकड़ लिया। फिर बोली- साकी के हाथों से भी तो पीकर देखो उसका मजा और नशा ही कुछ और होता है।

उमेश ने अपने दूसरे हाथ से पल्लवी का वह हाथ थाम लिया जिसमें उसका गिलास था और उसे बढ़ाकर अपने होठों से लगा लिया। पल्लवी ने भी उमेश का गिलास वाला हाथ अपने होठों की ओर बढ़ा लिया। वह पैग दोनों ने एक दूसरे के हाथ से ही पिया। पल्लवी ने एक चिप्स का टुकड़ा उठाया और उसका किनारा अपने होठों में दबाकर उमेश की ओर अपना चेहरा बढ़ाया। उमेश ने अपने होंठ बढ़ाकर उस चिप्स को पकड़ने का प्रयास करते-करते अपने दोनों हाथ पल्लवी की पीठ पर रख दिये। चिप्स टूट गया। आधा पल्लवी के मुंह में और आधा उमेश के मुंह में था लेकिन उमेश ने उसे अपनी ओर खींच लिया था। पल्लवी ने भी अपनी बांहों में उमेश को भर लिया था। होंठों से होंठ चिपके थे और दोनों

एक दूसरे की बांहों में थे। कुछ देर एक दूसरे की बांहों में रहने के बाद ही दोनों उमेश के कमरे में चले गये और दरवाजा भीतर से बंद करके उनने लाइट ऑफ कर ली थी।

दूसरे दिन सुबह आनन्द ने होटल चैकआउट के लिये बिल मंगवा लिया था। बयालीस हजार का बिल बना था। आनन्द ने उमेश से कहा कि वह आधा बिल और पल्लवी का मेहनताना भी अदा करे। उमेश इस बात से नाराज हो गया। वह बोला- तुम मुझे इन्टरटेन करने के लिये यहां लाए थे और तुमने ही पल्लवी को मेरे पास भेजा था फिर भला मैं कोई भी पेमेन्ट क्यों करुंगा। यह तो तुम्हें ही करना है। दोनों में कुछ देर तक तकरार चलती रही। उसी समय कुछ पुलिस वाले वहां आये। मुझे लगा कि कहीं किसी ने इन लोगों की शिकायत तो नहीं करा दी है। इनने होटल के सारे रुम हमेशा की तरह मेरे ही नाम और मेरे ही आइडेण्टिटी पर बुक कराये थे। इसलिये मैंने इनसे कहा कि अपनी यह झंझट जल्दी खतम करो और यहां से चलो। आनन्द ने भी जब पुलिस को देखा तो उसे लगा कि कहीं उलटे बांस बरेली को न लद जाएं। उसने पूरा बिल अदा करने में ही अपनी भलाई समझी और बिल अदा कर दिया। वह तो मुझे बाद में पता चला कि पुलिस अपने किसी अफसर की सेवा के लिये आई थी।

वहां से निकलकर जब हम लोग एयरपोर्ट की ओर जा रहे थे तो उमेश ने आनन्द को बहुत बुरा-भला कहा। वह उससे बोला था कि तुम बहुत खूसट और चीमड़ किस्म के आदमी हो। तुम मुझे स्वयं इन्टरटेन करने के लिये लाये थे और फिर मुझी से पैसे मांगने लगे। ऐसा करते हुए तुम्हें शर्म भी नहीं आती। तुम औरों को बेवकूफ समझते हो। मैं क्या चीजों की कीमत भी नहीं जानता।

अब तुम मुझसे किसी काम की उम्मीद मत करना। मैं आगे से तुमसे मिलना भी नहीं चाहता। वह एयरपोर्ट तक इसी प्रकार लताड़ता रहा और आनन्द चुपचाप सुनता रहा। एयरपोर्ट पर उन लोगों ने उमेश को छोड़ा। उसे किसी काम से बम्बई जाना था। वह चला गया तो इनकी टैक्सी इनके गृहनगर की ओर बढ़ गई।

काफी देर तक टैक्सी में सन्नाटा रहा। उमेश की लताड़ के बाद गौरव चुप था। आनन्द अपने अपमान से तिलमिला रहा था। तभी पल्लवी ने इस शान्ति को अपनी तीखी आवाज से भंग किया। वह आनन्द पर बरस पड़ी थी। उसने आनन्द से कहा कि वह आनन्द के कहने से आनन्द की खुशी के लिये उस दो कौड़ी के ठेकेदार के पास गई थी। वरना इस प्रकार के लोगों को वह घास भी नहीं डालती। आपके सामने वह मुझे अपमानित कर रहा था और आप चुपचाप सुनते रहे। मेरी इच्छा उस कमीने को उतार कर चप्पल मारने की हो रही थी लेकिन आपका लिहाज करके मैं चुप रही। मुझे लग रहा था कि आप जरुर कोई माकूल जवाब उसे देंगे। आप दोनों पोंगे हो। आप पोंगा नम्बर एक हैं और यह पोंगा नम्बर दो।

तब मैंने उससे कहा- मैं क्या कर सकता था। तुम जैसे आई हो वैसे ही मैं भी आया था। जब इन्होंने कोई जवाब नहीं दिया तो मैं कैसे बोल सकता था। तुम्हें भी ये ही लाये थे और उसे भी इन्होंने ही बुलवाया था। यह तो तुम लोगों के बीच की बात थी इससे मेरा क्या लेना देना और मुझे तुमसे भी क्या लेना देना। तुम्हारा जो भी लेन-देन है वह तो इन्हीं लोगों से है फिर मुझे बीच में क्यों घसीट रही हो।

मेरी बात सुनकर पल्लवी एक मिनिट तो मौन रही परन्तु फिर बोली- मैं राकेश और मानसी को भी यह बात बतलाऊंगी। उन्हें भी समझ में आना चाहिए कि तुम लोगों का असली चेहरा क्या है।

उसकी बात सुनकर आनन्द के हाथ पैर फूल गए। वह कहने लगा- जो हो चुका उसे भूल जाओ। बात आगे बढ़ेगी तो मेरे साथ-साथ तुम लोगों की भी बदनामी होगी। बेहतर होगा कि इस बात को यहीं दफन कर दो। सबसे अधिक घाटा तो मेरा हुआ है। जिस काम के लिये आया था वह काम भी नहीं हुआ। तुम्हारा मजा भी मुझे नहीं मिला वह भी उमेश को मिला। मेरे तो पचास हजार भी डूब गये। ऊपर से पहले उसने जूते मारे अब तुम चप्पलें चटका रही हो। मुझे तो ऐसा लग रहा है कि कहीं मुझे हार्ट अटैक न हो जाए।

सुनकर पल्लवी कुछ सोच में पड़ गई थी। कुछ पल रूककर उसने कहा- तुम उद्योगपति के साथ-साथ नेता भी हो। तुम्हें कुछ नहीं होगा। तुम अभी नहीं मरने वाले। शायद तुमने नेता और यमराज का किस्सा नहीं सुना।

वक्त कभी स्थायी नहीं होता। यह बहुत चंचल होता है। एक दिन वक्त विधान सभा के आसपास घूम रहा था। तभी उसकी मुलाकात वहां यमदूत से हो गई। वक्त ने यमदूत से पूछा- आप यहां कैसे? यमदूत बोला- नेता जी का समय पूरा हो गया है और वह उन्हें यमलोक ले जाने के लिये आया है। अभी विधानसभा में नोकान्फिडेन्स मोशन पर बहस चल रही है। इसके समाप्त होते ही नेता जी को लेकर मुझे यमराज के पास जाना है। इसी बीच विधानसभा परिसर से आवाजें आने लगीं। यह देखने के लिये कि

माजरा क्या है? वक्त दर्शक दीर्घा में चला गया। वह वहां का माहौल देखकर आश्चर्य चकित रह गया। उसने देखा कि सारे जन प्रतिनिधि एक दूसरे को गालियां दे रहे और एक दूसरे के कपड़े फाड़ रहे है। यमदूत ऐसी अनुशासनहीनता एवं खादी के कपड़ो का अपमान देखकर नेता जी को बिना लिये ही यमलोक वापिस हो गया। यमलोक में यमराज को उस दूत ने पूरी घटना सुनाई और कहा कि हे यमराज यदि इस प्रकार की आत्माएं यहां आ जाएंगी तो हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों का क्या होगा। यमराज भी इस बात से सहमत हो गए और उन्होंने फरमान जारी कर दिया कि भारत के नेताओं को जब बहुत ही आवश्यक परिस्थितियां हो तभी यमलोक लाया जाए।

इसीलिये हमारे देश में आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़, आतंकवाद आदि में निरपराध नागरिक ही मारे जाते हैं पर कोई भी नेता नहीं मरता, क्योकि यमराज का यही आदेश है। इसलिये तुम अभी बहुत सालों तक जिन्दा रहोगे और डार्लिंग इसी प्रकार अपनी गतिविधियां चलाते रहोगे।

यह सुनकर आनन्द का मन थोड़ा ठीक हुआ। टैक्सी लगातार अपने गन्तव्य की ओर बढ़ी चली जा रही थी। उसने पल्लवी को अपनी ओर खांचते हुए कहा- मैं इसीलिये तो तुम पर फिदा हूँ क्यों कि कठिन समय में तुम ही मेरा सहारा हो। सच कहूं तो आज तुम कल रात से भी अधिक हसीन लग रही हो। तब पल्लवी ने कहा था कि आप मुझे बहुत देर बाद मिले। अगर आप उस समय मिले होते जब मैं एक बार डांसर थी तो मैं आज कहीं की कहीं होती। पेट की भूख मिटाने के लिये ही मैं बार डांसर बनी थी। जिस समय मैंने यह काम प्रारम्भ किया था उस समय मेरी

मजबूरी थी। लेकिन कुछ दिनों के बाद मैं उस काम में डूब गई। मुझे समझ में आ गया था कि यदि इस शरीर को बचाना और बनाना है तो कुछ न कुछ कमाना जरुरी है। कमाने के लिये भी इसी शरीर का उपयोग करना पड़ता है। शराफत से कमाउंगी तो इतना नहीं कमा पाउंगी जिससे पूरी जिन्दगी चल जाए। जब जीना ही है तो ठाठ से जियो। खुद भी मौज करो और दूसरों को भी मौज करने दो। जवानी तो एक दिन ढल ही जाना है। इसलिये मैंने खुलकर जीना सीख लिया। आप मिल गये होते तो अपने आप को आपको ही पूरी तरह समर्पित कर देती। मेरी एक बारबाला सहेली थी। बड़ी धार्मिक थी। उसके एक प्रेमी ने उसकी दिनचर्या पर एक बार लिखा था।

वह प्रतिदिन सुबह नहा-धोकर पूजन पाठ करती है और प्रतिदिन शाम को एक बार में जाकर जाम भर-भर कर मयकशों को पिलाती है। सुबह वह इतनी तल्लीनता से भजन गाती है कि लगता है जैसे कोई गोपी नाच रही हो। सुनने वाले प्रभु की भक्ति में लीन हो जाते हैं। शाम को वही जब बारबाला के रुप में नाचती है तो उसके अंग-अंग से जो मादकता छलकती थी। उसके नशे में लोग होशो-हवाश खो कर अपना सब कुछ उस पर न्यौछावर करने लगते थे। नारी के कितने रुप हैं। जब वह एक माँ या एक बहिन के रुप में होती है तो वह समाज का सबसे सम्माननीय अंग बन जाती है और जब वही नारी वासना की मूर्ति के रुप में सामने आती है तो समाज का हर वर्ग उसे कामुकता की नजर से देखता है। यह उसकी मजबूरी है कि उसे रोटी, कपड़ा और मकान के लिये अनेक रुप रखना पड़ते हैं। कभी वह मन्दिर में पवित्रता की मूर्ति बनती है तो कभी मदिरालय में वासना की मूर्ति।

पल्लवी बोली- बीती बातों को भूल जाएं। दोपहर का एक बज गया है। दिस इज द राइट टाइम फार बियर। आनन्द ने गौरव से कहा- जाओ बियर ले आओ! लेकिन गौरव अपनी जगह पर कसमसाया तो जरुर पर उठा नहीं। आनन्द समझ गया। उसने अपना पर्स निकाला और पैसे निकाल कर गौरव की ओर बढ़ाये। गौरव उतरा और जाकर छैः बोतल बियर की ले आया। बियर का दौर चल पड़ा। चार घूंट बियर हलक में जाते-जाते ही पल्लवी गुनगुनाने लगी-

कोई पीता है पीने के लिये
कोई पीता है जीने के लिये
जब पिलाती है साकी कोई
पीने का मजा कुछ और ही होता है
मदिरा पीकर जीवन हो जाता है कम
पर हम और अधिक पीते जाते हैं
पीकर बहकने वाले को
उठाकर फेक दिया जाता है
जो नहीं बहकता
वह नृत्य और संगीत की थाप पर
बारबाला का प्यार पाता है।
मदिरा होती है गरम
और जेब भी रहती है गरम
बोतल है चुम्बक सी
नोटों को खींच लेती है
पीने वाला अपने घर और परिवार को
भूल जाता है और

मदिरा में डूब कर ही
सारी खुशियां पाता है।
जब जेब होती है खाली
तो घर याद आता है
मदिरा की असली कीमत
तो अब वह चुकाता है।
जब घर वाले उसे छोड़
कहीं और चले जाते हैं
और वह उन्हें पाने की लालसा में
भटकता रह जाता है।

गौरव यह सुनकर बोल उठा- तुम तो बहुत अच्छी काव्य रचना भी कर लेती हो।

पल्लवी अपने दोनों हाथ उसके गले में डालकर बोली- जानी अभी तुमने देखा ही क्या है? तुम्हारे तो दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं। गौरव पर बियर का असर हो रहा था। उसका बहकना चालू हो गया।

यू डोन्ट नो. आई एम ए इन्टरनेशनल आर्टिस्ट. आई हैव विज़िटेड सेवेरल कन्ट्रीज़ फार माइ एग्जीवीशन्स. गॉड हैव गिविन मी ऑल दोज़ थिंग्स़. प्राइम मिनिस्टर हैड एवार्डेड मी फार माई ग्रेट पेन्टिंग्स. यू एण्ड योर दिस लवर कैन नॉट अण्डर स्टैंण्ड देम. इफ आई स्टे इन न्यू देलही, माय फ्रैन्डस विल श्योरली अरेन्ज ए सीट ऑफ पार्लियामेण्ट फार मी. आई कैन स्पैण्ट ए लॉट ऑफ मनी विदाउट एनी ट्रबल. माई सन इज सेटेल्ड इन यू एस ए एण्ड फिफ्टीन हण्ड्रेड एम्प्लाइज़ वर्क्स अण्डर हिम.

पल्लवी ने आनन्द की ओर देखा और पूछा- ये क्या कह रहे हैं? आनन्द बोला- इसे और बियर चाहिए है। वही मांग रहा है। पल्लवी ने एक बोतल खोलकर उसकी ओर बढ़ा दी। उसने आनन्द से पूछा- तुम कहते थे कि तुम्हें मुझसे प्यार है, परन्तु नागपुर में तुम्हारे व्यवहार ने बता दिया कि तुम भी मुझे अपना स्वार्थ सिद्ध करने का साधन मानते हो। आनन्द स्वार्थी तो था किन्तु एक भावुक व्यक्ति भी था। पल्लवी की बात उसे लग गई। उसे अपनी गलती का भी एहसास हुआ और स्वयं के व्यवहार पर शर्म भी आई। वह पल्लवी के सामने अपनी सफाई देने के स्वर में बोला- मैं अपने पारिवारिक और व्यक्तिगत जीवन में बिलकुल तन्हा हूँ। मेरा न तो कोई दोस्त है और न ही कोई हितैषी। मैं जो सपने देखता हूँ वे हमेशा सपने ही रहते हैं। वास्तविकता को मैं पहचानता नहीं, कल्पना लोक में ही जीवन काट रहा हूँ। मैं तुम्हारा दर्द समझता हूँ। लोग तुम्हारे शरीर और तुम्हारी आत्मा को इसलिये तो रौंद सके क्योंकि तुम्हारे पास धन नहीं था। नागपुर में मैंने यदि कुछ गलती की है तो उसका कारण भी तो धन ही है। मैं तुम्हें धन की ओर से इतना सुखी कर देना चाहता हूँ कि सारे सुख तुम्हारी झोली में आ जाएं। फिर कोई तुम्हें रौंद न सके।

तुम स्वयं जानती हो यहां किसको किससे कितनी प्रीति है। यह दुनियां धन के बल पर चलती है। जब आदमी के पास धन होता है तो उसके सारे सपने पूरे होते हैं। सब उसके अपने होते हैं। धनवान का सभी गुणगान करते हैं। इसके कारण वह भ्रम में पड़ जाता है और अपने आप को महान समझने लगता है। जिस दिन धन समाप्त हो जाता है उस दिन अपने तो क्या अपनी किस्मत

भी हमसे रुठ जाती है। जो हमेशा हमारे साथ रहते थे वे ही हमारा उपहास करने लगते हैं। उस समय कोई साथ नहीं देता, सभी छोड़कर दूर चले जाते हैं।

पल्लवी आनन्द से पूछती है कि यदि ऐसा है तो अभी पिछले सप्ताह तुम मानसी को लेकर कहाँ-कहाँ घूमते रहे। एक दिन नहीं दो-तीन दिन तक लगातार। फिर तुमने मानसी से यह भी तो कहा था कि तुम गधे थे जो उसे नहीं पहचान पाये। उसकी और उसकी सुन्दरता की कीमत नहीं समझ पाये। इस मामले में राकेश तुमसे अधिक समझदार निकला जो उसने उसे दस हजार रूपयों की मदद की। अगर वह राकेश को छोड़कर तुम्हें अपना ले और तुम्हारे साथ आ जाए तो तुम राकेश द्वारा जितना भी धन उसे दिया गया है उसे लौटाने के लिये तुम उसे उतना धन देने के लिये तैयार हो और भविष्य में भी उसे जो भी जरुरत होगी तुम वे सब पूरी करोगे और उसे कोई कमी नहीं होने दोगे। मेरी समझ में नहीं आता तुम किस तरह के आदमी हो? मुझसे और मानसी से तुम्हें राकेश ने ही तो मिलवाया था। मुझे यह भी पता चला है कि राकेश ने तुम्हारे व्यापार में तुम्हारा साथ निभाया और उसके कारण तुम्हें करोड़ों को फायदा भी हुआ था। जिस आदमी ने तुम्हारा हर कदम पर साथ निभाया तुम उसी की पीठ में खंजर घोंपने का काम कर रहे थे। इतना सब जानकर मैं यह कैसे यकीन कर लूं कि तुम मेरा सारा रस चूसकर मुझे चूसे हुए आम की तरह एक दिन नहीं फेक दोगे।

गौरव ने बताया कि उस समय उसने भी कहा था कि आनन्द को ऐसा नहीं करना चाहिए था। राकेश उसका सच्चा मित्र है। लेकिन यह एक धोखेबाजी है। यह सुनकर आनन्द गौरव पर

भड़क पड़ा था। बात बढ़ने से पहले पल्लवी बीच में बोल पड़ी- तुम मानसी को नहीं जानते। वह राकेश को सच्चे मन से प्यार करती है। वह उसे छोड़कर कभी भी आनन्द के साथ नहीं जा सकती। वह राकेश को कैसा चाहती है यह आनन्द नहीं समझता है।

इसी प्रकार की बातें करते हुए हम लोग नगर के करीब पहुंच चुके थे। रात प्रारम्भ हो चुकी थी। नगर के टिमटिमाती हुई रोशनी दूर से ही दिखने लगी थी। सभी दिन भर के सफर से थक चुके थे। पहले हम लोग पल्लवी के घर पहुँचे और उसे छोड़ा। फिर आनन्द मुझे मेरे घर छोड़कर अपने घर चला गया।

- - -

गौरव की जुबानी नागपुर की कहानी सुनकर मानसी और राकेश स्तब्ध रह गये। मानसी ने कहा कि मुझे इस बारे में इतनी जानकारी नहीं थी। मैं आनन्द और पल्लवी के चरित्र से आश्चर्यचकित हूँ।

राकेश बोला- इसमें आश्चर्य की क्या बात है। दोनों की दोस्ती एक समझौता है। दोनों ही अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति में लिप्त हैं। पचमढ़ी का मौसम और खराब होता जा रहा था। बरसात और तेज हो गई थी। अब वहां पर रूकने का कोई मतलब नहीं था। इसलिये वे पचमढ़ी छोड़कर ट्रेन से वापिस रवाना हो गए। रास्ते में मानसी ने राकेश को पचमढ़ी में आनन्द से हुई बातें और गौरव के उसे आनन्द के प्रति आकर्षित करने के लिये किये गये प्रयास के संबंध में भी बतलाया। राकेश ने सारी बातें गम्भीरता पूर्वक सुनी किन्तु कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रकार अनेक खट्टे-मीठे अनुभवों के साथ पचमढ़ी यात्रा का समापन हुआ।

- - -

पचमढ़ी से लौटकर आज तीन दिन बाद राकेश घर पर बिस्तर पर पड़ा था। उसकी पत्नी आज बहुत प्रसन्न थी और सो चुकी थी। राकेश की आंखों से नींद गायब थी। उसका मन अशान्त था। आनन्द उसका पुराना मित्र था। उसके दोहरे चरित्र के संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर उसे आश्चर्य हो रहा था। उसकी नजर में आनन्द अभी तक अत्यधिक भावुक, सीधा, सरल,ईमानदार और परोपकारी व्यक्ति था। उसने कुछ दिन पहले ही गौरव को बम्बई ले जाकर उसका एक मेजर आपरेशन करवाया था। उसकी पूरी सेवा भी स्वयं की थी और सारे खर्च भी वहन किये थे। उसका अपने मित्र के प्रति समर्पण एवं लगाव देखकर राकेश अभीभूत था। वह एक खानदानी धनाढ्य था जिसे धन की कोई कमी नहीं थी। कहीं-कहीं वह बहुत उदार हो जाता था तो कहीं-कहीं वह बहुत अधिक कंजूस भी हो जाता था। जैसे यदि वह चाहता तो मानसी की बेटियों आरती और भारती की पढ़ाई-लिखाई की पूरी व्यवस्था कर सकता था किन्तु उसने ऐसा नहीं किया। मानसी को लेकर उसने जो कुछ किया था वह चौंका देने वाला था। राकेश के कारण ही वह मानसी और पल्लवी के संपर्क में आनन्द आया था। राकेश ने ही उनकी मित्रता कराई थी। आनन्द पल्लवी की ओर पहले आकर्षित हुआ था। वह चाहता तो मानसी के प्रति सहृदयता दिखलाता और आज मानसी के दिल में भी उसके प्रति सम्मान का भाव होता। लेकिन उसने उसकी जरा सी मदद करने से भी मुंह मोड़ लिया था। तभी तो राकेश को उसकी सहायता करना पड़ी थी। अब वही आनन्द मानसी के लिये कुछ भी करने को तैयार था। यहां तक कि वह राकेश की और अपनी वर्षों पुरानी मित्रता को भूलकर उसके साथ कुटिलता पूर्ण व्यवहार कर रहा था।

गौरव भी राकेश का पुराना मित्र था। वह भी उसी के साथ आनन्द के संपर्क में आया था और उनके बीच भी मित्रता कायम हुई थी। वह दोनों के साथ अपने संबंध भली-भांति कायम रखे था। वह जिसके साथ होता था उसके ही मन की बात करने में निपुण था। वह मन का बुरा आदमी नहीं था। कभी भी किसी को कोई गलत सलाह नहीं देता था। उसमें केवल एक ही कमजोरी थी कि वह बहुत अधिक कंजूस था। चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए ऐसे ही लोगों के लिये कहा गया होगा। महुआ-मूसर की हांकने में वह बहुत प्रवीण था। सामने वाले को अपनी ओर आकर्षित करने में वह सिद्धहस्त था। एक बियर में वह आपा खो कर मन के सारे भेद उगल देता था। उसने मानसी से जो कुछ कहा-सुना या किया वह उसने आनन्द के कहने पर ही किया होगा। अपने मन से वह ऐसा कुछ कर ही नहीं सकता था।

पल्लवी का पिछला जीवन बहुत कठिनाइयों और अभावों में बीता था। स्वाभाविक है कि उसका बचपन और किशोरावस्था बहुत अधिक लालसाओं से भरी हुई रही होगी। ऐसे में उसे जो लोग मिले उन्होंने उसे जिस धारा में मोड़ा वह उसी धारा में बह गई क्योंकि उसे उसमें अपनी लालसाओं की पूर्ति का रास्ता दिख रहा था। वह उचित और अनुचित को नहीं समझ सकी और आज भी नहीं समझती है। इस स्थिति ने ही उसे वह रुप दिया है जो आज उसका है। आनन्द से उसका परिचय राकेश के कारण ही हुआ था। इस परिचय से उसका जीवन संवर सकता है। यह बात राकेश ने भी उसे समझाई थी कि आनन्द उसके जीवन में किसी देवदूत के समान आया है, इसे खोना मत।

पल्लवी के समान ही मानसी का भी बचपन और किशोरावस्था अभावों में बीती, किन्तु उसका स्वभाव पल्लवी से अलग रहा। उसने अपने जीवन को संवारने के लिये वैसे प्रयास स्वीकार नहीं किये जैसे पल्लवी ने कर लिये। वह अपने परिश्रम और पुरूषार्थ के माध्यम से जीवन को संवारना चाहती है। राकेश के माध्यम से भी उसने केवल साधन जुटाने का प्रयास किया जिससे वह अपने परिश्रम के दम पर आगे बढ़ सके और अपने परिवार को सम्हाल सके। वह अपनी पुत्रियों को अभावों में नहीं देखना चाहती और उनके जीवन के प्रति सजग है। उसकी सोच में पल्लवी से पूरी भिन्नता और परिपक्वता है।

राकेश अपने विषय में सोचता है तो पाता है कि उसके लिये तो आनन्द और गौरव की खुशियां ही महत्वपूर्ण थीं और आज भी हैं। मानसी और पल्लवी तो अनजाने ही उनके बीच आ गईं हैं। आनन्द की मनः स्थिति के कारण जब वह पल्लवी के करीब आ रहा था तो उसने इसका कोई विरोध सिर्फ यह सोचकर नहीं किया था क्योंकि इसमें उसे आनन्द के चेहरे पर संतोष और प्रसन्नता दिख रही थी। गौरव की भूमिका तो तटस्थ थी किन्तु मानसी के साथ तो वह केवल इस कारण से जुड़ गया क्यों कि वह एक सहृदय और सच्ची महिला थी। वह एक ऐसी मां थी जिसे अपने बच्चों का जीवन संवारना था। वह अभावों से संघर्ष कर रही थी। इसी लिये वह उसकी मदद को आगे आया था। अब आनन्द मानसी की ओर खिंच रहा है और मानसी उससे दूर रहना चाहती है। इस सारे मकड़जाल के विषय में सोचता-सोचता ही राकेश कब सो गया उसे पता ही नहीं चला।

- - -

समय तेजी से बीतता जा रहा था। राकेश जब सो कर उठा वह अपने आप को तरो-ताजा व प्रसन्नचित्त अनुभव कर रहा था। उसने अपने शयनकक्ष के परदे खोले तो सूर्योदय हो रहा था। सत्य का प्रकाश विचारों की किरणें बनकर चारों दिशाओं में फैल रहा था। वह प्रफुल्लित मन से चिन्तन कर रहा था। उसके मानस पटल पर पचमढ़ी की सभी घटनाएं एक-एक कर आ-जा रही थीं। सुख और सौहार्द्र का वातावरण उसे सृजन की दिशा में प्रेरित कर रहा था। आज की दिनचर्या का प्रारम्भ गम्भीरता से नये प्रयासों की समीक्षा कर रहा था। तमसो मा ज्योतिर्गमय के रुप में दिन का शुभारम्भ हो रहा था। वह मन हृदय व आत्मा में आगे आने वाले समय को देखने का प्रयास कर रहा था।

राकेश ने मानसी को वचन दिया था कि वह आरती को हीनताबोध से मुक्त करने के लिये प्रयास करेगा। उस दिशा में आगे बढ़कर उसने अपने मनोचिकित्सक मित्र के पास आरती को परीक्षण के लिये भिजवाया। वहां उसका पूरा परीक्षण करने के बाद चिकित्सक उसे कुछ सामान्य टानिक लिख देता है।

बाद में जब राकेश ने उससे संपर्क किया तो उसने बतलाया- आज समाज में लोग इतने भागमभाग में फंसे हुए हैं कि वे अपने बच्चों के लिये समय ही नहीं निकाल पाते। इससे बच्चों को माता-पिता का जो प्यार, जो संरक्षण और जो मार्गदर्शन मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता। वे अपने माता-पिता और घर के लोगों से उतना नहीं जुड़ पाते जितना उन्हें जुड़ना चाहिए। उनका जुड़ाव या तो अपने बाहरी मित्रों से होता है या फिर टी. वी., वीडियो गेम आदि से होता है। बाहरी मित्रों में भी उनके साथ अधिकांशतः वे ही मित्र जुड़ते हैं जो उनके ही समान परिवार से उपेक्षित होते हैं और

जो अपने रास्ते से भटककर चमक-दमक भरे रास्तों पर आगे बढ़ गये होते हैं। स्वाभाविक है कि ऐसे हमजोलियों का साथ उनकी भावनाओं को और भड़काता है।

जो बच्चे टी. वी. से अधिक जुड़े होते हैं उनमें भी विस्फोटक प्रवृत्तियों का जन्म होता है क्योंकि सामान्यतः वे उसमें शिक्षाप्रद या खेलकूद से संबंधित चेनलों को देखने के स्थान पर या तो सीरियल देख रहे होते हैं या फिर वे फिल्में देखते हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक व्यापारिक युग के चैनल जो सीरियल दिखाते हैं वे भावनाओं को भड़काने वाले होते हैं वरना उन्हें कौन देखेगा। जो फिल्म दिखलाई जाती हैं वे प्रायः हिन्सा और वासना पर आधारित होती हैं। इनमें हिंसा और वासना का वीभत्स रुप ही परोसा जाता है। परिणाम स्वरुप बच्चों में भी हिन्सात्मक और वासनात्मक विचारों, चेष्टाओं और आकांक्षाओं की जड़ें फैल जाती हैं जो आजीवन उनके साथ रहतीं हैं। जब इनकी पूर्ति नहीं होती तो हीनताबोध आता है। वे मानसिक बीमारियों का शिकार हो जाते हैं। आरती का प्रकरण भी कुछ ऐसा ही है। उसमें अनेक उच्च-वर्गीय कामनाएं जन्म ले चुकी हैं। इसका कारण उसका ऐसे स्कूल में पढ़ना जिसमें उसके परिवार की अपेक्षा बहुत उच्च वर्गीय परिवार के बच्चे पढ़ते हैं, प्रमुख है। इसके अतिरिक्त वह ऐसे क्षेत्र में रहती है जहां अधिकांश सम्पन्न वर्ग के लोग रहते हैं। उनके रहन-सहन और खान-पान में और आरती के परिवार के रहन-सहन और खान-पान में भी बहुत अन्तर है। इन्हीं सब बातों ने उसमें हीनता बोध भर दिया है। इसीलिये उसमें फिल्म इन्डस्ट्रीज के प्रति बहुत अधिक जुड़ाव पैदा हो गया है, क्योंकि उसे वहां अपनी सारी कामनाओं की पूर्ति नजर आती है। अभी उसकी उम्र ऐसी नहीं है

कि वह इस वास्तविकता को समझ सके। इसीलिये अभी तो आवश्यक है कि उसकी इन उच्च आकांक्षाओं की पूर्ति की जाए और फिर जब वह इस ओर से संतुष्ट हो जाए तो एवं उसमें कुछ परिपक्वता आ जाए तो उसे जीवन की वास्तविकताओं से धीरे-धीरे परिचित कराया जाए। उसे समाज में उच्च स्थान पाने के लिये आवश्यक श्रम और प्रयासों का ज्ञान कराया जाए। यह उपचार बड़े धैर्य और विवेक के साथ लम्बे समय तक करना होगा तभी वह सामान्य हो सकेगी।

वह उससे काफी देर तक वार्तालाप करने के बाद उसके हीनताबोध के तीन प्रमुख कारण राकेश को बतलाता है। पहला आरती ने कुछ माह पूर्व अपनी माँ को उसके पिता के द्वारा बेरहमी से पीटा जाते देखा था। उसके मन में बचाव करने की तीव्र अभिलाषा थी किन्तु वह मजबूर और असमर्थ थी। इसका प्रभाव उसके मानस पटल पर बहुत गहरा सदमे के रुप में पड़ा। दूसरा वह जिस विद्यालय में पढ़ने जाती थी। वहां पर दूसरे बच्चे अमीर घरों से थे जबकि उसके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। इसके कारण उसे हीनता का बोध होता था जिसका उसके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। तीसरा उसकी इच्छा भी अन्य बच्चों के समान अच्छे-अच्छे रेस्टारेण्ट, बड़े-बड़े शॉपिंग माल और बड़े-बड़े खर्चे करने का होता था क्यों कि उसके सहपाठी प्रायः इनकी चर्चा करते थे। किन्तु धन के अभाव के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ थी इसी कारण उसके मन में फिल्म उद्योग का भूत सवार हो गया था कि वह हीरोइन बनकर अपार धनराशि कमाएगी और अपने जीवन के सारे अभावों को दूर कर लेगी। समाज में

उसका मान-सम्मान होगा और बड़े-बड़े लोग उसके पीछे-पीछे घूमेंगे।

यह जानने के बाद राकेश आरती के पिता को अपने कार्यालय में बुलाता है उन्हें प्रेमपूर्वक समझाता है कि हिन्सा या मारपीट किसी समस्या का निदान नहीं हैं। यह और भी समस्याओं को बढ़ा देती है। हमें प्यार और समझदारी से बच्चों एवं परिवार के अन्य सदस्यों से व्यवहार करना चाहिए। यही पारिवारिक सुख, शान्ति एवं उन्नति का पर्याय बनता है। उन्होंने भी इसे स्वीकार किया और भविष्य में इस दिशा में सतर्क रहने का आश्वासन दिया।

इसके बाद राकेश उनके घर आने-जाने का क्रम बढ़ जाता है। वह जब भी उसके घर जाता है आरती से जरुर बात करता है। धीरे-धीरे उसके और आरती के बीच खुलकर बात होने लगती है। कई बार वह मानसी और आरती को अपने साथ घुमाने भी ले जाता है। कभी वह उन्हें किसी अच्छे रेटारेण्ट में ले जाकर खाना आदि खिलाता है तो कभी कपड़ों आदि के शो रुम में ले जाकर उन्हें कपड़े और अन्य वस्तुएं दिलवाता है। इस प्रक्रिया में उसके काफी पैसे खर्च होते हैं किन्तु इससे आरती में भी काफी गुणात्मक परिवर्तन आना प्रारम्भ हो जाता है।

राकेश को अपने पारिवारिक कारणों से बम्बई जाना था। वह इस अवसर का लाभ उठाने का प्रयास करता है। वह आरती और मानसी को भी अपने साथ बम्बई ले जाता है। राकेश की मित्रता राजश्री प्रोडक्शन के स्टाफ से बहुत पुरानी थी। वह आरती और मानसी को वहां फिल्म की शूटिंग दिखाने ले जाता है। वहां वह उनकी मुलाकात फिल्म के प्रोडक्शन मेनेजर से भी करवाता है।

वह आरती के सामने ही उससे आरती के मन की बात बतलाता है। वे आरती को समझाते हैं- बारह से अठारह साल तक की बालिकाओं को फिल्म इंडस्ट्रीज में काम मिलना कठिन होता है। बारह से कम उम्र की बच्चियों को बच्चों का रोल एवं अठारह से अधिक की बच्चियों को हीरोइन या साइड हीरोइन या अन्य कोई रोल मिल जाता है। इसलिये अभी तुम्हारी उम्र पढ़ाई की है, तुम मन लगाकर पढ़ाई करो, उसके बाद तुम मुझसे संपर्क करना मैं तुम्हारी मदद अवश्य करुंगा। अभी अपना समय बेकार ही नष्ट मत करो। इसका आरती पर बहुत प्रभाव पड़ा और उसके दिमाग से फिल्म का भूत लगभग उतर गया। बम्बई में राकेश उन्हें अच्छे रेस्टारेण्ट और होटलों में उन्हें ले जाता है। वह उन्हें अच्छी शॉपिंग भी करवाता है। इससे वे काफी प्रसन्न होते हैं क्योंकि उन्होंने तो कभी ऐसे स्थानों में जाने की कल्पना भी नहीं की थी।

बम्बई में उनके पास पर्याप्त समय था। एक दिन जब वे भोजन करने के बाद होटल में आकर बैठे थे और सोने की तैयारी कर रहे थे तभी मानसी ने राकेश से पूछा- आप जो कर रहे हैं इससे क्या इसके भविष्य में कोई अन्तर आने की संभावना है ? राकेश ने उसे समझाया- ईश्वर ने सभी को कोई न कोई प्रतिभा दी है और यह प्रतिभा परिचय की मोहताज नहीं होती। अनुकूल वातावरण मिलने पर वह स्वयं उभर कर सामने आती है। आवश्यकता होती है अनुकूल वातावरण की। किस्मत और परिस्थितियों के कारण उस प्रतिभा के सामने आने में देर हो सकती है। एक बात और है कि जहां प्रतिभा होती है वहां रचनात्मकता और सृजन होता है। प्रतिभा ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्राकृतिक सौन्दर्य है। उचित वातावरण मिलने पर यह खिल उठता

है और उसके अभाव में यह घुट-घुट कर दम तोड़ देता है। एक की प्रतिभा जब खिलती है तो वह दूसरों को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। इससे समाज में भी सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है। हमें केवल उचित वातावरण देना है।

आरती में जिस क्षेत्र में भी प्रतिभा होगी वह उभर कर सामने आएगी और वह उस दिशा में आगे बढ़ जाएगी। यही उसके जीवन की सही दिशा होगी।

जिस प्रकार हम सपने देखते हैं उसी प्रकार बच्चे भी सपने देखते हैं। उनका भी अपना सपनों का संसार होता है। उनके अपने सपने होते हैं। बचपन एक ऐसी अवस्था है जिसमें आंखों में सिर्फ और सिर्फ प्यार होता है। उनकी खुली आंखों में भी प्यार होता है और उनकी बन्द आंखों में भी प्यार होता है। उनके सपनों में परियों की कहानियां होती हैं। वे नानी की कहानियां सुनकर अपने आप में खो जाते हैं। हमें उनसे उनका बचपन नहीं छीनना चाहिए। हो यह रहा है कि हम अपने स्वार्थ के लिये और अपने परिश्रम से बचने के लिये उन्हें टी वी और फिल्मों में उलझा देते हैं। हमारे पास उन्हें सुनाने के लिये कहानियां ही नहीं हैं और कहानियां हैं तो उन्हें सुनाने का समय नहीं है। हम इस बात को भूल जाते हैं कि उनका यह बचपन फिर नहीं आएगा। हमें उन्हें उनके बचपन को पूरी तरह खुलकर जीने देना चाहिए। उनके सर्वांगीण विकास के लिये यह बहुत आवश्यक है।

- - -

बम्बई से वापिस आने पर राकेश आरती को अपने साथ-साथ रखने लगा। वह उसे अनेक स्थानों पर ले जाता। वह उसे अपने कार्यालय भी ले जाता है। उसे कभी-कभी अपनी व्यवसायिक

मीटिंगों में भी ले जाता है। अपने मित्रों के बीच भी ले जाता है। प्रायः प्रतिदिन शाम को वह जहां भी जाता था वहां आरती उसके साथ रहा करती थी। कभी-कभी मानसी भी उनके साथ हुआ करती थी। वह अपने स्कूल से आकर तैयार हो जाती थी और फिर राकेश उसे अपने साथ ले जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि उसके मन से हीनता बोध समाप्त होने लगा। वह पढ़ाई के साथ-साथ स्कूल के अन्य कार्यक्रमों में भी भाग लेने लगी। हर गतिविधि में उसे अच्छी सफलताएं मिलने लगीं। उसकी स्कूल में भी उसे महत्व मिलने लगा। राकेश के इन प्रयासों ने पतन के गर्त में डूब रही एक मासूम को प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ा दिया था।

स्वाभाविक रुप से इस प्रक्रिया में राकेश और मानसी के बीच भी संबंधों में आत्मीयता बढ़ रही थी। कभी-कभी आरती जब मानसी को साथ ले चलने की जिद करती थी तो राकेश को उसे भी अपने साथ ले जाना पड़ता था। ऐसे अवसरों पर मानसी उनके साथ जाने से बचने का प्रयास करती थी। राकेश को मानसी की परेशानियां भी दिख रही थीं। वह उसे भी आर्थिक मदद देने लगा। इस पूरी प्रक्रिया में राकेश के व्यक्तिगत खातों से अधिक पैसा निकलने लगा। उसके कार्यालय का हिसाब उसका पुत्र देखता था। उसकी नजर में भी यह बात आई कि पापा के खर्चे अचानक बढ़ गए हैं। एक ओर यह हो रहा था और दूसरी ओर समाज में भी चर्चाओं का बाजार निरन्तर चल रहा था। लोग उनके संबंधों को लेकर तरह-तरह की बातें करने लगे थे। धीरे-धीरे इसकी आग राकेश के परिवार तक भी पहुँचने लगी। राकेश भीतर ही भीतर सुलग रही इस आग से अनभिज्ञ था।

मानसी के प्रति राकेश के मन में बढ़ रही आत्मीयता के पीछे कुछ कारण थे। पहला तो यह कि मानसी ने यह जानते हुए भी कि राकेश एक सम्पन्न व्यक्ति है, कभी भी उससे अनुचित आर्थिक लाभ लेने का प्रयास नहीं किया था। दूसरा यह कि एक बार जब वे साथ-साथ थे तो राकेश की तबियत अचानक खराब हो गई थी। उसकी सांस थम गई थी। उस समय मानसी ने उसे कृत्रिम श्वांस देकर उसकी जीवन रक्षा की थी। तीसरा यह कि मानसी हमेशा राकेश के शेयर मार्केट और इस प्रकार के किसी प्रयास का जिसमें अचानक धन लाभ या हानि होती है उसका विरोध करती थी। चौथा यह कि वह एक समझदार महिला थी और राकेश को सदैव सकारात्मक सुझाव देती थी। राकेश में लिखने-पढ़ने के प्रति गम्भीर रूचि थी किन्तु व्यवसायिक व्यस्तता के कारण उसका यह क्षेत्र सूना पड़ा था। मानसी की प्रेरणा से उसकी लिखने और पढ़ने का क्रम प्रारम्भ हो गया था जिससे उसे एक मानसिक शान्ति और संतुष्टि मिलती थी। इन सब कारणों से वह मानसी को सम्मान की दृष्टि से देखता था और उनके बीच प्रगाढ़ मित्रता स्थापित होती जा रही थी।

राकेश और मानसी की इस निकटता को समाज समझने में असमर्थ था। वह भीतर की सच्चाई को नहीं जानता था। उसे तो केवल उनकी निकटता दिख रही थी। उसे इस निकटता का एक ही कारण समझ में आता था। लोगों को इसे अफसाना बनाकर चर्चा करने में मजा आता था। ये चर्चाएं धीरे-धीरे उसके परिवार तक भी पहुँचने लगीं। एक ओर बढ़ते हुए खर्च तो दूसरी ओर ये चर्चाएं, परिवार के सदस्यों को भी लगा कि राकेश कहीं भटक रहा है। वे भविष्य की किसी अनहोनी के प्रति आशंकित हो गये।

- - -

एक दिन राकेश के परिवार के सभी सदस्यों ने राकेश को घेर लिया। उन्होंने राकेश से जवाब-सवाल प्रारम्भ कर दिया। राकेश के लिये यह आक्रमण अप्रत्याशित था। उसने वस्तु स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया। पर घर का कोई भी सदस्य उसकी बात को समझने में असमर्थ रहा।

जब हम किसी विचार या भावना से संपृक्त होते हैं तो हमें उसके अतिरिक्त और कोई बात समझ में नहीं आती। यही स्थिति उसके परिवार के सदस्यों की थी। राकेश का प्रत्येक उत्तर अनेक नये प्रश्नों को जन्म दे रहा था। जिनका समाधान उसके पास नहीं था। स्थिति काफी गम्भीर हो गई और विवाद विस्फोटक हो गया। यद्यपि राकेश के मन में परिवार के किसी भी सदस्य के प्रति कोई दुराभाव नहीं था और न ही उनके प्रति उसकी आत्मीयता में कोई कमी थी। यहां तक कि उनके द्वारा किये जा रहे प्रश्नों और उनके बर्ताव का कारण समझ में आ जाने से वह क्षुब्ध और स्तब्ध तो था किन्तु उसके मन में उनके प्रति कोई भी विपरीत भाव नहीं था। उसकी परिवार के प्रति आत्मीयता यथावत थी और परिवार के लिये अपने कर्तव्यों के प्रति भी वह सचेत था किन्तु उस समय वह एक असहाय स्थिति में पहुँच गया था।

अपने परिवार में हुए इस विस्फोट से राकेश हत्प्रभ था। वह लगातार यह अनुभव कर रहा था कि उसने बड़ी गलती की है। उसे इस घटनाक्रम के संबंध में परिवार के अन्य सदस्यों से भी चर्चा करते रहना चाहिए थी। कम से कम अपनी पत्नी को तो इस विषय में लगातार बताना और परामर्श करना ही चाहिए था। वह जानता था कि उसकी पत्नी भी एक सहृदय महिला है। यदि वह

उससे इन सारी परिस्थितियों की चर्चा करता तो वह उसके लिये और भी मददगार ही सिद्ध होती। लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था ।

राकेश की सोच थी कि तुम क्या सोचते हो इसकी चिन्ता करो, यह मत सोचो कि दुनिया तुम्हारे विषय में क्या सोचती है। अपने मनन, चिन्तन व मन्थन से निर्णय लो। तुम्हें अपनी दिशा व रास्ता स्वयं खोजना है। अपने कर्म पर विश्वास रखो और धर्म पूर्वक किये गये कर्मों को आधार मानकर हमेशा सेवा, परहित और दूसरों की कठिनाइयों में काम आकर अपने को समर्पित करो। जीवन में विवेक को कभी नहीं खोना चाहिए। क्रोध व संताप गलत निर्णयों को जन्म देता है। विवेक खो देने से हम उचित और अनुचित का भेद नहीं कर पाते हैं। जीवन पथ हमेशा संकल्प पूर्ण कष्ट पूर्ण व संघर्ष से परिपूर्ण होता है। हम पथिक हैं और दिग्भ्रमित हो जाते हैं। जीवन में सही वक्त पर उचित मार्गदर्शन व सलाह यदि हमें प्राप्त नहीं होती तो हम भटकते रहते हैं। हमारे जीवन का ध्येय आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करना और अन्त में अनन्त में विलीन हो जाना होना चाहिए। यही शाश्वत सत्य है। आनन्द की परिभाषा सबकी अपनी अलग-अलग होती है।

आनन्द एक आध्यात्मिक पहेली है। हम सुख और दुख दोनों में ही इसकी अनुभूति कर सकते हैं। जो व्यक्ति कठिनाइयों और परेशानियों से घबराता है उसके लिये जीवन एक बोझ बन जाता है। वह निराशा के सागर में डूबता-उतराता हुआ, आनन्द के अभाव में जीवन व्यतीत करता है। जिसमें साहस, कर्मठता और सकारात्मक सोच होती है उसके लिये संघर्ष एक उत्साह पूर्ण क्रीड़ा है। इससे वह परेशानियों से जूझते हुए और कठिनाइयों को हल

करते हुए सफलता की सीढ़ी पर चढ़ता चला जाता है। उसे एक अलौकिक संतुष्टि का अनुभव, एक अलौकिक प्रसन्नता, स्वयं पर भरोसा और एक अलौकिक सौन्दर्य युक्त संसार का अनुभव होता है, यही आनन्द है। धन, संपदा और वैभव मानव को भौतिक सुख देते हैं। वह आनन्द की तलाश में भौतिक सुखों के पीछे ही जीवन भर भागता रहता है। ये भौतिक सुख बाह्य हैं। आनन्द आन्तरिक है। सुख की अनुभूति हमारे शरीर को होती है तथा आनन्द की अनुभूति हमारे हृदय व आत्मा को होती है। हमें आनन्द मिलता है हमारे विचारों से, हमारे सद्कर्मों से और हमारी कर्मठता से।

जीवन में वक्त की धार, समय की मार, सूर्य की ऊर्जा का प्रकाश, नदी में जल का बहाव आज भी वैसा का वैसा ही है जैसा सदियों पूर्व था। किन्तु समय के साथ-साथ समाज व मानव की सोच में परिवर्तन होता जाता है। यह कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक भी हो सकता है।

- - -

हम सभी आधुनिक काल में रह रहे हैं किन्तु हमारी सभ्यता, संस्कृति व संस्कारों पर आज भी हमारी प्राचीनता की छाप है। किसी भी पुरूष की किसी महिला से मित्रता सामान्य रुप में नहीं ली जाती है। उसमें क्यों ? किसलिये ? क्या कारण है ? आदि की खोज होती है। राकेश एक आधुनिक विचारों का व्यक्ति था। उसने इस दुनियां को बहुत पास से देखा था। उसे समाज की चिन्ता व परवाह नहीं थी। वह एक दृढ़ व्यक्तित्व का धनी था। उसकी सोच स्पष्ट थी कि आज के समाज में धन का प्रभाव इतना हो गया है कि समाज धन के पीछे-पीछे पागल है। यदि हमारे पास धन है तो हम समाज से नहीं समाज हमसे है।

उसने अपने जीवन में बहुत कटु अनुभव प्राप्त किये थे। जब उसका समय ठीक नहीं चल रहा था। वह कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था। पारिवारिक कलह के कारण वह मानसिक रुप से त्रस्त था तब समाज कहाँ था। उस समय सहयोग करना तो दूर सान्त्वना देने तक को कोई साथ में खड़ा नहीं हुआ था। इसके विपरीत लोग चर्चा भी करते थे तो मजा लेने के लिये करते थे। उस समय समाज के ये ही ठेकेदार अवहेलना और उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। फिर ऐसे समाज की परवाह क्यों की जाए। ऐसे समाज की किसी भी व्यक्ति या परिवार के लिये क्या उपादेयता है जो बुरे समय में उसके साथ खड़ा न हो और अच्छे समय में उसके निजी जीवन में जहर घोलने का प्रयास करे। इसीलिये राकेश समाज की परवाह नहीं करता था। लेकिन उन विपत्ति के दिनों में भी उसका परिवार उसके साथ था इसीलिये राकेश के जीवन में उसका परिवार सबसे अधिक महत्वपूर्ण था।

आज लोग यह चर्चा कर रहे हैं कि राकेश को एक महिला और उसकी बेटी के साथ लगातार देखा जाता है। ऐसा क्यों है ? क्या बात है ? और किस कारण से है ? लोग कहने लगे थे कि राकेश ने एक दूसरा परिवार भी बसा लिया है। परिवार के लोगों को भी यह चिन्ता थी कि राकेश के इस कार्य का समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? कल को जब बच्चे बड़े होंगे तो उनके जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ? आदि आदि....

इस विषम परिस्थिति से निपटने का रास्ता तो अब उसे अकेले ही खोजना पड़ेगा। एक लम्बे प्रयास के बाद वह एक सद्कार्य में सफल हुआ था। उसे बीच में अधूरा कैसे छोड़ देता। परिवार के सदस्य भी अपने स्थान पर गलत नहीं थे। उनकी भी

अवहेलना नहीं की जा सकती थी। इस द्वंद पर सोचते-सोचते वह एक निश्चय पर पहुँचा। उसने मानसी के दोनों बच्चों को होस्टल में भर्ती करवा दिया। इसके लिये उसे बच्चों को भी समझाना पड़ा और मानसी को भी सारी परिस्थिति से अवगत कराना पड़ा। उसे संतोष था कि उन सब ने उसे समझा और इसके लिये बिना किसी प्रतिरोध के मान गये। इसके बाद उसने मानसी से मिलना भी बन्द कर दिया। जब कभी बहुत आवश्यक होता तभी वह उससे मिलता। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे उसके परिवार की अशान्ति समाप्त हो गई।

- - -

आनन्द और पल्लवी लगभग प्रतिदिन शाम को 6 बजे मिला करते थे। आनन्द बहुत व्यस्त व्यक्ति था। वह समय का बहुत पाबन्द था। अपने सभी कार्य वह निश्चित समय पर किया करता था। उसके पास समय का बहुत अभाव होता था। वह शाम को एक-दो घण्टों के लिये ही पल्लवी से मिल सकता था। पल्लवी से मिलकर आनन्द की दिनचर्या बदल गई थी। उसे लगने लगा था कि पल्लवी के आने से उसके जीवन का अभाव दूर हो गया है। वे प्रायः किसी होटल या रेस्टारेण्ट में मिला करते थे। आनन्द जब शाम को पल्लवी से मिलता था तो वह अपनी स्क्रीन लगी हुई कार का प्रयोग करता था। सामान्यतः वह नंगे सिर रहा करता था किन्तु जब वह पल्लवी के साथ होता था तो उसके सिर पर कैप लगा रहता था। वह कैप इस प्रकार होता था कि उसके चेहरे का आंखों तक का हिस्सा लगभग ढका रहता था। पल्लवी को समझाने के लिये वह इसे अपनी देवानन्द के प्रति दीवानगी का कारण बताता था। जबकि वास्तव में वह अपने परिचितों की नजर

से बचने के लिये ऐसा करता था। यह और बात है कि इश्क, मुश्क और खांसी छुपाये नहीं छुपती। वह तो जग जाहिर हो ही जाती है।

सप्ताह में एक साप्ताहिक अवकाश का दिन ही हुआ करता था जब वे खुलकर लम्बे समय तक साथ रह पाते थे। उस दिन वह पल्लवी को प्रायः शहर से दूर कहीं एकान्त में ले जाया करता था। ऐसे ही एक दिन वह पल्लवी के साथ पास की नदी में नाव पर उसके साथ था। नाव चल रही थी और वह पल्लवी के साथ उसका हाथ अपने हाथ में लिये बैठा था।

महबूबा ! इतनी चुप क्यों हो ?

मैं कुछ सोच रही हूँ।

क्या सोच रही हो ?

यही कि जिन्दगी क्या चीज है ?

जिन्दगी इस नदी के समान है।

फिर यह नाव क्या है ?

नाव हमारा शरीर है।

फिर यह केवट क्या है ?

केवट है हमारी आत्मा। जैसे आत्मा हमारी काया को चलाती है वैसे ही यह केवट इस नाव को चला रहा है।

केवट के हाथ में पतवार क्या है ?

पतवार हैं हमारे कर्म। जैसे कर्म होंगे जीवन वैसा ही और उसी दिशा में चलता है। नदी का उद्‌गम है जैसे हमारा जन्म और इसका समुद्र में मिलना वैसा ही है जैसे हमारी मृत्यु।

फिर सुख, दुख और परेशानियां क्या हैं ?

जैसे जब यह नदी जंगलों और पहाड़ों से होकर बहती है तो इसकी चाल बदल जाती है। इसके चलने का तरीका बदल जाता है। वैसे

ही सुख, दुख और परेशानियां जीवन की चाल को बदल देते हैं। जो आगे बढ़ता जाता है वह इस नदी के समान अपने जीवन के लक्ष्य को पाने में सफल होता है।

आप जीवन की इतनी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं। आपको मेरे जीवन के विषय में क्या पता है ?

मुझे तुम्हारे जीवन के विषय में कुछ भी जानने की जरुरत नहीं है। मैं तो केवल यह जानता हूँ कि तुम मेरे साथ हो और तुम्हारा साथ पाकर मेरे जीवन के सारे अभाव दूर हो गये हैं। सच बता रहा हूँ कि जब मैं तुम्हारे साथ होता हूँ तभी मुझे लगता है कि मैं एक इन्सान हूँ वरना तो मेरा जीवन किसी मशीन की तरह ही चलता है। मेरे परिवार में भी सभी अपने-अपने काम में लगे रहते हैं। ईश्वर ने अकूत सम्पत्ति दी है। कहना तो नहीं चाहिए पर तुम्हें बताता हूँ कि राकेश के पूरे परिवार के पास जितनी सम्पत्ति है उससे अधिक सम्पत्ति मेरे परिवार के प्रत्येक सदस्य के पास है। लेकिन सभी अपने-अपने में ऐसे डूबे रहते हैं कि मुझे लगता है जैसे परिवार में मेरा कोई नहीं है।

यही तो मैं भी कहती हूँ कि मेरा और आपका कोई साथ नहीं है। आप के पास अकूत सम्पदा है और मेरे पास कुछ भी नहीं है।

तुम चिन्ता क्यों करती हो ? जब मैं तुम्हारे साथ हूँ तो मेरा धन, मेरा मन और मेरा तन सभी कुछ तो तुम्हारा है। तुम मेरे साथ रहो तो मैं तुम्हें भी वह सभी कुछ दूंगा जिसकी तुम्हें जरुरत है। मुझे बताओ तुम क्या चाहती हो।

मैं चाहती हूँ कि आप मेरे पिछले जीवन के विषय में सब कुछ जाने ताकि अगर कोई और आपको मेरे विषय में कुछ कहे तो आपको बुरा न लगे।

मुझे तुम्हारे अतीत में कोई रूचि नहीं है। मैं तो वर्तमान देख रहा हूँ और अपने व तुम्हारे भविष्य को संवारना चाहता हूँ। तुम मानसी को ही देखो ! राकेश के साथ वह कितनी प्रसन्न है। मैं तुम्हारे चेहरे पर भी वैसी ही प्रसन्नता देखना चाहता हूँ।
वह तो तब होगा जब आप मेरे अतीत को भी जाने।
आनन्द चुप रहता है।
कुछ रूककर पल्लवी उसे बताती है। बचपन में जब वह बिलकुल नादान थी तब उसका एक पड़ौसी उसके साथ अजीब-अजीब हरकतें करता था। वह उसके पूरे शरीर को छूता था और उनसे खेलता था। उसे यह कभी-कभी बुरा लगता था। लेकिन जब वह वापिस जाने लगती थी तो वह उसे कभी पैसे देता था, कभी खाने-पीने का सामान देता था और कभी-कभी कुछ अन्य सामान देता था। उस समय वह और उसका परिवार बहुत गरीबी में था। उसे उन चीजों की बहुत जरुरत हुआ करती थी। इसलिये वह बुरा लगता तो भी दुबारा उसके पास पहुँच जाया करती थी। धीरे-धीरे उसे वह सब अच्छा भी लगने लगा।

कुछ समय बाद ही जब उसके शरीर का विकास होने लगा और यह विकास दिखलाई देने लगा तो और भी लोग उसकी ओर आकर्षित होने लगे। इनमें उम्र दराज अधेड़ और बूढ़े भी थे और आस-पड़ौस के हम उम्र लड़के भी। वे जो चाहते थे उसमें उसे कुछ भी नया नहीं लगता था। लेकिन उसे यह समझ में आने लगा था कि इस तरीके से वह सब कुछ सरलता से प्राप्त किया जा सकता है जो और तरीकों से कड़ी मेहनत करके भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। वह लोगों को वह सुख देने लगी जो वे चाहते थे और उसे इसके बदले वह सब

मिलने लगा जो वह चाहती थी। जब यह बात उसकी मां को पता चली थी तो उसने उसे बहुत कुछ कहा-सुना था। लेकिन उस पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसके कारण बहुत कम उम्र में ही उसकी शादी करवा दी गई। माँ ने बड़ी मुश्किल और मेहनत के बाद उसकी शादी करवाई थी। जहां उसकी शादी हुई थी वह परिवार भी गरीब परिवार ही था। परिणाम यह हुआ कि वहां भी उसके पुरूष मित्र बन गए। यह बात उसके पति को मंजूर नहीं थी। इसलिये वह आये दिन मारपीट करने लगा। घर में कलह बढ़ी तो एक दिन वह वहां से अपनी मां के घर आ गई। यहां उसका संबंध एक अन्य पुरूष से हो गया। वह एक सम्पन्न किस्म का व्यक्ति था। पल्लवी ने भी उसे अपने जीवन साथी के रुप में स्वीकार कर लिया और बाहरी पुरूषों से किनारा कर लिया। वह उसके साथ एक अच्छी पत्नी के रुप में रहने लगी।

एक दिन उसका पति अपने एक मित्र को घर लाया और उसने बताया कि वह कहीं बाहर से आया है और एक दिन अपने घर पर रहेगा। लेकिन उसके साथ ही उसने यह भी बतलाया कि वह स्वयं एक आवश्यक कार्य से बाहर जा रहा है और कल वापिस आ जाएगा। उसके मना करने पर भी वह उसे समझा कर चला गया। उस रात को वह आदमी उसके पास आ गया। उसने उससे संबंध बनाया और बदले में उसे एक अच्छी राशि देकर चला गया। उसने यह भी कहा कि वह यह बात किसी और को नहीं बताएगा। यद्यपि उसे उस रात की घटना का अफसोस तो था किन्तु कुछ खास बुरा भी नहीं लगा था क्योंकि यह उसके लिये कोई नई बात नहीं थी। फिर कुछ दिन बाद एक दूसरे आदमी के साथ फिर वही स्थिति हुई, तब भी उसे समझ में नहीं आया। लेकिन जब यह

लगातार होने लगा तो उसकी समझ में आया कि उसका पति यह सब जानबूझ कर कर रहा है। वह उन लोगों से पैसे भी लिया करता था। कुछ दिन और यह क्रम चला तब उसकी समझ में आया कि उसका वह तथाकथित पति बड़ी चतुराई से उससे वेश्यावृत्ति करवा रहा था। तब वह उसे छोड़कर भाग आई। तब तक मेरा परिचय आपसे हो चुका था। आगे की कहानी तो आप जानते ही हैं।

आनन्द जो अब तक उसकी सारी बातें सुन रहा था बोला- जो बीत गया मैं उस पर बात नहीं करना चाहता। मुझे तो तुमसे मिलने के बाद ऐसा लगने लगा है जैसे मैं तुम्हारे बिना अकेला हूँ। कभी-कभी लगता है कि क्या सचमुच मैं अकेला हूँ। तुम नहीं रहती हो तब भी तुम्हारी याद मेरे साथ रहती है। तुम मेरे दिल में बस गई हो। मुझे हर पल अपने होने का अनुभव कराती हो। मैं चाहता हूँ कि तुम बीता हुआ सब कुछ भूल जाओ। अपने भविष्य की सोचो। मेरा साथ दो। मैं तुम्हारा जीवन संवार दूंगा।

जीवन में चिन्ताएं आती हैं। हमें उन पर विचार करना चाहिए। उससे हमें उनका कारण समझ में आता है। उससे उनसे मुक्त होने का रास्ता भी दिखलाई देता है। सही समय पर सही निर्णय लेकर आगे बढ़ने से चिन्ताएं समाप्त हो जाती हैं। यह क्रम जीवन भर चलता रहता है।

दो दिन बाद मैं तुम्हारी मां को और गौरव को लेकर चेन्नई जा रहा हूँ। माँ की आंख दिखाना है और आपरेशन भी करवाना है। वहीं गौरव की आंख की जांच भी करवाना है। मैंने मानसी और राकेश से भी चलने कहा था। राकेश कहीं और बिजी है वह नहीं जा सकता। वह नहीं जा रहा है इसलिये मानसी ने भी जाने से

मना कर दिया है। मैं चाहता हूँ कि तुम भी मेरे साथ चेन्नई चलो।

आनन्द की बात सुनकर पल्लवी अपनी सहमति दे दी। नियत समय पर आनन्द, पल्लवी की माँ, पल्लवी और गौरव हवाई जहाज से चेन्नई के लिये प्रस्थान करते हैं।

- - -

चेन्नई हवाई अड्डे पर जब जहाज उतरता है और सब लोग उससे बाहर आते हैं तो पल्लवी और उसकी माँ वहां का दृश्य, साज-सज्जा एवं वातावरण देखकर अभीभूत हो जाते हैं। उन्हें ऐसा लगता है जैसे वे किसी और ही दुनियां में आ गए हों। इसके पूर्व तक उन दोनों ने रेल के वातानुकूलित श्रेणी में भी यात्रा नहीं की थी। अचानक इस वैभव पूर्ण वातावरण को देखकर उनकी आंखें फटी की फटी रह जाती हैं। आनन्द का उन सब को हवाई जहाज में लाने का मकसद राकेश को नीचा दिखाना भी था। दूसरा वह अपने धन का प्रदर्शन करके पल्लवी और उसकी मां को प्रभावित भी करना चाहता था।

ट्रेवल ऐजेन्सी के द्वारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दो टैक्सी उपलब्ध करा दी गई थीं। एक टैक्सी पर पल्लवी की मां और गौरव शंकर नेत्रालय के कैम्पस में उनके गेस्ट हाउस में चले जाते हैं, दूसरी टैक्सी में आनन्द और पल्लवी ताज होटल निकल जाते हैं।

गौरव, आनन्द, पल्लवी और उनकी माता जी के स्वभाव में भिन्नता थी। परन्तु उनमें एक सामन्जस्य था। एक-दूसरे को समझने की परिपक्वता थी। आनन्द ने सभी चिकित्सकों से तीन दिन बाद का समय लिया था। ये तीन दिन वह पल्लवी के साथ

एकान्त में बिताकर उसके दिल में अपने लिये प्यार पैदा कर देना चाहता था। वह पल्लवी के साथ जीवन का मजा भी लेना चाहता था। वह यह भी जानना चाहता था कि पल्लवी का साथ उसके जीवन में कहां तक रहेगा। गौरव एक धार्मिक प्रवृत्ति का गम्भीर एवं प्रभु के प्रति आस्थावान व्यक्तित्व था। इसके विपरीत आनन्द धर्म और ईश्वर में कम आस्था रखता था। उसका विश्वास कर्म पर था। पल्लवी और उसकी माँ ने जीवन में इतने कष्ट भोगे थे और उनका जीवन इतनी यातनाओं से गुजरा था कि उन्होंने एक प्रकार से सोचना ही छोड़ दिया था। उनके लिये पैसा ही भगवान था।

वे चारों शाम के समय समुद्र के किनारे भ्रमण के लिये पहुँचते हैं और वहां का विहंगम दृश्य देखकर प्रफुल्लित हो जाते हैं। पल्लवी की मां और गौरव आगे-आगे चल रहे थे और आनन्द पल्लवी के साथ उनसे कुछ दूरी बनाकर चल रहा था। आनन्द पल्लवी का हाथ थामकर कहता है पल्लवी मैं और तुम समुद्र का यह किनारा लहरों में जैसे जीवन की कल्पना हो रही हो। हमारे मन में नये-नये विचार आ रहे हैं। प्रतिदिन क्षितिज में ऊगता हुआ सूर्य देखकर हम उसको नमस्कार करते हैं और कोलाहलपूर्ण जीवन की शुरूआत करते हैं।

जीवन का यह क्रम अनवरत चल रहा है और जब तक संसार है ऐसे ही चलता रहेगा। यह सुनकर पल्लवी उसके और भी निकट आ जाती है। फिर पूछती है तुम मुझसे क्या चाहते हो। आनन्द कहता है सागर की गहराई सी गम्भीरता तुम में हो आकाश के विस्तार के समान धैर्य और धरती से आसमान की ऊंचाई के समान हृदय में उदारता हो। ऐसे स्वभाव की अपेक्षा

तुमसे है। जीवन में कठोर श्रम, लगन में हो सच्चाई, कर्म से हो सृजन तभी यह सुख समृद्धि मान-सम्मान का आधार बनता है। यह जितना मजबूत होगा उतना ही जीवन का यथार्थ सुदृढ़ होकर सफल होगा। जीवन का सत्य है कि आत्म निर्भरता की राह पर बढ़ते चलो और अपनी मदद स्वयं करो। अपनी कल्पनाओं को हकीकत में बदलकर सृजन से आत्मनिर्भर बनो। जीवन में सफलता पाकर समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाओ। एक ओर आनन्द बड़ी-बड़ी बातें कर रहा था और दूसरी ओर उसके हाथ पल्लवी का कन्धा सहला रहे थे।

तुमने शहनाज हर्बल का ब्यूटीशियन का पूरा कोर्स किया है। तुम्हारे पास डिग्री भी है। तुमने इसके बाद यदि इस दिशा में काम किया होता तो आज तुम एक अच्छी ब्यूटीशियन के रुप में जानी जाती। आज कम से कम चालीस पचास हजार रूपया महिना तुम कमा रही होतीं। सरकार की स्वरोजगार योजना का लाभ लेकर आज तुम अपने पैरों पर खड़ी होतीं।

पल्लवी कहती है- यह सब वक्त-वक्त की बातें होती हैं यदि समय साथ देता है तभी जीवन में सब कुछ प्राप्त होता है अन्यथा पर उपदेश कुशल बहुतेरे तो बहुत होते हैं।

उनकी यह बात गौरव के कानों में भी पड़ जाती है। गौरव बीच में कहता है- वक्त हमारा मित्र है एवं जीवन में उमंग, तरंग व सृजन का जन्मदाता है। वक्त आशाओं का उद्गम है और कल्पनाओं को वास्तविकता में परिवर्तित करके सफलता की कहानी बनता है। सही समय पर हम दस्तक तो दें वक्त तो सभी को उपलब्ध है। वह अमीर और गरीब में भेदभाव भी नहीं करता, जिसने वक्त को पहचान लिया और सही समय पर अपना बना

लिया उसी ने सुख शान्ति वैभव को पा लिया। वक्त सबसे बड़ा दाता है हम इसे समझकर इसके प्रति कृतज्ञ होकर हृदय से समर्पित हो अभिमान से दूर रहकर विनम्रता पूर्वक वक्त हो नमन करें यही जीवन का प्रारम्भ व अन्त है। पल्लवी की मां इन बातों को सुनकर कहती है जिन्दगी में किसी की भी सभी हसरतें पूरी नहीं होतीं। उसूलों पर चलने वाले हसरतों से नहीं डरते। हम नहीं समझ पाते हैं कि हसरतें हमारे जीवन का दर्पण एवं भविष्य का आधार हैं। हसरतों को पूरा करने के लिये कठिन परिश्रम धर्म ज्ञान और भाग्य के साथ कर्म का समन्वय भी अपनी भूमिका निभाता है। तभी सफलता का आधार हमें प्राप्त होता है। हमको अपने स्वभाव में धर्मवीर, कर्मवीर और दानवीर के गुणों का समावेश करना होगा तभी हमारी हसरतें पूरी करने की दिशा में हम आगे बढ़ सकेंगे।

पल्लवी तिरछी निगाहों से आनन्द की ओर देखकर कहती है- धनवान तो धन में भी धन को ही सोचता है और उसे सहेजता है। उसे धन के संचय में ही धन का सार नजर आता है। धन से धन कमाना उसे आता है। वह अपनी परछाईं में भी धन का मुख देखता है। वह शान्ति तृप्ति और संतुष्टि से दूर रहता है क्योंकि वह धन में ही जीता है और एक दिन सब कुछ यहीं छोड़कर विदा हो जाता है।

उसकी बात सुनकर आनन्द का अहम आहत होता है और वह बौखला जाता है वह पल्लवी से कहता है कि तुम मानवीय संवेदनाओं के विषय में कुछ नहीं जानतीं, यह एक गूढ़ और गम्भीर विषय है। परोपकार सदैव कृतार्थ करता है उसे आप माने या न माने यह आप पर निर्भर करता है। वह हमेशा दाता से

अभिलाषा बढ़ाता है। वह अभिलाषा पूरी न हो तो अभिलाषी को निराशा होती है। वह सामने वाले की मजबूरी न समझ कर मदद नहीं करने के लिये बहाना बनाने वाली बात सोच लेता है। उसके मन में हमारे प्रति दुर्भावना आती है जो हमारी आत्मा को कष्ट देती है जीवन में सेवा से बड़ा धर्म और कर्म दूसरा नहीं है। यदि ऐसा संभव न हो तो कठोर वचन व घमण्ड पूर्ण वाणी का प्रयोग मत करो। यदि कुछ भी नहीं दे सकते तो प्रेम पूर्वक समझाओ और प्रेम की वाणी से सांत्वना अवश्य दो। यथा संभव उसकी पीड़ा में सहभागी बनकर मदद पहुंचाओ और उसके कष्ट को कम करने का प्रयास करो। इससे तुम्हें परम आनन्द की प्राप्ति होगी और परोपकार की राहों में चलने की शक्ति मिलेगी।

यह सब सुनने के बाद पल्लवी जीवन की राह के विषय में आनन्द एवं गौरव से पूछती है- आखिर हमारे जीवन की राह क्या, कैसी और क्यों होनी चाहिए। दोनों ही इस विषय पर अचकचा जाते हैं। वे पल्लवी से ही पूछते हैं तुम्हारा इस विषय में क्या विचार है।

पल्लवी कहती है- गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम पवित्र हो सकता है किन्तु मोक्ष दायक नहीं होता। संगम में डुबकी से भावना बदल सकती है किन्तु क्रिया-कर्म एवं धर्म के बिना मोक्ष असम्भव है। हमारी सांस्कृतिक मान्यता है कि हम जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल प्राप्त होगा। हम सत्यमेव जयते, मनसा वाचा कर्मणा अपने जीवन में अपनाएंगे तो सुख, सम्पदा और स्नेह का होगा संगम। सूर्य जो हमें ऊर्जा देता है प्रकाश दिखलाता है रास्ता, सुहावनी सन्ध्या देती है शान्ति और निशा देती है विश्राम। चांदनी से मिलती है तृप्ति की अनुभूति और हम पर बरसेगी परमात्मा

की असीम कृपा। हमारे जीवन में हो समर्पण कर्म में सेवा की भावना और धर्म में परोपकार के प्रति श्रृद्धा। धर्म पालन में हो ईमानदारी और सच्चाई, हृदय में हो आत्मीयता और वाणी में हो मधुरता ईश्वर हमारे साथ रहेगा और यह धरती स्वर्ग बन जाएगी।

पल्लवी की ये बातें सुनकर आनन्द व गौरव हत्प्रभ रह जाते हैं। उन्हें समझ में नहीं आता कि वे क्या उत्तर दें। पल्लवी मुस्कराती है और कहती है कि मैंने अब अपने आप को तुम्हारे प्रति समर्पित कर दिया है। मेरे जीवन में पुराने एक दो मित्रों के अलावा अब कोई नहीं आएगा। परन्तु मुझे हमेशा एक चिन्ता सताती है कि अभी तो तुम मुझे प्रतिमाह खर्चे की जितनी रकम देते हो उससे मेरा खर्च चल जाता है किन्तु आज समाज में रहने के लिये अनेक वस्तुएं जैसे फ्रिज, टीवी आदि रोजमर्रा की आवश्यकता बन गए हैं। यदि ये सामान्य मानी जाने वाली वस्तुएं भी किसी परिवार में न हों तो उसे एक बहुत ही हीन स्थिति का माना जाता है। फिर आज तो तुम हो किन्तु कल यदि तुम मेरा हाथ छोड़ दोगे तो मैं और मेरा परिवार तो कहीं का नहीं रह जाएगा।

यह बात सुनकर आनन्द कहता है, आशा से भरा जीवन सुख है निराशा के निवारण का प्रयास ही जीवन संघर्ष है। जो इसमें सफल है वही सुखी और सम्पन्न है। असफलता है दुख और निराशा में है जीवन का अन्त। यही है जीवन का नियम यही है जीवन का क्रम। मेरी महबूबा ! तुम चिन्तित मत हो। मैं तुम्हारे लिये सब कुछ व्यवस्था कर दूंगा। मेरे न रहने पर भी तुम्हारा जीवन सुखी व समृद्ध रहेगा।

- - -

आनन्द एक बहुत होशियार और समझदार व्यक्तित्व का धनी था। वह नगर छोड़ने के पहले पल्लवी की सहपाठी एवं उसके साथ रहने वाली कुछ लड़कियों से मित्रता कर चुका था। उनके माध्यम से वह पल्लवी की एक-एक गतिविधि की जानकारी प्राप्त करता रहता था। उसे पता चल गया था कि पल्लवी कुछ दूसरे लोगों से भी मिलती है किन्तु यह बात वह हमेशा उससे छुपाती है। आनन्द इस बात को अभी उतनी गम्भीरता से नहीं लेता था किन्तु इतनी मदद करने के बाद एवं इतने आश्वासन देने के पश्चात उसने पल्लवी से इस विषय पर बात करने का मन ही मन निश्चय किया। उसने पल्लवी से पूछा- यह क्या माजरा है ? वे कौन हैं ? तुम्हारा और उनका क्या संबंध है ? पल्लवी ने बिना किसी घबराहट के कहा कि आगे आने वाले समय में ये सब बातें तुम्हें स्वयं पता लग जाएंगी। आनन्द को पल्लवी के इस उत्तर से संतोष नहीं होता।

वहां से वे लोग होटल वापिस आ जाते हैं। होटल में कमरे में व्हिस्की का दौर चालू हो जाता है। गौरव के लिये बियर बुलवाई जाती है। इसी बीच बातचीत में आनन्द, पल्लवी को आश्वासन देता है कि वह उसके लिये एक मकान खरीद देगा। वह उससे कहता है कि मकान की तलाश प्रारम्भ कर दो। वह उसे यह भी आश्वासन देता है कि उसके नाम से वह बीस लाख की एफ डी करा देगा। जिसका ब्याज उसे नियमित रुप से मिला करेगा। इसके अलावा फ्रिज, टीवी, स्कूटी आदि जो तुम्हें चाहिए वह भी मैं दिलवा दूंगा। यह सुनकर पल्लवी मन ही मन बहुत प्रसन्न हो जाती है। वह आनन्द का हाथ जोर से पकड़ लेती है। आनन्द

कहता है इसे पकड़ा है तो छोड़ना मत। पल्लवी कहती है मैं जिसे पकड़ती हूँ उसे छोड़ती नहीं हूँ। उसकी बात सुनकर आनन्द के चेहरे पर एक भेद भरी मुस्कराहट आ जाती है। वह गहरी नजरों से पल्लवी की ओर देखता है। पल्लवी भी उसकी ओर देखते हुए मुस्कराने लगती है।

बियर पीने के बाद गौरव डिस्को जाने की इच्छा व्यक्त करता है। वहां से वे सभी लोग डिस्को के लिये निकलते हैं। पल्लवी की माँ डिस्को जाने से मना कर देती है, वे उसे रास्ते में उसके होटल में उतार देते हैं। तीनों डिस्को पहुँचते हैं तो वहां फिर ड्रिंक्स मंगवा लिये जाते हैं। यहां गौरव एक बियर और पीता है। बियर पीने के बाद गौरव फ्लोर पर डांस करने चला जाता है। बियर के नशे में वह डांस करते हुए बार-बार डांस करती हुई लड़कियों से टकराता है। एक बार तो गजब ही हो जाता है गौरव अचानक लड़खड़ाता है और संभलने के लिये सामने की एक लड़की को पकड़ने का प्रयास करता है। लड़की तो पकड़ में नहीं आती उसके कपड़े उसके हाथ आते हैं। गौरव गिर पड़ता है और उसके साथ ही उस लड़की के कपड़े फटकर उसके हाथ में रह जाते हैं। लड़की के ऊपर के कपड़े अलग हो जाते हैं। वह अपने सीने को हाथ से छुपाते हुए चीखती है। लोगों का ध्यान उस ओर चला जाता है। गौरव को नीचे पड़ा हुआ और लड़की को अपने आप को छुपाते देख कर हंगामा मच जाता है। यह देखकर आनन्द और पल्लवी गौरव के पास पहुँचकर उसे उठाते हैं। आनन्द अपना कोट उतार कर लड़की को ढांक देता है। फिर उससे क्षमा मांगता है। लड़खड़ाते हुए गौरव को लेकर वे डिस्को के बाहर आ जाते हैं।

दूसरे दिन सुबह गौरव पल्लवी की मां को साथ लेकर ताज होटल पहुँचता है। वहां की साज-सज्जा एवं पांच सितारा होटल की भव्यता देखकर मानसी की माँ भौंचक्की रह जाती है। गौरव उनको बताता है कि यह तो कुछ भी नहीं है वह दुनियां की बड़ी से बड़ी होटल में अपने बेटों के साथ रूका है। यह तो उन होटलों के आगे एक साधारण होटल है। वो साथ में यह कहना नहीं भूलता कि उसके बेटों ने उसे विदेशों में भ्रमण कराने में लाखों रूपये खर्च किये। मेरी धन की सम्पन्नता देखकर तो राकेश भी मुझसे मन ही मन जलता है। यह और बात है कि वह कुछ कहता नहीं है। वह उसे यह भी बतलाता है कि तुम्हारी लड़की के तो भाग्य खुल गये हैं जो उसे आनन्द जैसा धनवान, जिन्दादिल और परोपकारी इन्सान पसन्द करता है। मैंने ही राकेश से कहकर पल्लवी को आनन्द से मिलवाया था। इनकी दोस्ती करवाने के लिये मुझे कितना प्रयास करना पड़ा यह मैं ही जानता हूँ।

राकेश तो जानबूझकर यहां नहीं आया क्योंकि यहां आता तो उसकी हीनता सामने आ जाती। लेकिन तुम्हारी बेटी मानसी बेवकूफ है जो इस यात्रा में नहीं आयी। उसे तो आनन्द से अपने संबंध अच्छे रखना चाहिए थे। पल्लवी की मां ने इन सब बातों का कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु मन ही मन वह पल्लवी और आनन्द की मित्रता से बहुत प्रसन्न थी। बात करते-करते ही आनन्द का कमरा आ गया। उन्होंने कालबैल बजाई। आनन्द तैयार बैठा था। उसने माता जी को नमस्कार किया उन्हें अपना रुम दिखाया और बताया कि इसका किराया बीस हजार रूपया प्रतिदिन है। पल्लवी अभी नहा रही है, हम लोग नाश्ते के लिये चलते हैं, वह वहां आ जाएगी। वे तीनों नाश्ते के लिये डाइनिंग हाल में आ गये।

पल्लवी जब वहां आयी तो उसकी साड़ी देखकर उसकी मां ने उससे पूछा कि इतनी सुन्दर साड़ी उसे कहां से मिली ? पल्लवी ने बताया कि आनन्द ने इसी होटल से यह साड़ी पच्चीस हजार रूपयों में खरीदकर दी है। इन्होंने तुम्हारे लिये भी एक साड़ी पसन्द की है।

नाश्ते के दौरान वे दिन भर का कार्यक्रम बनाते रहे। जिसमें मुख्य रुप से शॉपिंग माल, रेस्टारेण्ट और दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करने की ही योजना थी। शाम को वे महाबलीपुरम जाने का प्रोग्राम बनाते हैं। रात के डिनर के लिये वे वहां के ताज होटल में टेबल बुक करा देते हैं। नाश्ते के बाद वे चेन्नई भ्रमण के लिये निकलते हैं। पल्लवी के लिये उस दिन आनन्द लगभग डेढ़ लाख की शॉपिंग कराता है। पल्लवी की मां और गौरव के लिये भी आनन्द काफी मंहगे सामान खरीदता है। गौरव दिन भर आनन्द की प्रशंसा के पुल बांधता रहता है। आनन्द अपने आप को बहुत गौरवान्वित अनुभव करता है। वह पल्लवी और उसकी मां से यह भी कहता है कि यदि मानसी भी होती तो और भी अच्छा रहता। आनन्द मानसी के लिये भी एक साड़ी खरीदता है। यह सब देखकर गौरव व माता जी ऐसी अनुभव कर रहे थे जैसे वे स्वप्न लोक में आ गए हों। इसी प्रकार रात्रि भोजन के बाद वे अपने-अपने होटल आ गयें।

तीसरे दिन सुबह सबसे पहले माता जी को शंकर नेत्रालय में डाक्टर चेकअप करते हैं और उनके मोतियाबिन्द का आपरेशन करने के लिये उन्हें भरती कर लेते हैं। आनन्द अच्छे से अच्छा कान्टेक्ट लेन्स लगाने का आर्डर दे देता है। इसके बाद गौरव का चेकअप होता है। गौरव अपनी आदत के अनुसार डॉक्टर से कहता

है- आई एम ए इन्टरनेशनल आर्टिस्ट। आई विल मेक ए पेन्टिंग फार यु एण्ड विल प्रेजेन्ट यू। आई हैव मेड सेवेरल पेन्टिंग्स फार सेवेरल मिनिस्टरस। आई हैव गाट सो मैनी एवार्डस। फारेनर्स नो द वैल्यू ऑफ माइ पेन्टिंग्स। डाक्टर उसे नम्रता पूर्वक चुप रहने का निर्देश देता है। वह पूरी तरह निरीक्षण करने के बाद आनन्द को अपने केबिन में बुलाता है। उसे बताता है कि इस व्यक्ति ने अपनी लापरवाही से अपनी एक आंख गंवा दी है। अब दुनियां में इसका कोई इलाज नहीं है। इसकी यह स्थिति आने में छः से सात साल का समय लगता है। अब आप इनकी दूसरी आंख की चिन्ता कीजिए ताकि उसका समय पर आपरेशन हो जाए। इसके बाद पल्लवी को दूसरी अस्पताल में चैकअप के लिये ले जाता है। वहां डाक्टर उसे चौबीस घण्टे के चेकअप के लिये भरती कर लेता है। वहां की स्त्री रोग विभाग की चिकित्सक आनन्द को केबिन में ले जाकर कहती है कि मुझे शक है कि इसे कोई न कोई गम्भीर बीमारी हो गई है। मैं शाम तक आपको इसकी खबर दूंगी।

शाम को जब आनन्द पल्लवी की रिपोर्ट पता करने पहुँचता है तो यह जानकर कि उसे सिफलिस है उसके हाथों के तोते उड़ जाते हैं। वह वास्तव में भीतर ही भीतर घबरा जाता है। वह पल्लवी का उपचार तो तत्काल करवाता ही है एक दूसरे अस्पताल में जाकर अपना भी चेकअप करवाता है। उसे बड़ी राहत मिलती है जब उसे पता लगता है कि उसे कोई मर्ज नहीं है।

आनन्द आकर गौरव को उसकी वास्तविक स्थिति बतला देता है कि उसकी एक आंख हमेशा के लिये अपनी रोशनी खो चुकी है और उसका कोई उपचार नहीं है। आनन्द वहां से फोन पर उसके लड़कों को भी बतला देता है। वे यही कहते हैं कि सब पापा

की कंजूसी का परिणाम है। ये हमेशा चाहते हैं कि इन्हें सब कुछ प्राप्त हो पर इनका एक पैसा भी खर्च न हो किन्तु आज के समय में ऐसा संभव ही कहां है। ये केवल मुफ्त के जुगाड़ में रहते हैं जिसका यह परिणाम हम सब के सामने है। बतलाइये हम लोग क्या कर सकते हैं। यदि हम हिन्दुस्तान आ भी जाएं तो अब क्या हो सकता है। इनके इलाज में जो भी खर्च हुआ हो आप हमें बतला दीजिये हम यहां से वह आपको भेज देंगे।

यह सुनकर आनन्द उन्हें मना कर देता है। वह कहता है कि गौरव मेरा सबसे अभिन्न मित्र है। मुझे तो अफसोस इस बात का है कि अगर मुझे पहले पता लग जाता तो मैं पहले ही इसका इलाज करवा देता। यह पिछले दस साल से तो मेरे बहुत की करीब है पर इसने कभी भी अपनी इस परेशानी के विषय में नहीं बताया।

दो दिन बाद ही पल्लवी की मां को अस्पताल से छुट्टी मिल जाती है। गौरव के रूकने का भी कोई औचित्य नहीं रह गया था। अभी पल्लवी को एक सप्ताह तक अस्पताल में ही रहना था। इसलिये आनन्द गौरव और पल्लवी की मां को वहां से वापिस घर भेज देता है। वह स्वयं वहीं रूक जाता है ताकि पल्लवी का उपचार पूरा हो जाए। आनन्द प्रतिदिन रात में ग्यारह बजे पल्लवी के पास आकर उसे चूम कर गॉड ब्लैस यू कहकर गुड नाइट करके जाता है।

एक सप्ताह में पल्लवी ठीक हो जाती है। आनन्द डॉक्टर से बात करता है डॉक्टर उसे बतलाता है कि अब वह पूरी तरह से सामान्य है। डाक्टर समझता था कि आनन्द पल्लवी का पति है इसलिये वह यह भी बतलाता है कि अब वह कामक्रीड़ा सुरक्षित

रुप से कर सकती है। किन्तु अभी कुछ समय तक कण्डोम का प्रयोग करना हितकर रहेगा। वह उसे लेकर होटल आ जाता है। इतने लम्बे समय में साथ-साथ रहने और पास-पास रहने के कारण आनन्द उससे मिलन के लिये बहुत व्याकुल था। वह उसे बतलाता है कि अभी दो दिन और चेन्नई में ही रहना पड़ेगा और डाक्टर को प्रतिदिन रिपोर्ट देना पड़ेगी।

उस समय रात के ग्यारह बजे थे जब आनन्द पल्लवी के पास उसके बिस्तर पर आ गया। उसने पल्लवी को बांहों में भरकर चूम लिया। धीरे-धीरे बात आगे बढ़ती गई। वह रात भर उसके बिस्तर पर उसके साथ ही रहा। सुबह पांच बजे जैसे ही उसकी नींद खुली वह भालू के समान पल्लवी के जिस्म को मसलने लगा। पल्लवी घबराकर उठ बैठी। वह उस पर झुंझलाई फिर बाथरुम चली गई। उनका यह हनीमून दो दिन तक चला। उसके बाद वे वापिस अपने गृहनगर आ गए।

- - -

घर आने के लगभग एक माह बाद राकेश को मानसी का फोन आया कि पल्लवी और आनन्द आपसे मिलना चाहते हैं। किन्हीं गम्भीर विषयों पर आपसे सलाह लेना चाहते हैं। राकेश ने उन्हें तत्काल ही अपने पास बुला लिया। सामान्य औपचारिकताओं के बाद उसने आने का प्रयोजन पूछा। पल्लवी ने कहा- आप और दीदी ने मुझे इनसे मिलवाया था। मैं इनकी आदतों और इनकी हरकतों से बहुत परेशान हूँ। ये मेरे खिलाफ जासूसी करवाते हैं। होस्टल की सभी लड़कियों में मिठाई-फल वगैरह बांटकर उनसे मेरे विषय में पूछताछ करते रहते हैं। इन्होंने मेरी रुम पार्टनर को

बाजार ले जाकर उसे कपड़े, परफ्यूम और अन्य सामान सिर्फ इसलिये दिलवाया ताकि वह मुझ पर नजर रखे और इन्हें जानकारी देती रहे। ऐसा ये क्यों कर रहे हैं। इससे मेरी इज्जत पर धब्बा लगता है। आनन्द कहता है मैं ऐसा कर रहा हूँ तो क्या गलत कर रहा हूँ। जब मैं तुम्हारे ऊपर प्रतिमाह ढेर सा रूपया खर्च कर रहा हूँ तो तुम्हारे विषय में सब कुछ जानने का अधिकार भी मुझे है।

पल्लवी बताती है कि ये प्रतिदिन रात में ग्यारह बजे फोन लगाकर मुझे फोन पर किस करते हैं। यह बात मेरी होस्टल की सभी लड़कियों को पता हो गई है। वे रात को ग्यारह बजे से पहले ही मेरे कमरे में आ जाती हैं। फिर मेरे मोबाइल का स्पीकर ऑन कर देती हैं। वे मुझसे कहती हैं कि बुढ़उ का फोन आने वाला है। इनका मजाक उड़ाती हैं और कहती हैं हम में कोई दम नहीं पर हम किसी से कम नहीं। आप ही बतलाइये ऐसी स्थिति में मैं उन्हें क्या उत्तर दूं।

पल्लवी इसके आगे कहती है कि इनके जैसा शक्की और पल-पल में रंग बदलने वाला मैंने पहले कभी नहीं देखा। इन्होंने मानसी पर आरोप लगाया है कि जो गहने इन्होंने मुझे दिये थे वे मानसी ले गई है। जबकि वे सारे गहने ये मेरे पास ही हैं। देख लीजिये। कोई कम तो नहीं है ? वह आगे कहती है कि इन्होंने जितने भी वादे मुझसे किये थे, एक भी पूरे नहीं किये। इन्होंने मकान दिलवाने का वादा किया था वह नहीं दिलवाया। इन्होंने बीस लाख की एफडी कराने का वादा किया था वह भी नहीं करवाई। गहने भी ये अपने लॉकर में रखते हैं सिर्फ मुझे पहनने के लिये देते हैं और फिर वापिस ले लेते हैं। आनन्द बोला- मैं बीस

लाख की एफडी इसके और गौरव के ज्वाइन्ट नाम पर खुलवाने को तैयार हूँ। उसका ब्याज प्रतिमाह इन्हें मिलता रहेगा। गौरव के मृत्यु के बाद वह अपने आप इसके नाम पर हो जाएगी।

इतना सुनते ही गौरव जो वहां बैठा था। वह बिचक गया। वह बोला- मैं इन लड़कियों के चक्कर में नहीं पड़ता। बीस लाख के चक्कर में किसी दिन मेरी जान ही चली जाएगी। तुम तो मुझे मरवाने का इन्तजाम कर रहे हो। इतना कहकर वह उन लोगों के बीच से उठकर चल देता है। वह किसी के रोकने पर भी नहीं रूकता।

आनन्द मानसी से उस पर लगाये झूठे आरोप के लिये माफी मांगता है। वह आगे कहता है जैसी तुम राकेश के लिये समर्पित हो वैसी पल्लवी मेरे लिये समर्पित नहीं है। यह मुझे प्यार भी नहीं करती और सहयोग भी नहीं देती। इस पर पल्लवी कहती है मैं और कैसे प्यार करुं और क्या सहयोग करुं। पता नहीं इनकी क्या अपेक्षाएं हैं। ये दिन में पच्चीस-तीस बार मुझे फोन लगाते हैं और चाहते हैं कि हर बार फोन मैं ही उठाऊं। मैं क्या दिन भर एक ही जगह बैठी रहूंगी। क्या कहीं आउंगी-जाउंगी नहीं। मैंने मकान भी देख लिया था अब ये कहते हैं कि मकान दो मंजिल का लो। एक मंजिल का पैसा मैं दे दूंगा और दूसरी मंजिल का पैसा राकेश दे देगा। इससे एक मंजिल पर तुम रहोगी और दूसरी मंजिल पर मानसी रहने लगेगी।

इस पर मानसी बोल पड़ी- वाह! वह! क्या बात है। ऐसी कोई बात हमारे बीच नहीं है। राकेश कोई मकान नहीं खरीदेगा। उसका स्वयं का फ्लैट है। वह दूसरा मकान क्यों खरीदेगा। तुम्हें जरुरत है तो तुम अपनी व्यवस्था स्वयं करो। जहां तक फिक्स डिपॉजिट

और बाकी चीजों की बात है, अगर आनन्द विश्वास नहीं करता है तो पल्लवी तुम्हें उसका विश्वास जीतना होगा। जहां तक ज्वाइन्ट एकाउण्ट की बात है तो वह पोंगा नम्बर दो तो भाग ही गया।

आनन्द बार-बार राकेश से कहता है कि देखो मैं इसे कितनी चीजें दे रहा हूँ फिर भी यह संतुष्ट नहीं है। इस मामले में तुम भाग्यवान हो जो तुम्हें मानसी जैसी मिली है। पल्लवी दूसरों के साथ भी घूमती है। क्या यह उचित है।

आपने तीस हजार रूपये महिना देने का वादा किया था लेकिन आप सिर्फ पन्द्रह हजार ही दे रहे हो। इस पर आनन्द भड़क जाता है और कहता है- मेरी महबूबा! मेरा विश्वास तो जीत फिर देख मैं तेरे लिये क्या-क्या नहीं करता हूँ।

आनन्द ने मुझे आश्वस्त किया था कि ये कोई अच्छा वकील करवा देंगे जिससे मेरा डायवर्स का केस जल्दी साल्व हो जाएगा। लेकिन आज तक इन्होंने इस दिशा में कुछ नहीं किया।

आनन्द कहता है कि हाँ! यह बात मैंने नहीं की। मेरी समझ में नहीं आता कि डायवर्स की तुम्हें क्या जल्दी है। कौन सी कमी है या कौन सा काम है जो डायवर्स के बिना अटका हुआ है। मैंने किसी वकील से इसलिये भी बात नहीं की क्योंकि मैं डरता हूँ, कहीं तुम उड़न परी बनकर उड़ न जाओ।

पल्लवी इस पर भड़क जाती है और अपनी बहिन से कहती है कि दीदी जरा इनकी बातें तो सुनो! ऐसे में किसको इनसे प्यार होगा। तुम्हीं समझाओ। उनकी तकरार बिना किसी निष्कर्ष पर पहुंचे चलती रहती है। इसी बीच राकेश बोदका की बाटल निकाल लाता है। सबके लिये एक-एक पैग बनाता है और कहता है कि आपसी झगड़ा खतम करो और बोदका इन्ज्वाय करो।

बोदका के असर से पल्लवी के चेहरे पर सुरुर आ जाता है। राकेश आनन्द को कुछ इशारा करता है। आनन्द पल्लवी को लेकर अंदर चला जाता है। थोड़ी देर बाद राकेश जब कमरे का दरवाजा खोलता है तो दोनों कपड़े पहन रहे होते हैं। उसके बाद सभी एक-एक पैग और लगाते हैं। फिर पल्लवी और आनन्द वहां से चले जाते हैं। उनके जाने के बाद मानसी राकेश पर भड़क उठती है कि आपने उन दोनों को अपना कमरा उपयोग के लिये क्यों दिया। वह बताती है कि तुम्हारी अनुपस्थिति में आनन्द तुम्हारे खिलाफ क्या-क्या कहता है। वह यह भी बताती है कि आनन्द के घर वालों ने गौरव का उसके घर आना-जाना बन्द कर दिया है। बात समाप्त हो जाती है और राकेश भी अपने घर निकल जाता है।

- - -

दूसरे दिन राकेश मानसी और गौरव को एक रेस्टारेण्ट में बुलाता है। राकेश पूछता है- कल अपनी जो चर्चा हुई उस पर तुम लोगों का क्या सोचना है?

मैं तो इसलिये उठकर चला गया था कि मैं आनन्द के इन चक्करों में नहीं फंसना चाहता, गौरव ने कहा। इनकी पत्नी और बच्चों ने मुझसे साफ-साफ कहा था कि मैं इनके घर न आऊं। ये मेरे कारण ही बिगड़े हैं। उन्होंने तो मेरे ऊपर यह आरोप भी लगा दिया कि मैं इनके लिये लड़कियों का बन्दोबस्त करता हूँ। इसीलिये मैं आनन्द के किसी भी काम में शामिल नहीं होना चाहता। आनन्द मेरे और पल्लवी के ज्वाइन्ट एकाउण्ट में पैसा रखना चाहता है। वह पैसा मेरे मरने के बाद ही पल्लवी को मिलेगा। पैसों को पाने के लिये पल्लवी मेरी हत्या भी तो करवा सकती है। मैं इनके इस झंझट में अपनी जान जोखिम में क्यों

डालूं। आनन्द का तो स्वभाव ही है कि वह हमेशा दूसरों के कंधों पर रख कर बंदूक चलाता है।

राकेश ने मानसी की ओर देखा तो वह कहने लगी- आनन्द को शर्म नहीं आयी जो उसने मेरे ऊपर चोरी का इल्जाम लगा दिया। अंत में तो वे सारी वस्तुएं पल्लवी के पास ही प्राप्त हुईं। इतना बड़ा आरोप लगाने के बाद माफी मांगने से क्या मेरा जो अपमान उसने किया है वह समाप्त हो जाएगा। वह होगा पैसे वाला इससे मुझे क्या लेना देना। कहते-कहते मानसी तमतमा गई।

इसीलिये तो मैंने बात को बढ़ता देख कर बोदका ला कर दी थी ताकि बात आगे न बढ़े। यह जो हो गया सो हो गया अब आगे क्या करना है।

आप एक बात गांठ में बांध लीजिये। भविष्य में अपने फ्लैट आदि का प्रयोग इन्हें किसी भी हालत में मत करने दीजियेगा। आनन्द आपके विषय में पीठ पीछे आपको भी मक्कार आदि कहता है। वैसे तो मुझे आप लोगों के व्यक्तिगत संबंधों के विषय में नहीं बोलना चाहिए किन्तु मेरी राय में तो आपको भी आनन्द से दूर ही रहना चाहिए।

पल्लवी है तो मेरी बहिन लेकिन वह भी कम शातिर नहीं है। उसे किसी से भी प्यार नहीं है। वह केवल एक चीज से प्यार करती है और वह है पैसा। वह पैसे की खातिर ही अपने छोटे-छोटे बच्चों को भूखा छोड़कर आ गई। जिसके मन में अपने बच्चों के प्रति भी मोह-माया न हो वह किसी और की क्या होगी। मैं अपने घर में इतने अत्याचारों के बाद भी केवल अपने बच्चों के कारण ही तो रह रहीं हूँ। मेरे विचार से तो पल्लवी और आनन्द के झगड़ों से हम अपने को दूर ही रखें तो अच्छा है।

राकेश और गौरव दोनों ने ही मानसी की इस बात पर सहमति में सिर हिलाया। मानसी की साफ-साफ बातें सुनकर राकेश के मन में उसके प्रति जो अपनत्व था वह और भी बढ़ गया।

राकेश उठकर रेस्टरुम की ओर जाता है लेकिन कुछ कदम बाद ही वह लड़खड़ाकर गिर पड़ता है। गौरव और मानसी झपट कर उसकी ओर जाते हैं। वह चेतना शून्य हो चुका था। गौरव यह देखता है तो उसके हाथ पांव फूल जाते हैं। रेस्टारेण्ट का मेनेजर एम्बुलेन्स बुलाने के लिये फोन करने लगता है। गौरव यह देखता है तो और भी घबरा जाता है। वह सोचता है कि यदि यह बात सामने आती है और मानसी के साथ राकेश को लेकर वह अस्पताल जाएगा तो उसकी पोल खुल जाएगी और बदनामी होगी। यह सोचकर वह वहां से धीरे से भाग जाता है।

मानसी भी राकेश की हालत देख कर घबरा जाती है। वह राकेश की छाती मलने लगती है। उसके मुंह से मुंह लगाकर उसे सांस देने का प्रयास करती है। उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारती है। वहां उपस्थित लोग भी उसकी मदद करते हैं। राकेश की चेतना वापिस आने लगती है। कुछ ही देर में वह सचेत हो जाता है। तब तक एम्बुलेन्स भी आ जाती है। राकेश उसे वापिस भेज देता है। वह बताता है कि अब वह अपने को स्वस्थ्य अनुभव कर रहा है। धीरे-धीरे वातावरण सामान्य हो जाता है। मेनेजर मानसी की ओर इशारा करके राकेश को बताता है कि इनके कारण ही आप स्वस्थ्य हो गये। मानसी रोकने का प्रयास करती है लेकिन वह बतला ही देता है कि कैसे मानसी ने उसकी मूर्छा से उसे सचेत किया है। राकेश मानसी की ओर देखता है तो वह नजरें

झुका लेती है। राकेश कहता है कि आज जो तुमने किया है उसको मैं कभी नहीं भुला पाउंगा। आज तुमने मुझे जीवन दान दिया है। तभी उसे गौरव का ध्यान आता है वह उसके विषय में पूछता है तो मानसी कोई उत्तर नहीं दे पाती। वह मानसी से कहता है कि मैं तुम्हारा आभारी नहीं हूँ बल्कि जीवन भर तुम्हारा ऋणी रहूंगा।

मानसी कहती है-आप ठीक हो गए यही मेरे लिये बहुत है वरना आज मेरे मुंह पर कालिख पुत जाती। चलिये अब घर चलते हैं। वहां से वे घर की ओर चल देते हैं। घर पर मानसी राकेश को बैठाकर काफी बनाकर लाती है। दोनों काफी पी रहे थे तभी मानसी कहती है-

पल्लवी की जो भी बातें हैं, जो भी सामान, मकान, जेवर या अन्य बातें वे सब आनन्द और उसके बीच की निजी बातें हैं। इसके पहले तक न तो आनन्द ने अपने से कोई बात की थी और न ही पल्लवी ने आनन्द के किसी वादे के विषय में अपने को बताया था। दोनों ही अपने आप में काफी चतुर हैं। पल्लवी को जब वादा खिलाफी का अंदेशा हुआ तो वह ये सब बातें अपने बीच में लेकर आई है ताकि आनन्द के ऊपर दबाव बन सके। मैं पल्लवी के स्वभाव से परिचित हूँ। जिस दिन ये सारे वादे आनन्द पूरे कर देगा वह उसे छोड़कर चली जाएगी। आज यदि आप या मैं इस विषय में कुछ भी कहते हैं तो कल अपनी स्थिति बेगानी शादी में अब्दुल्ला दीवाना जैसी हो जाएगी। इन दोनों से अपने संबंध तो खराब होंगे ही साथ में अपने को भी बुरा लगेगा कि हमने अनावश्यक रुप से इनके बीच में दखल दिया। देखा जाए तो कायदे की बात तो यह है कि मित्र होने के नाते आप को आनन्द को यह सब समझा देना चाहिए। लेकिन मैं जानती हूँ कि अभी

उनकी आंख पर पल्लवी की चाहत का पर्दा पड़ा है। आप समझाएंगे भी तो उनकी समझ में नहीं आएगा और आपकी स्थिति और खराब हो जाएगी।

मैं गौरव को ये सारी बातें समझा दूंगा। उसके माध्यम से आनन्द तक सारी सच्चाई पहुँच जाएगी फिर वह जैसा चाहे वैसा करे। तब तक काफी समाप्त हो चुकी थी। राकेश वहां से अपने घर को निकल गया।

- - -

गौरव आनन्द को फोन करके सारी घटना बताता है और कहता है कि मुझे लगता है कि राकेश की मृत्यु हो चुकी है। स्थिति ऐसी थी कि मैं अपने को इसमें नहीं उलझा सकता था इसलिये वहां से चला आया हूँ। कहीं कोई पुलिस केस न बन जाए। अगर ऐसा होता है तो तुम्हें मुझको इस मामले से बचाना होगा।

आनन्द उसे समझाता है कि तुमने अच्छा किया जो वहां से चले आए। अब आगे देखेंगे क्या होता है। मैं मामले को जानने का प्रयास करता हूँ फिर तुम्हें बताउंगा। अभी तो पल्लवी को बता दूं।

गौरव से बात समाप्त होने पर वह राकेश को फोन लगाता है। राकेश फोन उठाता है और कहता है हलो!

आप कौन बोल रहे हैं ?

राकेश के यह कहने पर कि मैं राकेश बोल रहा हूँ आनन्द कुछ चौंकता है किन्तु अपनी भावनाओं को छुपाकर बोला-

मैं आनन्द बोल रहा हूँ। तुम्हें क्या हो गया था भाई! अचानक कैसे तबियत बिगड़ गई।

पता नहीं यार! अचानक ही चक्कर सा आया और उसके बाद कुछ भी होश नहीं रहा। पर तुम्हें कैसे पता चला।

गौरव का फोन आया था उसने ही बतलाया।

अरे हाँ! उस समय वह भी तो हमारे साथ था। फिर पता नहीं कहाँ भाग खड़ा हुआ ?

यार वह भागा नहीं था। वह तो तुम्हारे लिये डॉक्टर को लेने गया था। लेकिन जब तक वह डॉक्टर को लेकर पहुँचा तुम वहाँ से जा चुके थे। अब क्या हाल है।

अब तो बिल्कुल ठीक हूँ।

चलो यह जानकर खुशी हुई। थोड़ी सावधानी रखो और ठीक तरह से स्वास्थ परीक्षण करवा लो।

राकेश से बात पूरी होते ही आनन्द गौरव को फोन लगाता है। गौरव के फोन उठाते ही वह उस पर बरस पड़ता है। वह उसे बताता है कि उसने अभी-अभी राकेश से बात की है और वह बिल्कुल ठीक-ठाक है। वह उसे यह भी ताकीद करता है कि ऐसा अब वह किसी और से न कहे। वह उससे यह भी पूछता है कि क्या उसने किसी और से भी ऐसा कहा है।

नहीं मैंने केवल तुम्हें ही यह बतलाया था।

तब ठीक है। मैंने राकेश से कहा है कि तुम वहां से डाक्टर को लेने चले गये थे और जब तुम लौटकर आये तो वे लोग वहां से जा चुके थे। वह यह भी बतलाता है कि ऐसा उसने केवल इसलिये कहा ताकि राकेश से उसके संबंध न बिगड़ें। गौरव उसके प्रति भारी कृतज्ञता व्यक्त करता है और कहता है कि उसने बहुत अच्छा किया जो बात को संभाल लिया।

गौरव राकेश को फोन करता है। वह उसका हालचाल पूछता है। जब राकेश उसके चले जाने की बात कहता है तो वह उसे वही सब बता देता है जो आनन्द ने कहा था। राकेश भी उसकी बात सुनकर चुप रह जाता है। फिर राकेश गौरव को उसके आने के बाद की पूरी कहानी बताता है। वह यह भी बताता है कि वहां से आने के बाद उसकी और मानसी की क्या बातचीत हुई थी। वह गौरव को सब कुछ बताकर समझाता है कि आनन्द हमारा मित्र है और वह चाहता है कि उसके साथ धोखा न हो इसलिये गौरव आनन्द को इस सारी स्थिति से अवगत करा दे।

गौरव कहता है कि राकेश स्वयं उसे यह सब क्यों नहीं बताता?

मेरी बात वह नहीं मानेगा। उसे मेरी बात का विश्वास ही नहीं होगा। किन्तु फिर भी वह चाहता है कि आनन्द को वस्तु स्थिति का ज्ञान हो जाए।

उस रात को गौरव आनन्द से मिलता है। वे दोनों एक रेस्तरां में जाकर डिनर लेते हैं। इसके लिये गौरव ने ही कहा था इसलिये इस बात से आनन्द आश्चर्य में था। गौरव कभी इस प्रकार की फरमाइश नहीं करता था। डिनर के दौरान जब गौरव और आनन्द की बातचीत होती है तो गौरव उसे वह सब कुछ बताता है जो राकेश ने उससे कहा था।

गौरव की बातें सुनकर आनन्द कुछ भी नहीं कहता लेकिन उसका चेहरा बतलाता है कि वह किसी गहरे सोच में पड़ा था। गौरव उससे पूछता है तो वह उसे टाल जाता है।

रोज की तरह आनन्द रात को ग्यारह बजे जब पल्लवी को फोन लगाता है तो सिर्फ चुम्बन लेकर गुड नाइट नहीं कहता है

वरन उससे बात करता है। वह उससे कहता है कि राकेश और मानसी तुम्हारे और मेरे बीच में फूट डालना चाहते हैं। मैं उन्हें ऐसा नहीं करने दूंगा। वे अगर हमारे संबंधों से जलते हैं तो जलें।

कल मैं तुम्हारे साथ बाजार चलूंगा। मैंने तुमसे जो सामान दिलाने का वादा किया है वह मैं तुम्हें कल ही देना चाहता हूँ। उनके बीच दूसरे दिन मिलने का कार्यक्रम तय हो जाता है।

दूसरे दिन आनन्द पल्लवी को लेकर बाजार जाता है। वह उसे वॉशिंग मशीन, रेफरीजेरेटर, स्कूटी, टीवी सहित लगभग डेढ़ लाख का सामान खरीद देता है। इस खरीददारी में लगभग पूरा दिन समाप्त हो जाता है। इस दौरान वह उसे वे सारी बातें भी बताता है जो उसे गौरव ने बतलायी थीं।

इतने सारे उपहार पाकर पल्लवी हर्षित थी। वह इतनी प्रसन्न थी कि अगली-पिछली सारी शिकायतें भूल चुकी थी। वह आनन्द के साथ नियत समय पर शाम को 6 बजे घूमने जाती है। आनन्द भी उसके प्रसन्नचित्त चेहरे को देखकर फूला नहीं समाता। वह उसकी तारीफ के पुल बांध देता है। आज वे एक दोनों एक दूसरे को पूरी तरह से समर्पित थे। दोनों एक दूसरे में खोये हुए थे और एक दूसरे की तारीफ कर रहे थे। इस दौरान आनन्द यह कहने से भी नहीं चूका कि मैंने जो तुम्हारे लिये किया है उसका दसवां भाग भी राकेश ने मानसी के लिये किया है क्या ? तुम उसे यह बात समझाओ। पल्लवी भी उसी समय मानसी को फोन करती है। वह भी तो उसे जलाना चाहती थी। वह मानसी को बताती है कि आज आनन्द ने उसके लिये क्या-क्या किया। उसकी बात सुनकर मानसी उसे सुखद भविष्य के लिये बधाई देती है।

इस घटना के तीसरे दिन आनन्द राकेश को फोन करता है। उसकी आवाज कांप रही थी। वह बहुत अधिक बदहवास था। उसने फोन पर राकेश से कहा कि पिछले चौबीस घण्टों से मैं पल्लवी से संपर्क करने की कोशिश कर रहा हूँ लेकिन उसका कोई पता नहीं चल रहा है। मैंने मानसी से भी पूछा था। उसने बताया कि उसकी सास की तबियत अचानक खराब हो गई है और पल्लवी अस्पताल में उसके पास है। जब मैंने अस्पताल में पता किया तो उसकी सास का वहां कोई पता नहीं चला। मैं चाहता हूँ कि मैं व्यक्तिगत रुप से अस्पताल जाकर उसकी सास का पता करना चाहता हूँ। क्या तुम मेरे साथ चल सकते हो।

मैं तैयार हूँ। तुम आ जाओ। मैं चला चलूंगा। चाहो तो गौरव को भी साथ में ले लो।

वह गौरव को साथ लेकर राकेश के पास जाता है। फिर वे अस्पताल जाते हैं। वहां गौरव कार से नहीं उतरता। वह कहता है कि तुम लोग ही जाकर पता कर लो। मेरी क्या आवश्यकता है। मैं तो तुमने कहा इसलिये तुम्हारा साथ देने के लिये आ गया हूँ। मुझे पल्लवी या उसकी सास से क्या लेना-देना?

आनन्द और राकेश भीतर जाकर पता करते हैं तो पता चलता है कि उस नाम की कोई महिला भरती ही नहीं हुई थी। आनन्द चकरा जाता है वह राकेश को बताता है कि यह पता तो मानसी ने दिया था। वह मुझसे झूठ बोली। ऐसा करते हैं कि अपन मानसी के घर चलते हैं वहीं से सारी हकीकत पता चल जाएगी। वे वहां से मानसी के यहां पहुँचते हैं। वहाँ भी पल्लवी नहीं मिलती। मानसी कहती है कि वह अपनी सास के पास अपने घर पर होगी।

राकेश आनन्द को समझाता है कि अब वह सीधा घर जाए। जरुर पल्लवी किसी निजी काम में फंसी होगी। जैसे ही वह फुरसत होगी वह स्वयं फोन करेगी। अगर ज्यादा खोजबीन करोगे तो व्यर्थ का हल्ला होगा। बदनामी अलग से होगी।

गौरव ने भी उसे समझाया कि बेकार में देवदास बनकर मत घूमो। आराम से घर पर रहो। अपने आप उसका फोन आएगा। आनन्द उनकी बात सुनकर भारी मन से घर वापिस चला जाता है।

अगले दिन पल्लवी का फोन आनन्द के पास आता है। आनन्द उससे पूछता है कि वह पिछले साठ से भी अधिक घण्टों से कहाँ थी। पल्लवी उसे अपनी सास की बीमारी वाली वही कहानी सुना देती है आनन्द को मानसी ने सुनाई थी। आनन्द को भरोसा नहीं होता। पर उसे इस बात का संतोष रहता है कि पल्लवी का फोन आ गया।

ष्शाम को वह गौरव को लेकर राकेश के पास आता है। तीनों मित्र एक होटल में डिनर के लिये जाते हैं। डिनर के पहले जब व्हिस्की का दौर चल रहा था तभी बातचीत के बीच में आनन्द अपनी मनःस्थिति बतलाता है। वह पल्लवी को लेकर बहुत चिन्तित था। उसे लग रहा था कि पल्लवी कहीं उसे धोखा दे रही है। अपने मन की बात वह अपने मित्रों को भी बताता है। वह यह भी कहता है कि मैं इस घटना की जड़ तक जाना चाहता हूँ। वह राकेश से कहता है कि मैं पल्लवी के पीछे प्रायवेट जासूस लगवाउंगा। जो मुझे लगाता पल्लवी के विषय में सारी जानकारी एकत्र करके देगा।

राकेश उसे समझाता है कि यह कोई इतनी बड़ी बात नहीं है जिसे लेकर तुम इतनी चिन्ता कर रहे हो। तुम्हारी मनःस्थिति सामान्य नहीं है। अच्छा होगा कि तुम शान्त ही रहो। फालतू में इस प्रकार की मूखर्ता करके बखेड़ा मत खड़ा करो। गौरव भी राकेश की बात का समर्थन करता है और मुस्कराता रहता है।

पल्लवी वास्तव में आनन्द की कमजोरी बन चुकी थी। वह दिन भर में कई बार उससे फोन पर बात करता था। पहला फोन सुबह की गुडमार्निंग से प्रारम्भ होता था तो आखिरी फोन रात को ग्यारह बजे गुडनाइट का होता था। इस बीच में कई बार वह पल्लवी से बात करता था। पल्लवी उसकी इस बात से परेशान हो जाती थी। इस घटना के बाद कुछ ही दिन बीते थे कि पल्लवी को एक शादी के सिलसिले में अपने एक रिस्तेदार के यहां कानपुर जाना पड़ा।

वह आनन्द को बिना बताये ही कानपुर चली गई। वह मानसी को बता कर गई थी लेकिन उसने उसे यह भी कहा था कि वह यह बात आनन्द को न बताये। वहां भी उसके फोन पहुंचेंगे और उसकी मुसीबत हो जाएगी। दो दिन बाद वह वापिस आकर आनन्द को बता देगी।

वह शाम को कानपुर के लिये रवाना होती है। जाने से पहले वह आनन्द से मिली थी लेकिन उसने उसे नहीं बताया कि वह बाहर जा रही है। रोज की तरह रात को ग्यारह बजे जब वह पल्लवी को फोन लगाता है तो फोन नहीं उठता। वह अनेक बार प्रयास करता है। तब वह राकेश को फोन लगाता है और उसे बताता है कि उसका फोन नहीं उठ रहा है। राकेश उसे समझाता है कि वह सो गई होगी। कई बार जब आदमी गहरी नींद में होता है

तो उसे फोन आदि की आवाज सुनाई नहीं देती है। उसकी बातों से आनन्द को कुछ तसल्ली होती है और वह सो जाता है। दूसरे दिन सुबह-सुबह फिर राकेश के पास फोन आता है। अब आनन्द इस बात से परेशान था कि सुबह की गुडमार्निंग नहीं हुई थी। राकेश फिर उसे समझा देता है।

वास्तव में आनन्द उसका दीवाना हो चुका था। जब पूरे दिन उसकी पल्लवी से बात नहीं होती तो वह शाम को मानसी के घर पहुँच जाता है। वह उससे पल्लवी का पता पूछता है। मानसी उससे इतना ही कहती है कि वह शहर से बाहर है किन्तु वह उसे यह नहीं बताती कि वह कहाँ गई है। आनन्द व्याकुल हो जाता है। वह वहां से सीधा राकेश के पास आता है। वह उससे कहता है कि मानसी से पूछकर पल्लवी का पता बता दे। राकेश फोन पर मानसी से बात करता है। पूरी बात पता लगने पर वह भी आनन्द को यही समझाता है कि चिन्ता मत करो। पल्लवी दो दिन में तुमसे आकर मिलेगी।

राकेश की बातों से आनन्द झल्ला उठता है। उसे लगता है कि कोई राज है जो राकेश और मानसी उससे छुपा रहे हैं। झल्लाहट में वह राकेश और मानसी के लिये भला बुरा कहने लगता है। वह मानसी पर यह आरोप भी लगा देता है कि वह सब जानती है किन्तु उसे नहीं बता रही। इसके पीछे कोई गहरा षड़यंत्र है। वह यह शक भी जाहिर करता है कि मानसी ने किसी और रहीस को फांस लिया है और पल्लवी को उसी के पास भेज दिया है इसलिये वह उससे सब कुछ छुपा रही है। राकेश उसे समझाने का प्रयास करता है किन्तु उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

दो दिन इसी तरह बड़ी मुश्किल से कटते हैं। राकेश और मानसी दोनों की नाक में दम हो जाता है। दो दिन बाद पल्लवी वापिस आती है। वह बहुत थकी हुई होने के कारण मानसी के घर पर ही आकर ठहर जाती है। वहां वह आराम करने की गरज से सो जाती है। मगर आनन्द को तो चैन था ही नहीं। वह तो सुबह-शाम मानसी और राकेश के चक्कर भी लगा रहा था और उन्हें भला-बुरा भी कह रहा था। वह मानसी के घर पहुंचता है और जब वह बैठक खाने में जाता है तो पल्लवी को वहां सोया हुआ देखता है। यह देखकर वह बौखला जाता है। वह मानसी के साथ पल्लवी को भी खरी-खोटी सुनाता है। इससे पल्लवी बहुत नाराज हो जाती है। उनके बीच विवाद होने लगता है। दोनों की ही आवाज तेज हो जाती है। मानसी इस स्थिति में दोनों पर ही बिगड़ जाती है और दोनों से कहती है कि वे उसके घर पर यह सब करके आस-पड़ोस में उसकी बदनामी न करें। यह सब करना है तो कहीं और जाकर करें। आनन्द वहां से चला जाता है।

पल्लवी! देख वही हुआ जिसका मुझे अंदेशा था। मैं फिर तेरे कारण झूठी बन गई। तूने ही कहा था कि आनन्द का फोन आये तो मैं उसे कह दूं कि तुम यहां नहीं हो। तुझे उसे बता कर जाने में क्या हर्ज था। वह तुझे चाहता है।

अब मैं अगर कहीं बाहर जाउंगी तो उसे तो क्या तुम्हें भी बताकर नहीं जाउंगी। मेरा भी अपना जीवन है। मैं किसी के दबाव में नहीं रह सकती। यदि वह मेरी देखभाल करता है और मुझे कुछ देता है तो मैं भी तो उसकी इच्छा पूरी करती हूँ। हमारा हिसाब बराबर का है। संसार का यही नियम है। जो जितना देता है उतना पाता है। वह जो दे रहा है उसके बदले मैं उसे उससे अधिक दे रही

हूँ। तुम देखो! मैं अब उससे बात नहीं करुंगी। वह खुद मेरे पास आएगा। मैं अब होस्टल जा रही हूँ।

पल्लवी के चले जाने पर मानसी अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गई। तभी उसके पास आरती आई। वह बहुत खुश थी। उसने बतलाया कि वह कक्षा में प्रथम श्रेणी में प्रथम आई है। उसने अपनी मार्कशीट मानसी के सामने कर दी। मार्कशीट देखकर मानसी खुशी से फूल उठी। उसने आरती को गले से लगा लिया। फिर पूछा- बोलो तुम्हें क्या चाहिए। आरती कुछ देर चुप रही फिर बोली सोच कर बतलाउंगी।

मानसी ने राकेश को फोन करके यह खुशखबरी दी। राकेश ने अपनी ओर से दोनों को बधाई दी व शाम को डिनर साथ में करने का वादा किया। उस शाम को राकेश ने आनन्द गौरव और पल्लवी को भी आमन्त्रित किया था। उसने पल्लवी को लाने की जवाबदारी आनन्द को दी थी।

आनन्द उस शाम को पल्लवी को लेने होस्टल जाता है। वह तैयार थी। आनन्द के साथ उसकी कार में बैठकर वह कातिल निगाहों से आनन्द को देख रही थी। आनन्द उसकी ओर नहीं देख रहा था। पल्लवी ने उससे कहा- क्या आप अभी तक मुझसे नाराज हैं ? यदि कोई नाराजी है तो गुस्सा थूक दो। मैं तुम्हें एक राज की बात बताना चाहती हूँ।

क्या बात है ?

मानसी मुझसे जलती है। तुम्हारा दिया हुआ सारा सामान मैंने उसे बताया था। मैंने उसे यह भी बताया कि तुमने मेरे नाम से एक एफडी कर दी है और तुम मुझे नया मकान भी दिलवाने वाले हो। यह सब सुनकर वह भौंचक्की रह गई थी। तुम्हारे दिये

गहने देखकर तो वह जैसे जल भुन कर राख हो गई थी। उसके मुंह से कोई आवाज तक नहीं निकली। काफी देर बाद वह बोली थी आनन्द तुम्हारे लिये भगवान समान है तुम उसका साथ कभी मत छोड़ना। लेकिन मुझे पक्का भरोसा है यह बात उसने मन से नहीं कही थी।

पल्लवी जानती थी कि अपनी तारीफ सुनना आनन्द की कमजोरी है और उसने उसकी इसी कमजोर नस पर हाथ रख दिया था। अपनी बात कहते-कहते उसने आनन्द के हाथ पर अपना हाथ रख दिया था। आनन्द भी उसके हाथ को थाम लेता है। उस पर पल्लवी का जादू हावी हो चुका था। वह बोला- कभी-कभी तुम्हारा व्यवहार मुझे बहुत दुखी कर देता है। तुम मुझसे बिना बताये कहां चली गईं थीं। तुम्हें पता भी है कि मैं कितना परेशान रहा।

स्थिति ही ऐसी थी कि तुम्हें नहीं बता सकती थी। आगे से ऐसा नहीं करुंगी। उनकी बातें चल ही रही थीं तभी होटल आ गया। वहां सभी ने आरती को बधाई दी, उसे आशीर्वाद दिये और उपहार भी दिये। आरती और मानसी दोनों ही बहुत ही प्रसन्न थे वे इस सफलता का श्रेय राकेश को ही दे रहे थे।

आरती राकेश से उसकी कविताओं की फरमाइश करती है। उसकी फरमाइश पर राकेश सुनाता है-

माँ का स्नेह
देता था स्वर्ग की अनुभूति।
उसका आशीष
भरता था जीवन में स्फूर्ति।

मुझे याद है

जब मैं रोता था
वह परेशान हो जाती थी।
जब मैं हँसता था
वह खुशी से फूल जाती थी।
वह हमेशा
सदाचार, सद्व्यवहार, सद्कर्म,
पीड़ित मानवता की सेवा,
राष्ट्र के प्रति समर्पण,
सेवा और त्याग की
देती थी शिक्षा।

शिक्षा देते-देते ही
आशीष लुटाते-लुटाते ही
ममता बरसाते-बरसाते ही
हमारे देखते-देखते ही
एक दिन वह
हो गई पंच तत्वों में विलीन।

आज भी
जब कभी होता हूँ
होता हूँ परेशान
बंद करता हूँ आंखें
वह सामने आ जाती है।
जब कभी होता हूँ व्यथित
बदल रहा होता हूँ करवटें

वह आती है
लोरी सुनाती है
और सुला जाती है।
समझ नहीं पाता हूँ
यह प्रारम्भ से अन्त है
या अन्त से प्रारम्भ।

कविता पूरी होते ही सभी ताली बजा कर राकेश की भावनाओं के साथ अपनी भी भावनाएं जोड़ देते हैं। खुशी के कारण मानसी की आंखें छलछला जाती हैं।

गौरव और राकेश आन्नद से कहते हैं कि तुम बेकार ही परेशान थे। पुरा शहर सिर पर उठाये हुए थे और हमें भी हलाकान किये हुए थे आखिर तुम्हारी पल्लवी आ गई न तुम्हारे पास। ऐसी ही हल्की-फुल्की बातों के बीच डिनर समाप्त हो जाता है। वहां से चलते-चलते राकेश आनन्द और गौरव को दूसरे दिन अपने घर पर बुलाता है।

- - -

आनन्द बहुत गम्भीर था। उसकी गम्भीरता उसके चेहरे से झलक रही थी। वे राकेश के घर पहुँचे तो औपचारिक बातचीत के बाद आनन्द ने राकेश से पूछा आज किसलिये बुलाया था।

मैं तुमसे पल्लवी के विषय में बात करना चाहता था। मुझे पता चला है कि तुमने किसी प्रायवेट डिटेक्टिव एजेन्सी को पल्लवी के लिये हायर किया है।

हाँ! बीच में जब एक बार मैं पल्लवी के व्यवहार से काफी परेशान था तब मैंने उसके पीछे एक एजेन्सी को लगाया था। उनके द्वारा जो जानकारियां मुझे दी जा रहीं हैं उनसे मैं काफी

परेशान और विचलित हूँ। उनके अनुसार पल्लवी के तीन-चार पुरूष मित्र और भी हैं। इनमें रिजवी नाम का एक सीनियर एक्जीक्यूटिव है जो कि एक कम्पनी में उच्च पद पर कार्यरत है। पल्लवी की उससे काफी नजदीकियां हैं और वह पल्लवी को काफी कुछ देता रहता है। पल्लवी भी उससे बहुत मिलती और संपर्क रखती है। उनके काफी नजदीकी संबंध हैं। रिजवी की मदद से ही पल्लवी को अपने पूर्व पति से तलाक मिल चुका है। वह अब दूसरे विवाह के लिये स्वतंत्र हो चुकी है।

पल्लवी मुझसे लगातार मकान दिलवाने की बात करती है। यह बात पता चलने के बाद मैंने उससे कहा है कि मकान तो मैं जो तुम कहो वो मैं खरीद लूंगा लेकिन वह मैं अपने नाम से खरीदूंगा। तुम उसका मन माफिक प्रयोग कर सकती हो। जबकि पल्लवी की जिद है कि मैं मकान उसी के नाम पर लूं।

मैं उसे बहुत चाहता हूँ। पर ऐसा लगता है कि जितना मैं उसे चाहता हूँ उतना वह मुझे नहीं चाहती। इसीलिये मैं तुम लोगों की मदद चाहता हूँ।

क्या मदद चाहते हो ?

तुम दोनों जानते हो कि मैं अपने परिवार में बहुत अकेला अनुभव कर रहा था। कभी-कभी तो मेरे मन में आता था कि मैं अपने इस जीवन को समाप्त ही कर दूं। उसी समय तुम लोगों के कारण मैं पल्लवी के संपर्क में आया। इसके संपर्क में आने के कारण मुझे जीवन में एक नयी आशा की किरण दिखी। अब मैं जीवन के इस आनन्द को समाप्त नहीं होने देना चाहता। मुझे लगता है कि पल्लवी के बिना मैं रह नहीं पाउंगा। हां अगर कोई और महिला आकर यदि पल्लवी का स्थान ले ले तो शायद मेरे

लिये पल्लवी को छोड़ना संभव हो जाए। मैं चाहता हूँ कि तुम लोग मेरी सहायता करो।

कैसी सहायता ?

मेरा संबंध किसी दूसरी महिला से करा दो।

राकेश और गौरव दोनों ही उससे मना कर देते हैं। तभी उसके पास फोन आता है। फोन उसी डिटेक्टिव ऐजेण्ट का था। वह उसे बताता है कि पल्लवी और रिजवी शाम की गाड़ी से इलाहाबाद जाने के लिये निकल चुके हैं।

सुनकर आनन्द विचलित हो उठता है। वह गौरव और राकेश को उसकी इस बात की जानकारी देकर कहता है कि पल्लवी पैसे तो मुझ से ले रही है और ऐश उसके साथ कर रही है। अभी तक मैं उसके पर लगभग पैंतीस से चालीस लाख रूपये खर्च कर चुका हूँ। अब वह मकान के लिये पीछे पड़ी है। वह मुझे बेवकूफ समझती है।

गौरव कहता है- आनन्द भाई! प्रेम अनुभूति होती है। तुम प्रेम और वासना में अंतर नहीं समझते। तुम अपने धन के बल पर सोचते हो कि पल्लवी तुमसे प्यार करने लगेगी और पूरी तरह तुम्हारे लिये समर्पित हो जाएगी। लेकिन तुमने कभी यह नहीं सोचा कि वह तुमसे प्यार क्यों करेगी। तुम्हारी और उसकी उम्र में कितना अन्तर है। वह तो अभी तीस बरस की भी नहीं है। उसे एक लम्बा जीवन जीना है। वह अपना घर क्यों नहीं बसाएगी?

ठीक है पर मैंने भी तो उसे इतना कुछ दे दिया है और आगे भी दे दूंगा कि मेरे न रहने पर भी उसे कोई तकलीफ नहीं होगी।

एक साथ इतने गहने और रूपये उसे देने की क्या आवश्यकता थी। पिछली बार जब पल्लवी कह रही थी कि तुम

कहते हो पर देते नहीं हो तो हम लोग समझे थे कि तुम पक्के नेता हो जो कहता तो है पर करता नहीं है। आज तुम्हारे मुख से यह जानकर कि तुम इतना कुछ दे चुके हो, हम लोग भौंचक्के हैं।

चेरिटी स्टार्टस फ्राम योर ओन होम. मैं पल्लवी को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानने लगा था। इसीलिये मैंने यह सब किया। मुझे धन जाने का कोई गम नहीं है। ईश्वर की कृपा से मेरे पास धन की कोई कमी नहीं है।

गौरव खीज कर बोला- इतना धन यदि किसी सद्कार्य में खर्च किया होता तो तुम्हें यश भी मिलता और पुण्य भी।

एक वैश्या को नर्क के जीवन से निकाल कर सुख का जीवन देना क्या सद्कार्य नहीं है। राकेश ने देखा कि बातचीत अब बहस में बदलती जा रही है। उसने हस्तक्षेप करते हुए कहा- इस बहस से क्या फायदा। अब तो यह सोचो कि क्या करना है।

मैंने बताया तो लेकिन उसके लिये तो तुम लोगों ने साफ मना कर दिया। बैठक बिना किसी निष्कर्ष के समाप्त हो जाती है। आनन्द के जाने के बाद राकेश और गौरव आपस में काफी देर बात करते रहे। इस विषय पर उनकी चर्चा काफी गम्भीर रही और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वह भावनात्मक ब्लैक मेल का शिकार हो रहा है और वह इस बात को समझ नहीं पा रहा है। जब कोई चोट खाएगा तभी उसकी समझ में आएगा। अपने समझाने का अभी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। उसका मस्तिष्क उसके नियंत्रण में नहीं है। वह कहता कुछ है, करना कुछ और चाहता है और करता कुछ और है। उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। उसे तो कुछ समय के लिये अपने परिवार के साथ कहीं बाहर चले जाना चाहिए। उससे कौन कहे कि तुम्हारा व्यवहार सामान्य नहीं

है। भला बिल्ली के गले में घण्टी कौन बांधे। अच्छा तो यही है कि हम लोग उससे इस विषय पर चर्चा ही न करें। उन दोनों ने आनन्द से पल्लवी के विषय में चर्चा करना बन्द ही कर दिया। आनन्द और पल्लवी की नोंक-झोंक चलती रहती थी किन्तु राकेश, गौरव और मानसी उनके बीच दखल नहीं देते थे।

एक दिन राकेश अपने एक मित्र को देखने एक अस्पताल गया हुआ था। अचानक ही उसने वहां एक पलंग पर लेटी हुई पल्लवी को देखा। वह चौंक गया। उसने पूछा- आप यहां कैसे ? आप को क्या हुआ ? आनन्द कहां है ?

अचानक मुझे गाल ब्लैडर में पथरी का दर्द हो गया। डॉक्टर्स ने आपरेशन करना ही उचित समझा। आनन्द को मैंने नहीं बताया क्योंकि उसे जरुरी काम से बम्बई जाना था। फिर वे मेरे कारण परेशान हों यह भी मैं नहीं चाहती थी।

मेरे लायक कोई काम हो या मेरी कोई आवश्यकता हो तो कहो।

नहीं ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है। कल सुबह मैं यहां से डिस्चार्ज हो रही हूँ।

राकेश ने घर पहुँचकर आनन्द से फोन पर बात की और पल्लवी के आपरेशन के विषय में बताया। यह सुनकर वह अचरज में पड़ गया।

उसने राकेश से पूछा- वहां तुमने पल्लवी को ही देखा था न।

मेरी दो आंखें हैं। मैंने उसे देखा ही नहीं था वरन् बात भी की थी। इतना कहकर राकेश ने उसे अस्पताल का पता दे दिया और पलंग नम्बर भी बता दिया।

आनन्द ने तत्काल ही अस्पताल प्रबंधन से बात की तो उसे पता चला कि पल्लवी का पथरी का आपरेशन नहीं हुआ था वरन् महिलाओं से संबंधित कोई आंतरिक आपरेशन हुआ था। आनन्द चिन्तित हो जाता है। वह बम्बई से तत्काल वापिस आता है और पल्लवी को देखने जाता है। वहां उसकी पल्लवी से गरमा-गरम बात हो जाती है। वह उससे पूछता है कि किस कारण से आपरेशन हुआ है तो पल्लवी उसे नहीं बताती वरन् गोलमोल उत्तर देती है। इससे आनन्द गुरस्से में आ जाता है। वह उससे अपना सारा सामान और गहने आदि मांग बैठता है।

पल्लवी भी आवेश में आ जाती है और उसे टका सा जवाब देती है कि उसने उसे कुछ भी दिया ही नहीं है। वह उससे यह भी कहती है कि वह अब उससे मिलने का प्रयास न करे, वह उससे नहीं मिलना चाहती। अब आगे भविष्य में वह उससे कोई संबंध नहीं रखेगी। यह सुनकर आनन्द हत्प्रभ रह जाता है। उसे बहुत सदमा लगता है। उसने कभी पल्लवी से ऐसे व्यवहार की कल्पना भी नहीं की थी।

वह गौरव और राकेश से संपर्क करता है। वे लोग इस विषय में बीच में पड़ने से इन्कार कर देते हैं। आनन्द उनका उत्तर सुनकर और भी अधिक परेशान हो जाता है और राकेश से कहता है कि मैं तो पीड़ा से पीड़ित हूँ। वास्तव में आज मैं अपने आप को बड़ा ही असहाय अनुभव कर रहा हूँ। मुझे लगता था तुम मुझे सहारा दोगे। पर आज तुम भी मुंह मोड़ रहे हो।

राकेश ने उससे कहा कि वास्तव में तुम ही नहीं मैं भी चाह कर भी तुम्हारी मदद करने में असमर्थ हूँ। मैं भी आज तुम्हारे ही समान असहाय हो गया हूँ।

आनन्द बहुत निराश हो जाता है। वह पल्लवी को मनाने के लिये उसके घर जाता है तो वहां उसे ताला लगा मिलता है। इससे वह और भी अधिक विचलित हो जाता है। वह हर ओर से हताश हो चुका था लेकिन फिर भी उसके मन में कहीं कोई आशा थी। वह सोचता था कि उसने पल्लवी के लिये इतना कुछ किया है वह उसका साथ नहीं छोड़ सकती। कभी उसे लगता कि जैसे एक बार वह बिना बताये इलाहाबाद चली गई थी ऐसे ही कहीं बाहर तो नहीं चली गई। वह मानसी और राकेश से मिलकर उसका ंपता पूछता है पर कोई पता नहीं लगता।

तीन दिन बाद अचानक राकेश को पल्लवी के विवाह का आमंत्रण पत्र मिलता है। वह रिजवी से विवाह कर रही थी। वह गौरव को फोन लगाता है तो गौरव बतलाता है कि उसे भी उसका आमन्त्रण मिल चुका है। राकेश आनन्द को फोन लगाता है तो घण्टी तो जाती है किन्तु फोन नहीं उठता। वह परेशान हो जाता है। वह गौरव से फोन करने को कहता है पर उसका फोन भी नहीं उठता। वे काफी प्रयास करते हैं पर किसी भी प्रकार से आनन्द से कोई संपर्क नहीं हो पाता। राकेश और गौरव बहुत परेशान हो जाते हैं। आनन्द के घर से जवाब मिलता है कि वह दो दिनों से घर नहीं पहुँचा।

एक दिन और गुजर जाता है। वह घड़ी भी आ जाती है जब पल्लवी के विवाह का आयोजन था। राकेश गौरव से संपर्क करता है। दोनों तय करते हैं कि बिना आनन्द के इस कार्यक्रम में जाना उचित नहीं है। वे दोनों भी पल्लवी के विवाह में नहीं पहुँचते। राकेश फोन पर ही पल्लवी को शुभकामनाएं देकर न आ पाने की असमर्थता व्यक्त करता है।

आनन्द से कोई संपर्क नहीं होता। राकेश और गौरव की वह रात आंखों ही आंखों में कटती है। रात के अंतिम पहर में राकेश की आंख लगती है। वह अभी सोया ही था कि उसका बेटा आकर उसे जगा देता है। वह उससे कहता है कि आनन्द अंकल ने सुसाइड कर लिया। राकेश अचकचा जाता है। वह पूछता है- कब ?

बेटा बताता है- कल रात के ग्यारह बजे। राकेश अवाक रह जाता है। कुछ समय बाद ही गौरव का भी फोन आता है और वह भी उसे यही खबर देता है। वे पता लगाते हैं अंतिम संस्कार कब होगा। पता लगता है कि दिन को ग्यारह बजे अंतिम यात्रा घर से चलेगी। राकेश पल्लवी से संपर्क करता है। वह उसे सारी घटना बताता है। पल्लवी उसे एक रुखा सा उत्तर दे देती है। अभी तो मैं अपने पति के साथ हनीमून पर जा रही हूँ। वहां से लौटकर यदि मेरे ये इजाजत देंगे तो हम लोग उसके यहां जाएंगे। राकेश और भी अधिक सदमे की स्थिति में आ जाता है। वह किसी तरह अपने को संभाल कर आनन्द के अंतिम संस्कार में पहुँचता है।

वहां से लौटते-लौटते दोपहर समाप्त होने लगती है। शाम को राकेश गौरव से संपर्क करने का प्रयास करता है तो पता लगता है वह नर्मदा तट पर गया हुआ है। राकेश उसके पास पहुँचता है। गौरव हाथों में शाम का अखबार लिये गमगीन बैठा था। राकेश उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे समझाता है तो गौरव शाम का अखबार उसकी ओर बढ़ा देता है।

राकेश उसे खोलता है तो आनन्द की मृत्यु के समाचार के साथ ही छपा था कि उसके पाकिट से एक कागज निकला है जिस पर लिखा है-

मुझे तुमसे यह शिकायत नहीं है कि तुमने बेवफाई की

लेकिन तुम्हारी बेवफाई ने
जो घाव दिया है
वह गहरा है
बन्दूक की गोली से भी अधिक
गोली का घाव तो
समय के साथ भर ही जाता है
पर बेवफाई का घाव
वह कभी नहीं भरता
लौकता रहता है
जीवन भर
तुम्हारे प्यार में
यह बेवफाई का घाव
और इसकी यह टीस
दोनों मुझे प्यारे हैं
क्योंकि ये
तुमने दिये हैं।
मेरा दिल तो तुम्हारे लिये
हमेशा यही दुआ मांगेगा
तुम सलामत रहो!
तुम सलामत रहो!

- - -